आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार

संगीतसूर्य केशवराव भोसले

डॉ. सतीश पावडे

आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार

संगीतसूर्य केशवराव भोसले

डॉ. सतीश पावडे

अनुवाद
डॉ. धनंजय विलास झालटे

॥ नव्या विचारांचं तरुण प्रकाशन गृह ॥
अक्षरशिल्प प्रकाशन

SANGEETSURY KESHAVRAO BHOSALE
Aadhunik Bharatiy Rangmanch Ke Shilpkar

ISBN : 978-93-91590-04-8

प्रथम संस्करण – दि. 9 अगस्त 2022 (संगितसूर्य केशवराव भोसले जयंती दिवस)

लेखक – डॉ. सतीश पावडे
मो.नं.: 9372150158, 9422535158
email : satishkumarpawade1963@gmail.com

अनुवाद – डॉ. धनंजय विलास झालटे
मो.नं.: 9096800785

© डॉ. निशा शेंडे
95, 'गाथा' आशा कॉलनी, आशा पार्क,
तपोवन रोड, अमरावती- 444602
मो.नं.: 9370153055
email : drnishashende@gmail.com

प्रकाशक – वि. ना. राऊत
अक्षरशिल्प प्रकाशन
शॉप नं.14, अनवर मार्केट, अलमास नगर,
बायपास रोड, बडनेरा, अमरावती- 444701
मो.नं.: 7499058879, 9325414051
email : aksharshilpprakashan@gmail.com

मुद्रक – अंबा प्रिंटर्स
जुनीवस्ती, बडनेरा, अमरावती.
मो.: 9325414051
email : anupetale@gmail.com

मुखपृष्ठ – अनुप पेटले
अक्षर जुळवणी – धनश्री अ. भेंडे
प्रमुख वितरक – ग्लोबल डिस्ट्रीब्यूशन
अमरावती. मो.नं.: 7499058879
आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार

मूल्य ₹ 140
9 789391 590048

नव्या विचारांचं तरुण प्रकाशन गृह
अक्षरशिल्प प्रकाशन

अर्पण पत्रिका

शिवश्री पुरूषोत्तम जी खेडेकर,
शिवमति रेखाताई खेडेकर
शिवश्री कामाजी पवार
शिवश्री मधुकर मेहकरे
शिवश्री संजय पाटील
शिवश्री कमलेश पाटील
शिवश्री प्रो. एम. एल. देशमुख
शिवश्री डॉ. भास्कर भोसले
शिवश्री प्रदीप पाटील
शिवश्री आकाश काकडे
शिवश्री प्रो. कपिल पिचेवार
शिवश्री रविन्द्र दाणी
शिवश्री प्रकाश पाटील

आप सभी महानुभावों को मेरी यह पुस्तक समर्पित है।

– डॉ. सतीश पावडे

विषय – सूची

* **ऐसा केशव पुन्हा न होणे!** विद्याधर गोखले..... 05
* **नमितो तुज केशवा!** डॉ. भोजराज चौधरी..... 06
* **नाट्यकला का कौस्तुभमणि** बालगंधर्व..... 07
* **संगीतसूर्य को नमन...** डॉ. सतीश पावडे..... 08
* **एक सूर्य! एकमात्र संगीतसूर्य** ज्ञानेश महाराव..... 11
* **रंगमंच और नाट्यसंगीत के सुर्य** प्रो. ओम प्रकाश भारती.... 13
* **आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार** डॉ. सतीश पावडे..... 16

जन्म और बचपन..... 21
संघर्षपूर्ण जीवनयात्रा की शुरूआत..... 24
केशवराव की कर्तृत्व गाथा..... 27
गायकी और अभिनय..... 30
महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व..... 33
सामाजिक प्रतिबद्धता..... 36
जाति से श्रेष्ठ गुणवत्ता..... 42
'ललितकलादर्श' की लोकतंत्र पद्धति..... 45
साभिनय गायन का आदर्श..... 48
स्वाभिमानी मर्द मराठा कलाकार..... 51
संगीतसूर्य केशवराव की प्रयोगधर्मिता..... 54
अंधविश्वास का विरोध..... 57
नए पाश्चात्य नाट्यतंत्र का प्रयोग..... 60
आधुनिक भारतीय रंगमंच के पुरोधा..... 65
बहुमुखी प्रतिभा के धनी संगीतसूर्य..... 70
अंतिम नाटक 'शहा शिवाजी'..... 73
केशव: न भूतो न भविष्यति!..... 76

ललितकलादर्श के रंगकर्मी..... 83
संगीतसूर्य की अविस्मरणीय भूमिकाएं..... 84
समकालीनों की तस्वीरें..... 85
संगीतसूर्य केशवराव भोसले की संक्षिप्त जीवनी..... 86
डॉ. सतीश पावडे की प्रकाशित चरित्र संपदा..... 89
संदर्भ ग्रंथ सूची..... 90
लेखक परिचय..... 92

ऐसा केशव पुन्हा न होणे

समर्थ ज्याचे सतेज गाणे, समशेरीचे जणुं लखलखणे!
कंठमणी तो रंगदेविचा, ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

चारूदत्त हा 'दत्त उपासक', सत्कार्याला दिधली दाने!
अगे रसिकते! वसंतसेने!, ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

इथे न नाजुक मोर-पिसारा, पण गरूडाचे गगन भेदणे!
मर्म मराठी बुलंद बाणा, ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

पाच पांढरी पट्टीमधले, पल्लेदार पहाडी गाणे,
आज कोठले जमान्यांत या? ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

जये शिकविले शत-विपदांची, झुंजत-झुंजत फळी फोडणे!
खरा धैर्यधर कला-धुरंधर, ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

सारे अभिनय-गायन-वैभव, देव-दत्त हे देशहितास्तव!
असे मानिले सदैव ज्याने, ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

रंगभूमिवर अनेक केल्या, सुधारणा नवनवीन ज्याने,
शिस्तशीर, व्यवहार कुशल तो, ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

लोकाश्रयची वंद्य मानिला, राजाश्रय नाकारून ज्याने
'ललितकला'- आदर्श उभविला, ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

अगा केशवा! तुझे तपोबल, बलशाली मन ध्येय-दिवाणे,
दिसे न कोठे म्हणूनी बदतो, ऐसा केशव पुन्हा न होणे!

-विद्याधर गोखले

नमितो तुज केशवा

शंभोहर गंगाधर गिरिजा गणराजा, नामितो तुज केशवा ।। धृ ।।
रंग देवतेचे तुजं आशिष, त्रिशुलधराचे तुला शिवाशिष
गान देवता प्रसन्न तुजला, नमितो तुज केशवा ।। १ ।।
उंच स्वरांचे तुझेच गायन, कंठ पहाडी गगन ये भेदून
रंगभूमिचा धैर्यधर, अर्जुन, नमितो तुज केशवा ।। २ ।।
दरबाराचा मोह नसे तुज, नाट्यकर्मी तू हेच तुझे व्रत
सप्तस्वरांचे तुला स्वराशिष, नमितो तुज केशवा ।। ३ ।।
रंगभूमिचा तू उध्दारक, राष्ट्र भक्तिने होता प्रेरित
दानधर्मी तू नवसंशोधक, नमितो तुज केशवा ।। ४ ।।
संगीतसूर्य तू रंगभूमिचा, प्रसाद तुजला ओंकाराचा
कंठी कौस्तुभ मनि रसिकांचा, नमितो तुज केशवा ।। ५ ।।
पाच पांढरी मूळ तुझा स्वर, लखलखणारा तू स्वरभास्कर
तुझ्या पूजना ये सिद्धेश्वर, नमितो तुज केशवा ।। ६ ।।
ललित कलांचा तू अभ्यासक, राग श्रुतींचा सुस्वर गायक
मोहित होते रसिक तुझ्यावर, नमितो तुज केशवा ।। ७ ।।
स्त्री सन्मान अन उचनिचता, भेद कधीना मनिही धरिता
देशभिमानी कला उपासक, नमितो तुज केशवा ।। ८ ।।
संगीता सम अभिनय रंगत, संवादाची तुझी नवी रित
'भोजराज' हा शरण तुला नित, नमितो तुज केशवा ।। ९ ।।
रंगभूमिचा तुच धैर्यधर । गोपीचंद समशेर बहाद्दर ।
तूच अर्जुन, भरत, शंबुक । तूच सुभद्रा, शाहू, नारद ।
शहा-शिवाजी तूच धुरंधर । अभिनय गायन तुझेच सुंदर ।
तुझी शारदा रसिक शिरावर । कृपा तुझ्यावर ठेवी नंदेश्वर ।। १० ।।

डॉ. भोजराज चौधरी

नाट्यकला का कौस्तुभमणि

केशवराव का नाम सुनते ही मेरे शरीर पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। गुरूवर्य भास्करबुवा ने केशवराव भोसले के साथ 'संयुक्त मानापमान' के मंचन के लिए अपनी नाराजी व्यक्त की थी। उनका नाराज होना भी जायज था। केशवराव 'धैर्यधर' की और मैं 'भामिनी' की भूमिका निभाएंगे, यह पहले से ही तय हुआ था। लेकीन ऐसी जोड़ी रंगमंच पर आएगी तो मैं बिल्कुल उस पात्र को न्याय नहीं दे पाऊंगा, यह उन्होंने पहले ही जान लिया था। प्रत्यक्ष मंचन जब हुआ तब अभिनय में केशवराव मुझसे दो कदम आगे थे। 'टकमक पाही' इस नाट्यगीत के लिए मुझे दो बार वन्समोअर मिला, क्योंकि तब तक धैर्यधर रंगमंच पर नही आया था। लेकिन 'तारा दिसली' यह तार सप्तक की ओर आकर्षित करनेवाला, सिंदुरा राग में एक बढ़िया नाट्यगीते गा कर धैर्यधर ने जब तीन वन्समोअर लिए तब पहले ही अंक में मैं नर्वस हुआ। जब धैर्यधर 'झाले युवती मना' यह नाट्यगीते गाकर निकल जाता है, तभी भामिनी प्रवेश करती है और 'मला मदन भासे हा' यह नाट्यगीते शुरू करती है। लेकिन केशवराव ने जिस तरह से यह नाट्यगीते गाया था, उससे मैं अधिक नर्वस हो गया। ऑर्गनवालों ने मुझे 'टचिंग' देने के बाद भी मैं रंगमंच पर नहीं आया। इस तरह मेरी कितनी फजीहत हुई थी!

मैं केशवराव से ईर्ष्या करता था। क्यों? क्योंकि वे एक बड़ी कम्पनी के मालिक थे इसलिए। लेकिन आज मैं उनसे इसलिए ईर्ष्या करता हूँ क्योंकि पच्चीस-तीस साल की युवा अवस्था में उनकी मृत्यु हुई। केशवराव की जब अंतिम यात्रा निकली थी, तब हजारो लोग वहां रो रहे थे। नाट्यकला के कंठ का कौस्तुभमणि, एक रत्नहार आज टूट गया था। समाज की बड़ी हस्तियों और लोगों में उनकें पार्थिव शरीर को कंधा देने की जो होड़ लगी हुई थी, उसे देखकर भी मुझे ईर्ष्या हो रही थी। यह सब केशवराव का वैभव था और किसे पता हमारे नसिब में क्या लिखा है? चार लोग भी आएंगे या नहीं इसकी भी मुझे आशंका है।

– बालगंधर्व

(बालगंधर्व विशेषांक, लोकराज्य 1990)

संगीतसूर्य को नमन...

9 अगस्त 2020 को संगीतसूर्य केशवराव भोसले के जन्म की 130 वीं वर्षगांठ और उनका स्मृति शताब्दी वर्ष 4 अक्टूबर 2020 - 2021 में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मेरा 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले: आधुनिक मराठी रंगमंच के शिल्पकार' यह चरित्र प्रकाशित हुआ है। जिनका नाम मराठी रंगमंच पर स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाए ऐसे संगीतसूर्य केशवराव भोसले का कर्तृत्त्व उनकी उनकी, नजरअंदाजी एवं संवेदनहीनता के कारण प्रकाश में नहीं आ सका। लेकिन इस बात का संतोष यह भी है कि मैंने जो चरित्र लिखा है वह संगीतसूर्य केशवराव भोसले के व्यक्तित्व और कर्तृत्त्व पर पर्याप्त प्रकाश डाल सकता है।

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में मै 1990 से 1996 के दौरान पीएच.डी. के लिए शोधकार्य कर रहा था। मेरे शोध का विषय 'द एब्सर्ड थिएटर का मराठी रंगमंच पर प्रभाव' था। मराठी रंगमंच का अध्ययन करते हुए, मै पहली बार 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले' के नाम से परिचित हुआ। मैं बालगंधर्व के बारे में जानता था। उनके बारे में काफी जानकारी भी उपलब्ध थी। लेकिन उनकी तुलना में केशवराव के बारे में बहुत ही कम जानकारी

उपलब्ध थी। वास्तव में उनकी उपेक्षा की गई थी, इस निर्णय पर मैं पहुंचा। अपवाद स्वरुप 1990 में महाराष्ट्र सरकार के मुखपत्र 'लोकराज्य' का 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले विशेषांक' प्रकाशित हुआ था। इसके माध्यम से काफी जानकारी प्राप्त हुई। ढेर सारी दुर्लभ तस्वीरें देख पाया। लेकिन उसको पढ़ने के बाद यह बात ध्यान में आ गई कि; यह अंक पहले प्रकाशित कई लेखों का एक संग्रह मात्र है। इसमें स्वतंत्र लेखन बहुत कम मात्रा में था।

इस स्थिति को देखते हुए मैंने सोचा कि क्यों न उनका एक अलग से सचित्र चरीत्र लिखा जाए, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो। मैं 1996 में नागपुर से अमरावती आया था। हमारे मित्र, लेखक, आलोचक प्रा. प्रभाकर पावडे की वजह से इसी समय मैं मराठा सेवा संघ के संपर्क मे आ गया। मराठा सेवा संघ के संस्थापक अध्यक्ष शिवश्री पुरूषोत्तम खेडेकर साहब से मरी मुलाकात हुई। कला, सांस्कृतिक और साहित्य के क्षेत्र में मेरी रूची एवं सक्रियता को देखकर उन्होंने मुझे मराठा सेवा संघ के सांस्कृतिक इकाई की जिम्मेदारी सौंपी। इस शाखा का विस्तार करके उसका नामकरण 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले सांस्कृतिक परिषद' के रुप में करने का प्रस्ताव मैंने उनके सामने रखा। यह प्रस्ताव उन्हे भी अच्छा लगा। उन्होंने भी स्वीकृति दी और अमरावती में इस परिषद का नियमित कार्य 1998 से शुरू हुआ। हालांकि केशवराव भोसले मराठा समुदाय से थे, लेकिन मराठा समुदाय भी उनके बारे में ज्यादा नहीं जानता था। फिर एक गायक , कलाकार, अभिनेता, ललितकलादर्श नाटक मंडली के मालिक और बालगंधर्व के समतुल्य व्यक्तित्त्व को उजागर करने के लिए 'संगीतसूर्य' यह उनकी एक छोटी जीवनी मैंने लिखी। इस कार्य के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन शिक्षा और सांस्कृतिक कार्य मंत्री प्रो. रामकृष्ण मोरे सर और शिवश्री पुरुषोत्तम खेडकर जी ने बहुत प्रोत्साहन दिया। इसे 2004 में अमरावती के नभ प्रकाशन के मिलिंद डाहाके द्वारा प्रकाशित किया गया था। हालांकि यह एक छोटा चरित्र होने के कारण इसमें ज्यादा नई जानकारी नहीं थी। यह चरित्र उपलब्ध जानकारी के आधार पर ही लिखा गया था।

मैं संगीतसूर्य केशवराव भोसले के बारे में और जानकारी इकट्ठा करना चाहता था एवं उनकी एक और यथायोग्य जीवनी लिखना चाहता था। इसके लिए कुछ सालों से पुन: तैयारी कर रहा था। 'लोकराज्य के संगीतसूर्य केशवराव भोसले

एक सूर्य! एकमात्र संगीतसूर्य

अभिनय के क्षेत्र में अभिनेताओं को 'स्टार' कहा जाता है। 'स्टार' का यानी तारों संबंध आकाश के साथ होता है! तारे आकाश को चमकाते हैं, रोशन करते हैं! लेकिन ये तारें हो या इनमें चमकने वाला चांद हो, ये सभी तब ही प्रकाशित होते हैं! जब सूर्य ढल जाता है, तभी वे चमकते हैं! सूर्य के तेज के कारण ही वे प्रकाशित होते हैं! इसी तरह का अमिट तेज केशवराव भोसले ने मराठी रंगमंच को दिया है। इसी वजह से उन्हें 'संगीतसूर्य' के नाम से जाना जाने लगा।

नारायणराव राजहंस उर्फ 'बालगंधर्व' के रूप में मराठी रंगमंच पर 'गंधर्वयुग' अवतीर्ण हुआ। छोटा गंधर्व, कुमार गुधर्व, भु गंधर्व, देव गंधर्व इस तरह की लंबी गंधर्व श्रृंखला हैं। लेकिन यह एक ही 'संगीतसूर्य' है! और मरने के 100 साल बाद भी एकमात्र केशवराव भोसले हैं, जिनकी यह पहचान आज भी बनी हुई है।

सूर्य को देखा और महसूस किया जा सकता है; लेकिन उसे पकड़ा नहीं जा सकता। उसपर चंद्रयान मिशन की योजना बनाकर सवार होना भी संभव नहीं

है। यही बात 'संगीतसूर्य' केशवराव भोसले के बारे में भी सच है। केशवराव को सुना जा सकता हैं; लेकिन सुनाया नहीं जा सकता! उनके बारे में कुछ कहा जा सकता है; लेकिन शब्दों में पकड़ा नहीं जा सकता! यह जानने के बावजूद भी नाटककार, समीक्षक और नाट्य-निर्देशक डॉ. सतीश पावडे ने केशवराव भोसले को एक चरित्र के रुप में पेश करने का प्रयास किया और केशवराव की महानता का सटीक शब्दों में वर्णन किया है। आज हम केशवराव नहीं बन सकते, लेकिन उनके 'सूर्य' जैसे तेजस्वी गुण को प्राप्त करते-करते चाँद की तरह प्रकाशमान अवश्य हो सकते हैं!

यहाँ मुझे महात्मा ज्योतिराव फुले की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं-

एक सूर्य सर्वा, प्रकाश हो देतो
उद्योगा लावितो, सर्व जीवा

(एक है सूर्य जो, देता है सभी को प्रकाश
सक्रीय करता है वो, सभी मानव का अवकाश)

अर्थात एक सूर्य सभी को प्रकाश देता है और सभी को कार्यशील बना देता है। केशवराव भोसले की कलाकीर्ति यही कहती है कि कलाकार ने 'स्टार' बनके चमकने की बजाय 'सूर्य' बनने की हिम्मत दिखानी चाहिए तथा कला का सम्मान बढ़ाना चाहिए। इस बात को प्रभावी रूप से समझाने का सारा श्रेय डॉ. सतीश पावडे के अभ्यास एवं शोधपूर्ण लेखन को जाता है। मैं उन्हें मंगल कामनाएँ देता हूँ। यह चरित्र भारत के सभी हिंदी पाठकों को निश्चित उपयोगी होगा, यह मुझे विश्वास है।

ज्ञानेश महाराव
संपादक - 'चित्रलेखा'
❖❖❖

प्रस्तावना

रंगमंच और नाट्य संगीत के सूर्य – केशवराव भोसले

उन्नीसवीं सदी के पहले और दूसरे दशक में संगीत और नाटक के क्षेत्र में नवाचार तथा बहुमूल्य योगदान के लिए केशवराव भोसले को विद्वानों ने संगीतसूर्य की उपाधि से विभूषित किया। अभिनेता, गायक, निर्देशक, नाट्यनिर्माता और नाटक कंपनी के मालिक केशवराव भोसले का जन्म ९ अगस्त १८९० को महाराष्ट्र के कोल्हापुर में निम्न मध्य वर्ग परिवार में हुआ। पिता का नाम विठ्ठलराव और माता का नाम जनाबाई था। पिता के असामयिक निधन और घर में गरीबी के कारण उन्हें स्कूली शिक्षा नहीं मिली। केवल चार वर्ष की आयु में 'स्वदेश हितचिंतक नाटक मंडली' के मंच पर अभिनय और गायन कर केशवराव भोसले ने लोगों को चमत्कृत किया। उनकी प्रतिभा से अभिभूत होकर नाटक मंडली के संचालक जनुभाऊ निमकर जैसे नाटक कंपनी के कुशल जौहरीने उनका मार्गदर्शन किया। वहीं केशवराव ने शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण दत्तोपंत जम्भेकर बुवा से प्राप्त किया।

केशवराव भोसले को १९०२ में 'संगीत शारदा' नाटक में अनायास भूमिका निभाने का अवसर मिला। इस नाटक में उनकी भूमिका इतनी जीवंत थी कि इसके बाद मराठी रंगमंच में उनका नाम 'शारदा' के रूप में लोकप्रिय हो गया। इस समय मराठी रंगमंच पर प्राय: शारदा तथा सुभद्रा जैसे पारंपरिक नाटक मंचित होते थे। केशवराव ने १९०७ में स्वदेशी थिएटर मंडली छोड़ दी और १ जनवरी १९०८ को हुबली में अपनी खुद की 'ललितकलादर्श संगीत नाटक मंडली' मात्र १७ साल की उम्र में स्थापित की। उस समय, मराठी नाट्यकंपनियां अपने विज्ञापनों में ब्रिटिश सरकार, संस्थानिकों, सरदारों, राजाओं और जमिनदारों के सहयोग का उल्लेख किया करते थे, जिन्होंने उन्हें आश्रय दिया था। लेकिन केशवराव ने अपने

संगठन 'ललितकलादर्श संगीत नाटक मंडली' को सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना के साथ लोकाश्रयी संगठन के रूप में स्थापित किया। साथ ही नाटक का चयन करते समय उन्होंने लोक शिक्षा के उद्देश्य को भी ध्यान में रखा। उन्होंने कई नाटकों का सफल मंचन किया। ये नाटक उस समय बहुत ही लोकप्रिय हुए। इस दौरान उन्हें गायनाचार्य रामकृष्णबुवा वझे से संगीत सीखने का अवसर मिला और उन्होंने गायन में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उनके गायन की विशेषता एक ऐसी आवाज थी जो आसानी से और स्पष्ट रूप से और एक बहुत ही प्रभावी ऊंचे स्वर तक पहुंच जाती थी। कालांतर में नाट्य संगीत के क्षेत्र में यह एक नया प्रयोग और सिद्धान्त के रूप में स्थापित हुआ।

केशवराव ने नाट्यनिर्माण, नाट्यतकनीक, नाट्यप्रबंधन, नाट्यनिर्देशन एवं रंगसज्जा के क्षेत्र में कई सुधार किए। तब दृश्यरचना, रूप सज्जा तथा वेषभूषा आदि नाटक को प्रयोगधर्मी नाटकीय संदर्भ से विशेष रूप से उन्होंने जोडा। नाटकों में उनकी वीररस की भूमिकाएँ बहुत लोकप्रिय थीं। वर्ष १९२१ में 'तिलक–गांधी स्वराज्य कोष' की सहायता के लिए बालगंधर्व के गंधर्व नाटक मंडली और 'ललितकलादर्श' नाटक मंडली ने संयुक्त रूप से 'मानापपान' नाटक का मंचन किया। यह प्रयोग मराठी रंगमंच का एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण पड़ाव था। इस नाटक के मंचन में केशवराव के साथ बालगंधर्व और गणपतराव बोडस जैसे मराठी रंगमंच के ख्यातिलब्ध अभिनेता जुड़ गए। केशवराव ने 'धैर्यधर', बालगंधर्व ने 'भामिनी'और गणपतराव बोडस ने 'लक्ष्मीधर' की भूमिका निभाई। केशवराव द्वारा निभाई गई 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' नाटक की 'मृणालिनी' की भूमिका भी अद्भुत थी। केशवराव ने जैसे ही अपनी सुरीली और तेज आवाज में अपने नाट्यगीतों को गाने की शुरुआत की, चारों ओर सन्नाटा छा गया और दर्शकों के कान गायन पर टिक गए और निगाहें भूमिका पर टिक गईं। कहा जाता है कि केशवराव के इस अभिनय और गायकी के समक्ष कुछ देर के लिए बालगंधर्व का विश्वास डगमगा गया था।

केशवराव सामाजिक चेतना के चितेरे थे। अभिनय और गायकी के जिस उत्कृष्ट शैली को उन्होंने स्थापित किया वह आज तक ना केवल मराठी बल्कि भारतीय रंगजगत के लिए भी एक कीर्तिमान और आकाट्य घटना है। डॉ. सतीश पावड़े ने प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से केशवराव के जीवन तथा सृजन के उन पक्षों को प्रकाश में लाया है, जो अब तक भारतीय कला जगत से दृष्टि ओझल था। इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए सतीश जी को बहुत बहुत साधुवाद। आशा यह पुस्तक भारतीय रंगजगत के लिए उपयोगी और प्रेरणादायक भी सिद्ध होगी।

प्रो. ओम प्रकाश भारती
अध्यक्ष
प्रदर्शनकारी कला विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

❖❖❖

भूमिका

आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार

महान अभिनेता, गायक, नाट्यगीत लेखक, नाट्य निर्देशक, प्रबंधक, नाटक कंपनी के मालिक,नाट्य शिक्षक,नाट्य प्रशिक्षक, नाट्य प्रसारक, अर्थ नियोजक, नाट्य मंचन यात्रा के नियोजक, नाटक मंडली द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के संयोजक, जनसम्पर्क प्रमुख, मंच सज्जा, वस्त्र सज्जा, रूप सज्जा, नाट्य संगीत आदि नाट्य ईकाइयों के संकल्पक इत्यादी भुमिकाओं में संगीतसूर्य केशवराव भोसले अपनी अंतिम सांस तक काम करते रहे। मात्र ३१ वर्ष की उम्र में जो काम उन्होंने किया है उसका कोई सानी है ही नही। उम्र के ४ साल में उनका गायन और अभिनय प्रशिक्षण शुरू हुआ। १० वें साल में ऊन्होंने 'संगीत शारदा' नाटक में शारदा की भूमिका कर इतिहास रच दिया। इतनी सी उम्र में इस नाटक में उन्होंने २० नाट्यपद (गीत) गाये, एक गाने पर बारह बार वन्समोअर मिला। उम्र के १४ वे पडाव में मे गायक के रूप में मैहफिलों में गाने लगे। इतनी ख्याति पाई की दुर दराज से आयोजक उन्हे गाने के लिए बुलाने लगे। अमरावती के नबाब और स्वतंत्रता सेनानी श्रीमंत दादासाहेब खापर्डे ने १९०४ में शिवजयंती समारोह में उनके संगीत मेहफिल का आयोजन किया था।

जब वे १८ साल के हुए तब उन्होंने महाराष्ट्र से कर्नाटक जाकर हुबली में अपने 'ललितकलादर्श' नाटक की स्थापना की। मात्र २१ वर्ष के रंगमंचीय कार्य काल में ३१ नाटकों में ५२ भुमिकांए निभाई। परिकल्पक, प्रयोगधर्मी, सृजनशील होने के कारण रंगमंच के लिए इतिहास गढनेवाले प्रयोग किए, नयी परंपराओं का प्रारंभ किया। मराठी रंगमंच को, महाराष्ट्र के बाहर उज्जैन, देवास, इंदौर(मध्यप्रदेश), हैद्राबाद (आंध्रप्रदेश), हुबली, बेलगांव (कर्नाटक), मुंबई प्रांत, गुजरात, तमिलनाडु तक पहुचाया। एक ब्रिटिश रिकॉर्डिंग तकनिशिएन को

खोजकर अपने गानों का रिकॉर्डिंग हैद्राबाद जाकर करवाई. मखमल का दर्शनी पर्दा, इलेक्ट्रिकल बेल, सभागार में बडी सी घडी, नाट्ययात्रा हेतु पुरी ट्रेन की बुकिंग, छह माह के लिए एकही नाट्यगृह का आरक्षण, कलाकारों के लिए बोनस की सुविधा, नई गीत-संगीत-अभिनय पद्धति, २१ भागिदारों के साथ कंपनी का संचालन ऐसे कई विक्रम उन्होने बनाएं। जबकी मराठी रंगमंच की मुख्यधारा ने उनकी हमेशा ही उपेक्षा की थी।

अमरावती के नाटककार वीर वामनराव जोशी उनके करीबी मित्र और प्रिय नाटककार थे। जोशी स्वतंत्रता सेनानी थे। केशवराव उन्हे हमेशा उनके राष्ट्रीय कार्य हेतु आर्थिक मदद करते थे। अंग्रेज पुलिस जब उन्हे गिरफ्तार करने के लिए ढुढंती थी, तब पुलिस के डर और नुकसान को नजरअंदाज कर केशवराव उन्हें अपने नाटक मंडली के 'बि-हाड' में पनाह देते थे। १९१४ में केशवराव के 'ललितकलादर्श' ने वामनराव जोशी का नाटक 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' मंचन के लिए चुना। लेखक के आग्रह पर उसका पहला मंचन ८ दिसंबर १९१४ को उनके गांव अमरावती में किया।अमरावती के रसिकाग्रणी स्वतंत्रता सेनानी दादासाहेब खापर्डे और जयराम पाटिल के नेतृत्व में जोशी जी का सत्कार भी करवाया। उस समय ४०० रु. का थाल उन्हें उनके राष्ट्रीय कार्य हेतु भेंट किया गया। केवल एक अभिनेता, गायक, प्रबंधक और मंडली के मालिक ही नही बल्कि एक कुशल संगठक के रूप में भी इस घटना को हम देख सकते है।

'राक्षसी महत्वाकांक्षा' नाटक बहुत ही सफल रहा। यह देखकर इस नाटक का उन्होंने पारसी रंगमंच की तरह हिंदी-उर्दू भाषा में 'कमाल-ऐ-हिर्स' नामसे उसका मंचन करना शुरू किया। यह भी इस प्रकार पहली और ऐतिहासिक घटना थी। इस नाटक के चलते वामनराव जोशी को पहले महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करने का अवसर मिला। इन्ही नाटकों ने वीर वामनराव जोशी को सफलताओं की बुलंदियों पर पहुचा दिया।इस नाटक में केशवराव ने मृणालिनी नामक मुख्य नायिका की भूमिका की। इस में 'परवशता पाश दैवे ज्याच्या गळा लागला', 'कोमल करूणा हलवी काळ हृदया','जगी हा खास वेड्यांचा पसारा

माजला सारा','भरवसा नसे या चोरांचा' यह चार नाट्यगीत जोशी जी ने खास केशवराव की गायकी के अनुसार लिखे थे, जो उस समय लोकप्रियता की चरम सिमा पर थे।

काका (कृष्णाजी प्रभाकर) खाडिलकर लिखित 'संयुक्त मानापमान' नाटक का मंचन 'तिलक-गांधी स्वराज्य फंड' जैसी ऐतिहासिक और महत्वाकांक्षी परियोजना के तहत गंधर्व नाटक मंडली एवं ललितकलादर्श नाटक मंडली ने संयुक्त रूप से किया था। संगीतसूर्य केशवराव भोसले के चरित्र में यह प्रसंग भी ऐतिहासिक और सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गंधर्व कंपनी में भामिनी का पात्र बालगंधर्व निभाते थे और ललितकलादर्श में धैर्यधर का किरदार केशवराव करते थे। इन दोनों की अपने चरित्रपर अपनी अपनी हुकमत थी। इसलिए जब साझे मंचन की बात तय हुई तो इन दोनो को उनके अपने-अपने भूमिकाओं के लिए चुना गया। वे प्रतिस्पर्धी होते है दोनो अच्छे मित्र थे। एक दूसरें की क्षमता और मर्यादाओं को जानते, समझते थे। एक दुसरे का सम्मान भी करते थे। इस परियोजना से दोनों भी खूश थे। 'ललितकलादर्श' ने इस मंचन योजना का सहर्ष स्वागत किया। लेकिन बालगंधर्व को छोडकर गंधर्व नाटक मंडली इस नाट्य परियोजन से नाराज थी।

असल डर के पिछे केशवराव भोसले का अभिनय और गायकी का खौफ था। बालगंधर्व के हितैषियों को लगता था की केशवराव बालगंधर्व को मात दे देंगे। इस प्रसंग का वर्णन शैलजा दातार ने 'देवगंधर्व' में बखुबी से किया है। जब 'संयुक्त मानापमान' नाटक के मंचन के प्रस्ताव कि वार्ता गंधर्व नाटक मंडली तक पहुंची तब वहां के सलाहकार, हितैषी अस्वस्थ हो गए। लेखक खाडिलकर, अल्लादियां खांसाहाब और बालगंधर्व जी के गुरू भाष्करबुवा बखले को प्रस्ताव अहितकारक लगा। बालगंधर्व के लौकिक उनकी प्रतिमा और प्रतिष्ठा को यह नुकसानदेह होगा, इसलिए संयुक्त मानापमान का मंचन बालगंधर्व ना करे, ऐसा आग्रह इन तिन्होंने बालगंधर्व से किया था। लेकिन बालगंधर्व ने उनकी सलाह और आग्रह भी ठुकरा दिया। बालगंधर्व एक बडे कलाकार तो थे ही साथही वे अच्छे मनुष्य भी थे। अंतत: ८ जुलाई १९२१ को मुंबई में 'संयुक्त मानापमान' का

सफलतम 'न भुतो न भविष्यति' मंचन हुआं। इतिहास साक्षी है केशवराव ने बालगंधर्व के साथ इस नाटक को सफलता की चरम सिमा पर पहुंचा दिया। जबकी केशवराव का अपमानित और उन्हें कमतर दिखाने के कई प्रयास उस समय किए गए। लेकिन कला के प्रति समर्पित केशवराव ने हार नही मानी। आज भी उनके धैर्यधर की भूमिका को सर्वोत्तम माना जाता है।

यह बहुत कम लोग जानते है की, 'संयुक्त मंचन' कर अनुभव और उसकी प्रभावेत्पादकता केशवराव जानते थे। बचपन मे ऐसे 'संयुक्त मंचन' का अनुभव उन्हें था। उम्र के दसवे वर्ष मे केशवराव ने संगीत शारदा नाटक मे 'शारदा की बेहतरीन भूमिका अदा की थी। तब बाल केशव स्वदेश हितचिंतक नाटक मंडळी के लिए इसी नाटक मे 'शारदा' का अभिनय करते थे। उसी समय अमरावती (महाराष्ट्र) में गोपालराव बेडेकर अपनी 'अमरावती ऐमेच्योर नाटक मंडळी की ओरसे शारदा नाटक मंचन करते थे। संयोग से यह दोनो नाटक मंडळियां नागपुर मे इसी नाटक का मंचन करने के लिए अदि थी। गोपालराव बेडेकर और स्वदेशी मंडळी के मालिक जनुभाउ निमकर ने प्रयोग किए जाए। व्यावसायिक दुष्टी से भी यह निर्णय दोनो मंडळी के हित मे था। सन १९०५ मे नागपुर मे संयुक्त शारदा का संयुक्त ऊभ्यात और संयुक्त मंचन संपन्न हुआ। गोपालराव कोदंड की और अर्थात केशवराव 'शारदा' की अद्वितीय भूमिका निभाते थे। आठ-आठ घंटे यह मंचन शुरू रहता था। यही अनुभव संयुक्त मानापमान नाटक के समय केशवराव को उपयोगी रहे।

मैने संगीतसूर्य केशवराव भोसले के चरीत्र का जितना भी अध्ययन किया, उसके आधार पर यह विश्वासपूर्वक कह सकता हु की उनका कार्य केवल महाराष्ट्र के स्तर पर ही नही बल्की भारतीय स्तर भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिक रंगमंच के निर्माण में भारतीय स्तर पर उनके योगदान की चर्चा होना आवश्यक है यह चरित्र लेखन के पिछे मेरी यही भूमिका है। आज्ञा है आप को मेरा यह प्रयास पसंद आएगा।

संगीतसूर्य केशवराव भोसले सही मायने में रंगमच के साधक थे, तपस्वी थे। इसलिए उनके गायकी और अभिनय में सूर्य का तेज था। परिस्थितीगत संघर्षने उन्हे बहुत कुछ सिखाया था। अपनी शारिरीक मर्यादाएं (उचाई) और आवाज की सिमाएं भी वे जानते थे। बावजूद इसके कडी मेहनत, लगन, निष्ठा और जुनून से उन्होंने वो कमाल कर दिखाया, जो शायद भले भलों के लिए संभव नही था। इस प्रकार उनका सारा जीवनही संघर्षमय था।

बाल्यावस्था में पिताजी की पैर घिस घिस कर होती हुई मृत्यु, मां का दो जून की रोटी कमाने का संघर्ष, नाटक मंडली के मालिक द्वारा किया गया शोषण, युवावस्था में आई नाटक कंपनी की जिम्मेदारी, प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा नाटक ना देकर की गई उपेक्षा, चलते हुए नाटक से अचानक बडी संख्या में कलाकारों का नाटक मंडली को छोडकर जाना। पत्नी का प्लेग मृत्यु। अंत समय में अपने ही परिवार के सदस्यों द्वारा की गई अवमानना एवं प्रतारणा, कई बार आए आर्थिक संकट, वर्ण, जाति के कारण हुई उपेक्षा। इन सभी संकटों पर मात कर उन्होंने अपनी रंग परंपरा को स्थापित किया, बढाया और एक नया दैदीप्यमान इतिहास भी रचा। १९१० से १९२१ इस काल मे उनके रंगकर्म ने केवल मराठी और केवल संगीत रंगमंच को नही बल्कि आधुनिक भारतीय रंगमंच के निर्माण में, उसे रचने-गढने में संगीतसूर्य केशवराव भोसले ने अहम भूमिका निभाई। सही मायने में वे आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार है।

– डॉ. सतीश पावडे

❖❖❖

बाल केशवराव भोसले (उम्र ४ वर्ष)
गुरूवर्य दत्तोपंत जाम्भेकर और तबलानवाज भास्करराव चौगुले के साथ

जन्म और बचपन

संगीतसूर्य केशवराव भोसले मराठी संगीत रंगमंच के महान अभिनेता और गायक कलाकार थे। उनके समग्र व्यक्तित्व और कर्तृत्त्व के अध्ययन से उनकी असामान्यताओं का पता चलता है। एक कलाकार और एक मनुष्य के रूप में भी उनका गौरव के साथ उल्लेख करना होगा। अपने जीवन के केवल 31 वर्षों में उन्होंने मराठी संगीत रंगमंच पर शानदार और अविस्मरणीय काम किया है। उन्होंने अपने

नाट्यकर्तृत्व के माध्यम से कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। अत्यंत प्रतिकुल परिस्थिति में जब बालगंधर्व जैसा प्रतिद्वंद्वी सामने होते हुए भी एकलव्य की निष्ठा की तरह गायन और अभिनय के माध्यम से अपना आस्तित्व सिद्ध किया है। प्रतिस्पर्धियों और विरोधियों द्वारा भी प्रशंसा और स्वीकृति प्राप्त की। प्रवाह के विरुद्ध आगे बढ़ते हुए हठपूर्वक सफलता, कीर्ति और धन भी संपादित किया है।

संगीतसूर्य केशवराव भोसले का जन्म 1 अगस्त 1890 को सुबह 10 बजे घर नम्बर 2280, तस्ते गली, मंगलवारपेठ, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुआ था। उनके पिता विठ्ठलराव भोसले सोपानगढ़ के गढ़रक्षक थे। वैद्यकीय चिकित्सा का अध्ययन करते हुए, उनको चमत्कार, जादु और टोना-टोटका करने की आदत लग गई। भयानक अंधविश्वास में उन्होंने अपना सारा सर्वस्व खो दिया। इसी वजह से उन्हें एक दिन अपनी जान भी गंवानी पड़ी। केशवराव के दादा सटवाजीराव भोसले भी पहले सोपानगढ़ के गढ़रक्षक थे। 1875 के विद्रोह में वे शहीद हुए थे। केशवराव को ऐसा क्षत्रियत्व और ऐसी वीरता विरासत में मिली थी। लेकिन अपने पिता की ऐसी आदत और आत्मघाती व्यवहार के कारण उन्हें बचपन में ही गरीबी का सामना करना पड़ा था। दरअसल उनकी मां जनाबाई कागल के एक सुभेदार घराने से थीं। लेकिन विठ्ठलराव भोसले के कुकृत्यों के कारण उन्हें भी बेबस और लाचार होना पड़ा। मां की लाचारी और दु:ख को उन्होंने बचपन में देखा था।

तीन लड़के और एक लड़की के जीवन निर्वाह के लिए जनाबाई को कोल्हापुर के स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली में खाना पकाने, बर्तन मांजने और साफ-सफाई का काम करना पड़ा। यहां दो वक्त के खाने की समस्या तो हल हुई लेकिन गरीबी से पीछा नहीं छूटा था। इस स्थिति में स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली का वातावरण केशवराव के संस्कार और पालन पोषण के लिये उपयोगी साबित हुआ। दरअसल, इस मंडली ने तीन साल की उम्र से ही केशवराव पर कला के प्रभावी संस्कार किए थे। उन्हें बचपन से ही रंगमंच पर काम करने का मौका भी वही मिलता रहा। शुरूआती दिनों में उन्हें 'तरूणी शिक्षण' नाटक में 'पोऱ्या' और

'बाजीराव मस्तानी' नाटक में 'पोरसवदा' और समशेर बहादुर की एवं नाटक 'राजाराम' में 'बाल शाहू' की भूमिका मिली थी। इसके अलावा वे 'मृच्छकटीक' नाटक में चेट और 'शांकुतल' नाटक में प्रियंवदा का किरदार भी निभाते थे। उन्हें 'प्रबल यागीनी' नाटक में पहली बाल स्त्री कलाकार की भूमिका यानी चंदा की भूमिका निभाने का अवसर मिला। बेशक, ये भूमिकाएँ बहुत गौण थीं। फिर भी, रंगमंच पर उनका प्रवेश बाल्यावस्था में ही हुआ। नाटक के अभ्यास की दृष्टी से यह भूमिएं एवं अनुभव महत्वपूर्ण थे।

संयोग से उन्हे गो. ब. देवल के 'संगीत शारदा' नाटक में मुख्य नायिका 'शारदा' की भूमिका मिली थी। केशवराव ने भी उस मौके का भरपूर फायदा उठाया। अक्सर यह भूमिका निभानेवाला कृष्णा देवली अभिनेता बीमार पड़ने के कारण यह भूमिका केशवराव को मिली थी, यह मराठी संगीत रंगमंच की एक ऐतिहासिक घटना थी। 'मूर्तिमंत भिती उभी' उस पद के कारण केशवराव को एक नायक और गायक के रुप में प्रेक्षकों ने पसंद किया। जब केशवराव शारदा की भूमिका निभाते थे तब उनकी उम्र केवल दस साल की थी। नाटक मंडली के सन 1900 में बार्शी यात्रा के दौरान उन्हें यह अवसर प्राप्त हुआ था। चार साल की उम्र से ही उनको उनकी नाटक मंडली के मालिक जनुभाऊ निमकर ने संगीत, अभिनय का विधिवत प्रशिक्षण देना शुरू किया था। इसका भरपूर लाभ केशवराव को मिला। शारदा नाटक से एक बाल कलाकार के रूप में उनको प्रसिद्धि मिलनी शुरू हुई थी। उनकी वजह से ही 'संगीत शारदा' नाटक बहुत लोकप्रिय हुआ। केशवराव द्वारा अभिनीत शारदा नाटक किर्लोस्कर मंडली द्वारा किए गए शारदा नाटक के प्रयोगों से भी बेहतर था, ऐसी प्रतिक्रिया खुद उसी नाटक के लेखक गो. ब. देवल ने भी दी थी। इस नाटक में 20 पद थे। इतनी कम उम्र में भी केशवराव उन गीतों को अच्छा गाते थे। दर्शक उनके गायन अभिनय और से सरावोर हो जाते। बार्शी में हुए पहले ही मंचन के लिए 'मूर्तिमंत भिती उभी' इस नाट्य गीत को बारह बार 'वन्समोर' मिलने का रिकॉर्ड भी केशवराव के नाम पर है।

❖❖❖

स्वदेश हितचिंतक नाटक मंडली के शारदा (1900) नाटक में वल्लरी की भूमिका में केशवराव(दाये से तीसरे)

संघर्षपूर्ण जीवनयात्रा की शुरूआत

संगीतसूर्य केशवराव भोसले और उनके बंधू दत्तोबा भोसले हितचिंतक नाटक मंडली में प्रमुख अभिनेता बने। लेकिन उन्हें मंडली के कमाई के बंटवारे में संतोषजनक हिस्सा नहीं मिलता था और न ही योग्य वेतन! उन्हें अपने दिन अल्प पारिश्रमिक पर ही बिताने पड़ते थे। वास्तव में, मंडली की आय और सफलता में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान दिया था। वेतन वृद्धि के मुद्दे पर उन्हें अक्सर अपमानित होना पड़ता था। इस कारण एक दिन जब बातचीत के सारे रास्ते बंद हो गए तब दोनों भाइयों ने स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली छोड़ने का फैसला किया। उन्होंने

अपने नए करियर की शुरुआत गरीबी के शाप के साथ की थी, लेकिन कई कोशिशों के बाद भी उनकी गरीबी अभी खत्म नहीं हुई थी। अंतत: 1 जनवरी 1908 को उन्होंने हुबली में खुद की अपनी 'ललितकलादर्श नाटक मंडली' की स्थापना की और स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया। नाटककार रामभाऊ दोंदे का 'ऋतुध्वज मदालसा' ललितकलादर्श का पहला नाटक था। इसका पहला प्रयोग 1911 में विदर्भ के अकोट गांव में हुआ था।

अपर्याप्त संसाधन, आर्थिक तंगी, कलाकारों की कमी, प्रतिष्ठित नाटककारों के असहयोग के साथ संघर्ष करते हुए वे निरंतर सकारात्मक काम करते रहे। मालिक होते हुए भी वे स्वामित्व के भाव को छोड़कर जो भी काम रहता उसे उत्साह और बिना हार माने करते थे। भोजन के लिए थाली, चाय के लिए कप – तश्तरी न होना, इस तरह के अनुभव से भी उन्हें गुजरना पड़ा। उन्हें और उनके साथियों को द्रोण से चाय पीनी पड़ती थी। चटाई उठाना, रंगमंच की सजावट करना, जरूरत पड़ने पर झाडू लगाने का काम भी वे स्वयं करते थे। लेकिन उनका 'शो मस्ट गो ऑन' पर भरोसा था। उन्होंने रंगमंच के प्रति अपनी जो श्रध्दा थी, उसे कभी कम नहीं होने दिया। उस समय वे केवल 18 वर्ष के थे। 'ललितकलादर्श' कुल 21 मालिकों की एक सामुहिक नाटक मंडली थी। इतने सारे मालिकों के साथ एक नाटक मंडली को सफसततापूर्वक चलाना एक बड़ा ही चुनौतीपूर्ण काम था। लेकिन उन्होंने कुछ समय तक यह काम बखूबी किया। उन्होंने कड़ा संघर्ष करते हुए अपने और अपनी नाटक कंपनी के हितों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

केशवराव मूल रूप से बहुत जिद्दी स्वभाव के थे, लेकिन यह जिद सकारात्मक थी, नवनवोन्मेशशाली थी। वे एक मेहनती व्यक्ति थे। उनमें गुणग्राहकता, दूरदर्शिता, सरलता, प्रयोगशीलता, आवश्यक व्यावहारिकता के गुण भी थे। वे अपना काम पूरी लगन और निष्ठा के साथ करते थे। इस कारण उनके स्वभाव में एक मनस्वी भाव था साथ ही कलंदर और अवलिया वृत्ति भी उनमें थी। वे महत्वाकांक्षी थे। बुद्धि जिज्ञासु और तेजस्वी थी। उदारता, संवेदनशीलता, परोपकार वृत्ति उनके स्वभाव में थी। वे एक महान गायक, अभिनेता, संगठक, संयोजक,

प्रबंधक तथा निर्माता थे। उनका मकसद नई चुनौतियों का सामना करना और उन्हें अंजाम तक पहुंचाना था। गुणग्राहकता तो उनके स्वभाव की विशेषता थी। उन्होंने अपनी गलतियों को कभी भी नहीं छुपाया, क्योंकि उन्हें आत्मपरीक्षण करने की आदत थी। वे स्वाभिमानी थे। अपने प्रयोगात्मक और अध्ययनशील वृत्ति के कारण उन्होंने रंगमंच पर कई नए और अनुठे प्रयोग प्रस्तुत किए। उन्होंने भाग्य से ज्यादा कर्म को महत्व दिया। यद्यपि वे श्रध्दावान थे, लेकिन अंधविश्वासी नहीं थे। वे प्रयत्नधर्मिता के मूर्तिमंत प्रतीक थे। वे कुछ नया करना चाहते थे। वे सामाजिक प्रतिबद्धता को मानते थे। ''हमे समाज के ऋणी होना चहिए।'' यह उनकी धारणा थी। उन्होंने हमेशा व्यावहारिक अनुशासन के साथ-साथ नैतिकता को भी महत्व दिया। उनमें असंभव को प्राप्त करने की प्रबल इच्छाशक्ति थी। अनुभव और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयासों के कारण उनकी महत्वाकांक्षाएं उच्च कोटि की थी। कुल मिलाकर वे बहुत ही ऊर्जावान रंगकर्मी थे। कडे संघर्ष में भी उन्होंने स्वयं को संयमित, संतुलित रखा। यह उनके स्वभाव की खासियत थी।

❖❖❖

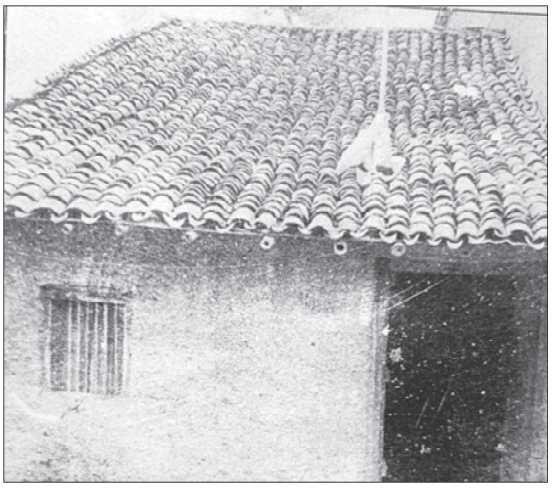

जन्मस्थान: घर नं. 2280, तस्ते गली, मंगलवार पेठ, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

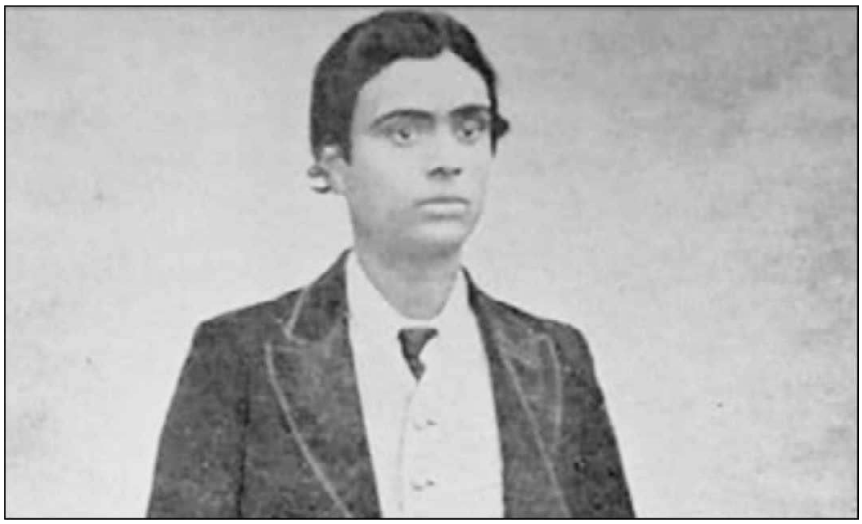

मालिक, गायक और अभिनेता के रूप में लोकप्रियता हासिल करने वाले केशवराव भोसले, उम्र 18 साल

केशवराव की कर्तृत्व गाथा

आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार... संगीतसूर्य केशवराव भोसले ने बाजीराव मस्तानी, तरुणी शिक्षण, राजाराम, प्रबल योगीनी, मुद्रिका, संस्कृत शांकुतल, मृच्छकटिक आदि नाटकों में बाल कलाकार की भूमिकाएँ की हैं। इसके अलावा रामराज्य वियोग, संशय संभ्रम, हरिश्चंद्र, अक्षविपाक, शाप संभ्रम, मूकनायक, चंद्रहास, दामिनी, मोहना, संयुक्त, सौभद्र, मानापमान, संयुक्त मानापमान, शहाशिवाजी, राक्षसी महत्वकांक्षा, हाच मुलाचा बाप, सन्याशाचा संसार, श्री, संगीत शारदा, संगीत गोपीचंद, ऋतुध्वज मदालसा आदि नाटकों में अभिनय किया है। इनमें से शारदा, मूकनायक, मदालसा, राक्षसी महत्वाकांक्षा, सौभद्र, शहाशिवाजी, दामिनी और मानापमान जैसे नाटकों में उनकी भूमिकाएँ बहुत लोकप्रिय हुई थीं। इसके अलावा शीध्र सुधारणा दुष्परिणाम, चंद्रसेना, विद्याहरण, व्रतपालन, कमाले

हिर्स (उर्दू) जैसे संगीत नाटकों में उनके द्वारा की गई भूमिकाओं के संदर्भ भी मिलते है जिस में उनके गायन और अभिनय की विशेष प्रशंसा की गई है। केशवराव ने 21 साल में 52 भूमिकाएं निभाई हैं। पारसी नाटक की तर्ज पर उनके उर्दू नाटक 'कमाले हिर्स' का उल्लेख एक बहुत ही अलग प्रयोग के रूप में करना होगा। ऐसे मंचन की हिंमत दिखाने वाले वे मराठी के एकमात्र रंगकर्मी है।

अभिनय, गायन और निर्देशन के अलावा उन्होंने 'संगीत शहाशिवाजी' नाटक के लिए तीन गीत भी लिखे। इसी तरह सौभद्र से 'बहुत छळीयले,'शकुंतल' से 'मना तळमळशी', मूकनायक से 'अवचित गेले', रामराज्य वियोग से 'मन माझे भडकूनी गेले', शारदा से 'मूर्तिमंत भिती उभी' आदि नाट्यगीत तो बहुत ही चर्चित रहे। इसके अलावा 'पांडु नृपती जनकजया' (सौभद्र), 'मी समजू तरी काय?' (शारदा), 'पुष्प पराग हे' (सौभद्र), 'होय हा संसार' (मूकनायक), 'धन्य जाहला माझा राम' (राम राज्य वियोग) आदि नाट्यगीतों के टेप रिकॉर्डिंग उस समय किए गए थे यह संदर्भ मिलते हैं। लेकिन ये रिकॉर्डिंग आज उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन आज भी 'मुकनायक' नाटक के दो नाट्यगीत 'अवचित गेले किंकर करि...' और 'होय हा संसार' युट्यूब पर उपलब्ध हैं। उन्हें आप सुन सकते हैं। उसमें पिलु, खामाज, मिश्र पिलु, भैरवी आदि रागों का प्रयोग उन्होंने किया है। इस आधार पर केशवराव की आवाज और गायन डीली का अंदाज आपको आ सकता है।

1990 में जब श्री. शरद पवार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री थे, तब महाराष्ट्र सरकार के मुखपत्र 'लोकराज्य' पत्रिका ने 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले विशेषांक' प्रकाशित किया था। इस अंक को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि, ''केशवराव ने महाराष्ट्र की सांस्कृतिक भूमि को समृध्द किया है। उन्होंने मराठी संगीत रंगमंच को गौरव के शिखर पर पहुंचाया हैं। वे एक आदर्श कला-साधक थे। उन्होंने रंगमंच को आधुनिकता की दिशा देने का प्रयास किया है। अभिनय और गायन के माध्यम से, उन्होंने मराठी संगीत रंगमंच को अपनी अल्पायु में ही समृद्ध करके इतिहास में एक स्वर्णिम पन्ना लिखा है। मराठी रंगमंच के लिए वे एक भूषण सिद्ध हुए, वे एक महान कलाकार थे। 'संगीतसूर्य' यह उपाधि रसिकों ने उनको स्वयं

प्रेरणा से खुशी–खुशी प्रदान की थी।'' शरद पवार जी ने उनके इस महान कार्य का गौरव संगीत रंगमंच के स्वर्ण मुकुट का 'कौस्तुभ' कहकर किया है, इसी तरह राज्य के पूर्व सांस्कृतिक मंत्री अरूण गुजराती उन्हें 'मराठी रंगमंच का अनुपम आभूषण' कहते है। बाबुराव देशपांडे उन्हें 'झपाटलेला अवलिया' (जुनूनी अवलिया) कहते हैं। शाहु महाराज ने उन्हें 'तळपती तलवार' (चमकती तलवार) शब्द से सम्मानित किया है। विद्याधर गोखले उन्हें 'नटराजाचे भवानी खड्ग' (नटराज का भवानी खड्ग) कहते हैं। कई शोधकर्ता उन्हें 'आधुनिक मराठी रंगमंच के शिल्पकार' के रूप में देखने है। संगीत रंगमंच के संदर्भ में उनका कार्य भारतीय स्तर पर भी उल्लेखनीय हैं। लोककला, लोकनाट्य, लोकसाहित्य के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. ओमप्रकाश भारती ने उन्हें संगीत रंगमंच और गायन तथा अभिनय कला का सूर्य कहा है। संगीतही नही बल्की भारतीय रंगमंच के 'पुरोधा' के रूप में वे केशवराव को स्थापित करते है। इसी आधार पर हम भी उन्हे आधुनिक भारतीय रंगमंच के पुरोधा, शिल्पकार हम कह सकते हैं। कई लेखकों ने उन्हें 'मराठी नाट्य देवता का मुकुट रत्न' कहा है। 'कर्तव्यनिष्ठा अभिनेता' कहा है। उस समय के कुछ दर्शकों ने तो उन्हें 'गंधर्वों का गंधर्व' भी कहा है। इस आधार पर हम संगीतसूर्य केशवराव भोसले के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्त्व को समझ सकते हैं।

❖❖❖

पत्नी सावित्रीबाई के साथ केशवराव

गायन और अभिनय का चरमोत्कर्ष: नाटक 'संयुक्त मानापमान'

गायकी और अभिनय

गानसम्राट अल्लादिया खां साहेब, गुरूवर्य जांभेकर बुवा, गुरूवर्य वझे बुवा इनकी तालीम में केशवराव ने संगीत साधना की शुरूआत की। केशवराव ने अभिजात संगीत और नाट्य संगीत दोनों क्षेत्रों में विशेष गायन के लिए अथक परिश्रम किए और अपने गायकी को समृद्ध किया। उन्हें स्वदेश हितचिंतक नाटक मंडली के मालिक जनुभाऊ निमकर और अपने बड़े भाई दत्तोबा भोसले से गायन एवं अभिनय का प्रशिक्षण विरासत में मिला। वे चार साल की उम्र से ही संगीत और अभिनय के प्रति समर्पित थे। इसका एक नमूना उन्होंने दस साल की उम्र में 'संगीत शारदा' नाटक में 'शारदा' की यादगार भूमिका निभाकर पेश किया था। वे अपने अभिनय और गायन को समद्ध करने के लिए दस-दस घंटे तक अभ्यास करते थे।

इसलिए निरंतर प्रयोग करना, नवीनता की खोज करना यह उनका स्वभाव बन गया था। संगीत और अभिनय में, वे हमेशा 'इम्प्रोवाइजेशन' (कल्पना विस्तार) करते थे। उनकी कला कल्पक और रचनात्मकता के साथ विकसित होती गई। वे इन प्रयोगों को समय सूचकता, प्रासंगिकता, दर्शकों की मानसिक स्थिति को देखते हुए प्रस्तुत करते थे। जब नाटक प्रदर्शित होता था तब वे मंच पर बिजली की तरह अभिनय करते थे। लेकिन उस समय नाटक का भाव दर्शकों तक प्रभावी रूप से पहुंचे इसका भी ध्यान भी वे रखते थे।

उन्हें भाषा के उच्चारण पर महारत हासिल थी। चाहे वह मराठी हो, हिंदी हो, संस्कृत हो या उर्दू। इसलिए उनके संवाद दर्शकों को भी जल्दी कंठस्थ हो जाते थे। वे भाषा पर महारत हासिल करने के लिए अभ्यास, रियाज और तालीम करते थे। जरूरत पड़ने पर भाषा के विद्वानों से मार्गदर्शन भी लेते थे। केशवराव का गायन भी तेजतर्रार था। उनकी आवाज तेज और कड़ी थी। लेकिन वे स्त्री-पुरूष भूमिकाओं के अनुसार अपनी आवाज को मोड़ते और बदलते थे। जिस शारदा नाटक को उन्होंने प्रसिद्धि दिलाई थी उसी नाटक में उन्होंने कोदंड की भूमिका की और उसे भी बड़ी प्रसिद्धि दिलाई। कोदंड की भूमिका को दर्शकों ने खूब सराहा था शारदा इतनी ही अद्भुत भूमिका उन्होंने कोदंड की भी निभाई थी। इस प्रकार उन्होंने संगीत और अभिनय दोनों क्षेत्र पर अपना अधिकार प्राप्त किया था। इसलिए रामजी जोशी ने उनको 'मराठी रंगमंच के चार चाँद के सरदार' कहा है। मूलत: केशवराव की गायकी ख्याल गायकी थी। ग्वालियर घराने की शास्त्रीय शिक्षा उन्होंने ली थी। बाद मे कनादकी गायन शेली में भी उन्होंने प्रविणता हासिल की। उनके गायन में भारीपन और खानदानी(अभिजात) गुण था। रामजी जोशी ने उनके गायन का वर्णन इस प्रकार किया है- ''तीन सप्तकों में घुमनेवाली निर्दोष और सहज तान वे लेते थे। शास्त्रीय तानों को वे बिजली की चंचलता और गति से पकड़ते थे।'' कुल मिलाकर, उनके तानों की आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) अद्भुत थी। मूल रूप से केशवराव की तान (आलाप) उनकी शक्ति थी। सफेद पांच पट्टी की यह आवाज चौड़ी और स्वर उच्च में निबद्ध थी। अर्थात, उनकी संगीत कला, गायन और अभिनय कला अत्यंत समृद्ध थी।

संगीतसूर्य केशवराव भोसले ने अपनी खुद की एक अनुठी शैली बनाई थी। उसमें कौशल, निपुणता और चमत्कारीता का इस्तेमाल किया। आलाप की अपेक्षा तानक्रिया का अधिक प्रयोग किया। नाट्यगीत गाते समय सोलह मात्राओं के ताल में आवर्तनों को अधिक महत्त्व दिया उनकी गायन शैली 'अष्टांग गुणों' से युक्त थी। संगीतशास्त्र के अनुसार संगीत में 'अष्ट अंग' महत्वपूर्ण माने जाते हैं। रामजी जोशी ने केशवराव के गायन शैली का विस्तार से वर्णन किया है। वे कहते हैं कि ''तानक्रिया की प्रधानता के साथ अष्ट गुण मंडित और अत्यंत प्रभावी आविष्कार करनेवाली एक स्वतंत्र गायन शैली 'भोसले घराना' इस नाम से प्रस्थापित की है। केशवराव की गायकी ऐसी थी कि वे स्त्री-पुरूष इन दोनों भिन्न प्रवृत्तियों के नाट्यगीत समान क्षमता के साथ बेहतरीन तरीकें से गाते थे। यह जादूगरी नटसम्राट बालगंधर्व का पूरा सम्मान करते हुए भी उन्हें प्राप्त नहीं हुई थी, यह मै विशेष रूप से स्पष्ट करना चाहता हूं।

अर्थात केशवराव के गायकी का संचार चारों ओर था। 'केशवराव स्वयंसिद्ध कलाकार थे।' उन्होंने अपनी एक स्वतंत्र राह बनाई थी। जो-जो अच्छा लगता और जो-जो उपयोगी साबित होता, उसे चुनकर आत्मसात करके उन्होंने अपने संगीत नाट्यशैली की अपनी स्वतंत्र मुद्रा बनाई थी। श्री. अरूण गुजराथी के अनुसार, '' केशवराव भोसले ने एकलव्य की तरह निष्ठा के साथ संगीत की शिक्षा ली। मराठी रंगमंच पर उनके जैसी गायकी किसी ने भी आत्मसात नहीं की थी। उन्होंने पुरूष भूमिका हो या स्त्री भूमिका हो उसे उतनी ही ताकद के साथ निभाई थी। उन्होंने मराठी रंगमंच पर एक गौरवशाली पर्व का निर्माण किया है।'' केशवराव भोसले कोई 'बॉर्न (जन्मजात) कलाकार नहीं थे, बल्कि वे अपनी दृढ़ता, समर्पण भाव से युक्त , अध्ययनशील, प्रयोगशील और महत्वाकांक्षी कलाकार थे। उन्होंने अपने प्रयासों से इस गौरवशाली पर्व का निर्माण किया था। इसिलिए उन्हे आधुनिक भारतीय रंगमंच का शिल्पकार, रचायता कहेना उचित है। उनका सम्पूर्ण कला जीवन इसकी साक्ष देता है।

❖❖❖

बहुमुखी, प्रतिभाशाली, महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व के धनी केशवराव

महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व

अपनी गायन शैली की तरह ही उन्होंने अपनी अभिनय शैली को भी विकसित किया था। वे जानते थे कि उनमें सुंदरता, कोमलता और ऊचाई की कमी है। उसको मात देकर उन्होंने अपने अभिनय और गायन को भी समृद्ध किया। गहन संवाद, आंखों का प्रभावी उपयोग, आवाज का अनुकूल उपयोग वे करते थे। उन्होंने भूमिका को समझने, उस पर काम करने, अपने स्वंय के अभिनय के लिए पूरक जगह बनाने, अपनी ऊचाई की कमी को दूर करने के लिए अन्य कई तरकीबों का उपयोग करने जैसे प्रयोग किए। उदा. 'संयुक्त मानापमान' नाटक में अपनी ऊचाई बढ़ाने के लिए उन्होंने ऊची एड़ी के जूतों का इस्तेमाल किया था। कोल्हापुरी रिवाज की तुरेवाली पगड़ी पहनी थी। प्रवेश-प्रस्थान में विभिन्न प्रभावी एवं आकर्षक पद्धतियों का प्रयोग किया। भरत के नाट्यशास्त्र में वर्णित चतुर्विध अर्थात अंगिक,

वाचिक, आहार्य और सात्विक पद्धति के अभिनय का वे भरपूर उपयोग करते थे। अभिनय के लिए आवश्यक निरीक्षण क्षमता, अनुकरण क्षमता, कल्पनाशीलता, ध्यान केंद्रित करने के लिए आवश्यक प्रयास और उसका नियोजन, भूमिका का अध्ययन, अभिनय की तालीम, दमसाज के लिए व्यायाम, प्रयोगशीलता, सृजनशीलता और प्रभावशीलता जैसे गुण उनमें थे। आज की भाषा में जिस 'विधिवत अभिनय' अर्थात 'मेथड एक्टिंग' (पद्धतिबद्ध अभिनय पद्धति) कहा जाता है, उस पर उनकी पकड़ी थी। सबसे खास बात यह थी कि उन्होंने दर्शकों की नब्ज भी पकड़ी थी। यानी वे अभिनेता और दर्शकों के मनोविज्ञान से वाकिफ थे। भूमिका जो भी हो, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, वे समर्पित भाव से एकाग्र होकर भूमिका करते थे। उन्होंने कई नाटकों में चार या पांच अलग-अलग भूमिकाएं भी बेहतरीन तरिके से निभाई थी। लेकिन एक अभिनेता के रूप में उन्होंने अपने 'प्रभाव' को कभी कम नहीं होने दिया। हालाँकि, स्त्री भूमिकाओं की मर्यादा को देखते हुए उन्होंने आगे स्त्री भूमिकाएं करना कम कर दिया। वे पुरूष भूमिका में होने वाली आक्रमक अभिनय शैली और गायन शैली का पुरा फायदा उठाते थे। 'संयुक्त मानापमान' नाटक में उनके सामने बालगंधर्व भामिनी की भूमिका मे खड़े थे, उसके बावजुद भी उन्होंने धैर्यधर की भूमिका में सात 'वन्समोअर्स' लिए थे। विद्याधर गोखले कहते हैं, ''मानापमान में आक्रमक मर्दाना गायकी उनको बहुत ही जँच रही थी और दर्शकों ने भी उसे पसंद किया।'' मूलत: यह उनके अभिनय का प्रभावशाली अंग था। वे व्यक्तित्वों के मिजाज को परखकर अभिनय करते थे तथा अपने नाट्यगीतों को भी शानदार तरीके से प्रस्तुत करते थे।

1910 से बालगंधर्व युग की शुरूआत हुई। इस अवधि के दौरान वे अपनी लोकप्रियता के चरम पर थे। उसी समय केशवराव भोसले ने भी उनके नाटकों को टक्कर देनेवाले अपने कई नाटक मशहूर बनाए। बालगंधर्व के 'मानापमान' और 'विद्याहरण' जैसे लोकप्रिय नाटकों की स्पर्धा में अपनी गायकी और अभिनय के बल पर वीर वामनराव जोशी के 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' का सफलतापूर्वक मंचन किया। उन्होंने मंचन और कमाई का एक नया रिकॉर्ड भी बनाया था। चुनौतियों को स्वीकार करना और उसे सफल बनाना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति थी। 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' में वे अकेले 24 नाट्य गीत गाते थे। उनमें से कई नाट्य गीतों को

'वन्समोअर' मिलता था। उन्होंने नाटककर मामा वरेरकर के 'सन्याशाचा संसार' नाटक में पहली बार 'बाटग्या डेविड' की भूमिका निभाई थी। लेकिन वह भूमिका उनके अनुरूप नहीं थी। फिर भी अपने अभिनय कौशल और भूमिका के अनुरूप गायकी के बल पर उस भूमिका को भी बखूबी निभाया और उसे मशहुर बनाया। जब वे 'अरे बा पांडुरंगा' यह नाट्यगीत गाते तो दर्शकों की आँखे भर आती थी। इतनी सशक्त भूमिका वे निभाते थे। भूमिका निर्धारित होने के बाद वे अपने स्तर पर भूमिका के लिए विशेष शोधकार्य करते थे। वस्त्रसज्जा, केश-विन्यास निश्चित करते थे। संवादों का स्वतंत्र अध्ययन करते थे। गायन का नियमित रियाज वे करते। अभिनेता के लिए आवश्यक एकाग्रता पर भी जोर देते थे। आंखों का प्रभावी उपयोग, आवाज और सांस में सामंजस्य, मंच पर ओजस्वी संचार, हैण्ड प्रोपर्टी, स्टेज प्रोपर्टी का वे कलात्मक पद्धति से उपयोग करते थे। गायन और अभिनय के लिए नई-नई 'तरकीबे' खोजने और उनका सफलतापूर्वक उपयोग करने में वे माहिर थे। मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकर कहते हैं, ''केशवराव की आवाज बहुत मधुर नहीं थी और न ही उनके गीत धाराप्रवाही थे। लेकिन कड़ी मेहनत से उन्होंने अपनी आवाज में इतनी प्रभावशीलता लाई थी कि थिएटर या मजलीस में उनकी आवाज लोगों पर छाप छोड़ती थी। उनका प्रभावी गाना श्रोताओं के कानों में गूंजता था। उनकी तान मे इतनी जादू थी कि श्रोताओं के शरीर पर रोंगटे खड़े हो जाते थे। महत्वाकांक्षा यह उनका खास गुण होनें के कारण कुछ विशेष करना है, कोई प्रभाव नाट्यगीत गाकर वन्समोअर लेना है, गाने में किसी के साथ मुकाबला करना है ऐसा कुछ वो ठान लेते थे और वे उसके लिए जी-जान से कोशिश करते और उसे सफल भी बनाते।'' उनका यह सहज स्वभाव था। एक अभिनेता, एक गायक के रुप में पहचान हासिल करने की चुनौती को स्वीकार करते हुए उसके लिए जी-तोड़ मेहनत करते, इसी के चलते उन्हें वह पहचान भी मिली। गान सम्राट अल्लादिया खाँ साहब, विष्णु दिगंबर पलुस्कर, भास्करबुवा बखले, गो. ब. देवल, गोविदराव टेंबे, गणपतराव बोडस, गणपतराव जोशी, केशवराव भोले, न. चिं. केलकर और स्वयं बालगंधर्व से भी उनको खूब वाहवाही मिली है। शाहू महाराज को तो उनका अभिनय और गायकी भी काफी पसंद थी।

❖❖❖

सामाजिक प्रतिबद्धता की दृष्टी से नाटकों के विषय का चयन

सामाजिक प्रतिबद्धता

सामाजिक प्रतिबद्धता, समाजसेवा को महत्व देनेवाले कलाकार के रूप में केशवराव का सर्वप्रथम जिक्र करना होगा। उन्होंने नाटकों के लिए सामाजिक विषयों को चुनने, सामाजिक उपक्रमों के लिए दान देना, उपेक्षित कलाकारों को अवसर देने का कार्य भी विशेष रूप से किया है। समाज का हमे ऋणी होना चाहिए, यह उनकी धारणा और वृत्ति भी थी। वे अनाथालयों को आर्थिक मदद करते थे। अमरावती मराठी परिषद, कोल्हापुर के देवल क्लब, धुले के नाट्य रसिक क्लब, हैदराबाद का शंकर दरबार, पुणे मराठी ग्रंथ संग्रहालय, सांगली के दत्त मंदीर, इंदौर का ऑडिटोरियम, बेलगांव के गणेश विद्यालय, कोल्हापुर की नई व्यायामशालाएं, जिमखाना आदि को बड़ी आर्थिक मदद उन्होंने की थी। वे एक परोपकारी व्यक्ति थे। कृतज्ञता उनके स्वभाव की विशेषता थी। ललितकलादर्श मंडली में भी उन्होंने सभी के साथ समान व्यवहार किया था। जातिवाद, अस्पृश्यता, छुआछुत पर

प्रतिबंध लगा दिया। मंडली के सभी लोगों को वे एक ही साथ खाने के लिए बिठाते थे। उन्होंने कभी उनके साथ भेदभाव नहीं किया। वे कई छात्रों को उनकी शिक्षा के लिए आर्थिक रुप से भी मदद करते थे। स्वतंत्रता संग्राम के लिए स्वतंत्रता सेनानियों को लगातार वित्तीय रसद प्रदान करते थे। उन्होंने कंपनी के स्वामित्व के संबंध में एक लोकतांत्रिक पद्धति का 'ट्रस्ट डीड' बनाया था। नाटक मंडली के किसी भी सदस्य का नुकसान न हो, साथीयों पर अन्याय न हो, इसके पर वे हर समय ध्यान देते थे। जब बालगंधर्व पर कर्ज का भारी बोझ था, तो उन्होंने स्वयं बालगंधर्व को नाटक का एक संयुक्त मंचन करके ऋण से छुटकारा पाने का प्रस्ताव सहयोग की पेशकश के साथ दिया था।

नाटकों के लिए उनके पास सामाजिक विषयों का विशेष विकल्प भी था। उन्होंने महसूस किया कि नाटक को दर्शकों का मनोरंजन तो अवश्य करना चाहिए लेकिन उन्हें प्रबुद्ध भी करना चाहीए। ललितकलादर्श नाटक मंडली की स्थापना के बाद उन्होंने सामाजिक मुद्दों पर आधारित नाटक लिखवाएं। नाटक के माध्यम से समाज को संदेश देने का प्रयास किया। उन्होंने पौरणिक नाटकों के बजाए स्वतंत्र सामाजिक नाटक, आधुनिक एवं समस्या प्रधान नाटकों को चुना। नारी शिंक्षा का संदेश देनेवाला 'दमिनी, शिवाजी महाराज द्वारा स्वराज्य की स्थापना पर प्रकाश डालनेवाला 'शहाशिवाजी', धर्मांतरण समस्या पर आधारित 'सन्याशाचा संसार', दहेज समस्या पर आधारीत 'हाच मुलाचा बाप', गाँधीवादी विचार और ग्राम स्वराज्य पर आधारित 'सत्तेचे गुलाम', स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित 'तुरुंगाच्या दारात', स्वतंत्रता, न्याय, स्वभिमान का संदेश देनेवाला 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' आदि स्वतंत्र नाटकों का उन्होंने ललितकलादर्श नाटक मंडली के माध्यम सफल मंचन किया। वे नाटककारों से उनके नाटकों के माध्यम सें भी सामाजिक संदेश देने का आग्रह करते थे।

केशवराव को स्वयं अपने जीवन में सामाजिक असमानता, जातिवाद और वर्णभेद का सामना करना पड़ा था। क्योंकि वे बहुजन समाज से थे और उस समय की वर्ण वर्चस्ववादी सामाजिक स्थिति को देखते हुए उनको भी ऐसी अमानवीय

मानसिकता का सामना करना पड़ा था। फलस्वरून नाटक मंडली की स्थापना के बाद उन्होंने छुआछुत, वर्ण और जातिगत भेदभाव, श्रेष्ठता और हीनता की भावना को कभी भी जगह नहीं दी। अपने स्वयं के नाट्य कौशल और निपुणता को सिद्ध करने के बाद भी, जब 'संयुक्त मानापमान' नाटक कें मंचन का निर्णय लिया गया, तो बालगंधर्व के गुरू भास्करबुवा बखले बालगंधर्व से नाराज थे। केशवराव के साथ काम करने के संदर्भ में उन्होंने अपनी नापसंदगी जाहिर की थी। ''क्या तुम उस शूद्र के जूते उठाओगे?'' उन्होंने बालगंधर्व से यह जाहिर सवाल किया था। लेकिन बालगंधर्व का दिल बड़ा था। उन्होंने गुरु के आदेशों का पालन नहीं किया। लेकिन यह बात भी सच थी कि इससे पहले किसी भी ब्रह्मणेत्तर नट ने उनके साथ अभिनेता के रूप में कभी अभिनय नहीं किया था। जाति से बहिष्कृत यानी धर्मान्तर किए हुए व्यक्ति पर आधारित 'सन्याशाचा संसार' नाटक की प्रस्तुति करने के कारण कई लोग उनसे नाराज भी थे। शिक्षित न होने और अंग्रेजी न आने के कारण कई लोग उनपर ताना भी कसते थे। उन्होंने इस बात पर भी अफसोस जताया कि, खाडिलकर, कोल्हटकर और गडकरी ने उनके लिए कभी कोई नाटक नहीं लिखा। इन सभी अनुभवों से वे बहुत दृढ़ बन गए थे। लेकिन उनकी यह दृढ़ता सकारात्मक थी, साथ ही नवाचार के लिए भी अनुकूल थी।

अकुलीनता के नाम पर हीराबाई पेडनकर नामक स्त्री नाटककार, गायिका और अभिनेत्री की भी उपेक्षा की गई। हीराबाई कलावंतीन (नाच गाना करनेवाले शुद्र अथवा तवायफ) समुदाय से थीं। उनके वर्ण, जाति के कारण किसी ने भी उनके लिखे नाटक कभी भी मंचित नहीं किए। यह जानने के बाद खुद केशवराव उनके पास गए और ललितकलादर्श के लिए नाटक की आग्रहपूर्वक मांग की। उन्होंने हीराबाई के ''संगीत दामिनी' नाटक का मंचन भी किया और उसे लोकप्रिय भी बनाया। केशवराव को इस बात का गर्व था कि उस समय के उपेक्षित वर्ग की एक कर्तृत्ववान महिला ने हठपुर्वक स्वावलंबन और शिक्षा का विचार अपने नाटक के माध्यम से रखा। बाबुराव देशपांडे हीराबाई के बारे में लिखते है, ''वह चाहती थी कि किर्लोस्कर कंपनी उनके नाटक को मंच पर लाए। लेकिन एक वारांगणा के

नाटक का मंचन करने पर हीनता की भावना महसूस होगी, इसी वजह से किर्लोस्कार कंपनी ने नाटक के मंचन को अस्वीकार कर दिया और यह प्रतिष्ठीत समाज की अभिरूची के अनुसार नही होगा यह उनकी धारणा थी। बाद में केशवराव ने हठपूर्वक उसी नाटक का मंचन किया। गुणवत्ता जातिपर आधारीत नहीं होती, इसका पहला बीजारोपण करने की प्रथा रंगमंच पर सबसे पहले केशवराव ने शुरू की।'' इसी संदर्भ मे हीराबाई ने नाटक 'दामिनी' की प्रस्तावना में भी अपनी कैफियत बताई है, ''मुझे इस बात की चिंता थी कि मेरे जैसी अशिक्षित, उपेक्षित महिला का नाटक मंच पर कैसे आएगा? लेकिन ललितकलादर्श संगीत नाटक मंडली के मालिक रा. रा. केशवराव भोसले ने इस नाटक को मंच पर लाकर उसका कई जगहो पर मंचन किया। उनके इस धैर्य और स्त्री शिक्षा के प्रति उनकी आस्था के लिए हम उन्हें जितने भी धन्यवाद दें, वे बहुत ही कम है।'' मराठी रंगमंच पर धरी इस अनुचित घटना के संबंध में सुप्रसिद्ध लेखक, नाटककार पु. ल. देशपांडे कहते हैं, ''कुलीन न होने की वजह के जिसका नाटक किर्लोस्कर कंपनी ने अस्वीकृत किया, उसी हीराबाई पेडनेकर कलावंतीन तथा गायिका के 'दामिनी' नाटक को केशवराव ने रंगमंच पर लाया। मुझे लगता है कि इस नाटक के कारण साहित्य के क्षेत्र में होनेवाले पाखंडियों के सिर पर कड़ा प्रहर करने का काम ललितकला दर्श नाटक मंडली ने किया है, जो मुझे सबसे महत्वपूर्ण बात लगती है। कुलीन-अकुलीन जैसे अमानवीय विचारों को त्यागने का साहस बड़े-बड़े विद्वानों में नहीं था, जिसे त्यागने का साहस केशवराव ने दिखाया है।'' कंपनी के पास न केवल पैसा बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा भी होनी चाहिए, इस पर भी केशवराव भोसले जोर देते थे। और इसीलिए ललितकलादर्श ने व्यवसाय करने के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा भी हासिल की। इसलिए तिलक-गांधी स्वराज्य फंड के लिए बहुत सारी नाटक मंडलियाँ होने के बाद भी गंधर्व नाटक मंडली के साथ 'संयुक्त मानापमान' नाटक का मंचन करने के लिए ललितकलादर्श नाटक मंडली का ही आयोजकों द्वारा चयन किया गया था।

सामाजिक प्रतिबध्दता के कारण ही उन्होंने ललितकलादर्श की लोकप्रिय

छवि बनाई। राजाश्रय को नकार कर उन्होंने अपनी नाटक मंडली के नाम के आगे 'लोकाश्रय के अधीन नाटक मंडली' की विशेष उपधि लगा दी। साथ ही इस नाटक मंडली को न केवल एक मंडली के रूप में बल्कि एक प्रशिक्षण केंद्र, सांस्कृतिक केंद्र के रूप में भी पहचान दिलाई। बच्चों के मनोरंजन के लिए बालनाट्यों का भी मंचन किया। कंपनी के लिए उठाए गये कर्ज का बोझ उन्होंने कभी भी मंडली के सहयोगियों, कलाकारों पर नहीं पड़ने दिया। निश्चित तारीख को वे वेतन का भुगतान करते थे। अधिक आय होने पर सभी को इनाम देते थे। वे अपने साथी-कलाकारों का ख्याल रखते थे। इतना ही नहीं उन्होंने अपने खर्चे से 'अखिल भारतीय मराठी नाट्य सम्मेलन' का भी आयोजन किया था। सम्मान में मिली बड़ी राशि तुरंत उन्होंने अपने गुरू जाम्भेकर बुवा को सौंप दी। राजर्षि शाहू महाराज के 'शंकराचार्य को लोगों द्वारा नियुक्त किया जाना चाहिए' इस विचार को उन्होंने अपने नाटक 'संन्याशाचा संसार' में प्रस्तुत करके शाहु महाराज के सामाजिक और वैचारीक कार्यो को पुरस्कृत भी किया। यह कहा जा सकता है कि उन्होंने फुले-शाहू महाराज के वैचारीक-सामाजिक कार्यो को इस प्रकार से अपनाया था। उन्होंने अमरावती के स्वतंत्रता सेनानी और नाटककार वीर वामनराव जोशी का हमेशा समर्थन किया। स्वतंत्रता संग्राम के लिए उन्हे सभी प्रकार की मदद भी की।

केशवराव को बचपन से ही सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा था, लेकिन उन्होंने कभी इसकी परवाह नहीं की। उसको शिकस्त देते हुए रंगमंच पर अपने करियर को निखारा और बरकरार भी रखा। इस तरह की भेदभाव की एक घटना को डॉ. रुस्तम अचलखांब ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है। वे कहते है, ''उस समय नाटक मंडली अपनी बिऱ्हाड व्यवस्था(समूह) के माध्यम से जाति व्यवस्था का पालन करते थे। केशवराव एक गैर-ब्राह्मण अभिनेता थे। उनके साथ घटित एक घटना के संबंध में मामा वरेरकर बताते है कि ''उस समय जाती व्यवस्था थी। ब्राह्मणों की पंगत अलग बैठती थी और गैर-ब्राह्मणों की पंगत अलग बैठती थी। ब्राह्मणों का जूठा उठाने का काम कंपनी का शुद्र वर्ण का नौकर करता था। गैर-ब्राह्मण अपना जूठा खुद उठाते थे। लेकिन प्रमुख भूमिका करने वाले ब्राह्मण

अभिनेता का जूठा दुसरे किसी बच्चे को उठाना पड़ता था। शारदा की प्रमुख भूमिका करने वाले कृष्णा देवली का जूठा केशवराव को उठाना पड़ता था। यह बात उनको बहुत चुभती थी। जब कृष्णा बीमार पड़ा तब शारदा की भूमिका केशवराव ने की थी। उन्होंने जबरदस्त भूमिका निभाई और इसके बाद वह भूमिका उनके ही हिस्से आ गई।'' लेकीन उन्होने अपनी थाली कभी कृष्णा को नही उठाने दी। उनमे बदले की भावना नही थी। इसके बाद शारदा और केशवराव की सफलता का इतिहास सर्वविदित है। बाद में उन्होंने अपनी खुद की नाटक मंडली 'ललितकलादर्श' की स्थापना की। लेकिन इस कंपनी में भेदभाव, छुआछुत को केशवराव नें जगह नहीं दी और सहभोजन की प्रथा शुरू की। जो पीड़ा उनको हुई थी, वह मंडली के किसी को भी न हो इस बात का ध्यान केशवराव खुद रखते थे। केशवराव ने विदुषी, पहली महिला नाटककार लेकिन अकुलीन/वारांगना/नायकीन वर्ग की गायिका, कवयित्री हीराबाई पेडनेकर को तिव्र विरोध के बाद भी पहला अवसर दिया। यह इतिहास अब छिपा नहीं रहा है। केशवराव की उस समय की सामाजिक प्रतिबद्धता से आज हम सभी को परिचित होना आवश्यक हैं। इस प्रतिबद्धता के कारण उन्होंने हमेशा उपेक्षितों की मदद की हैं। एक कलाकार ही नही, एक मनुष्य के रूप में भी वे महान थे। ❖❖❖

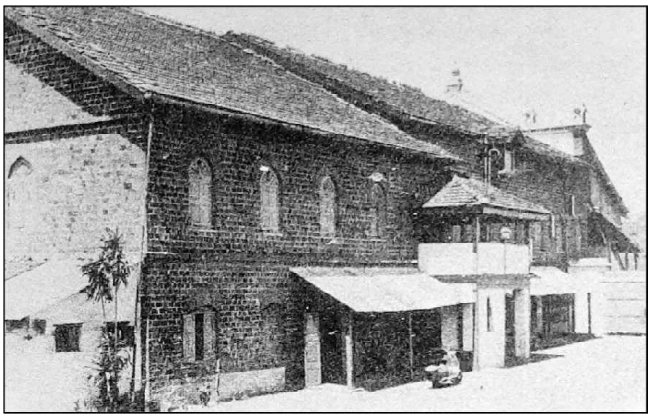

कोल्हापुर स्थित तत्कालीन पैलेस थिएटर

वारांगणा (तवायफ) समाज की हीराबाई पेडनेकर को मराठी रंगमंच पर पहली महिला नाटककार के रूप में सम्मान दिलाया।

जाति से श्रेष्ठ गुणवत्ता

संगीतसूर्य केशवराव भोसले आधुनिक मराठी रंगमंच के शिल्पकार थे और हीराबाई पेडनेकर पहली मराठी महीला नाटककार थीं। दोनों का भी कार्य बहुत ही बड़ा था। लेकिन वर्ण, जतिवादी समाज व्यवस्था में वे उपेक्षित रहे। केवल 31 वर्ष के जीवनकाल में केशवराव ने 21 वर्षों में 52 भूमिकाएँ निभाई। रंगमंच में अद्भुत सुधार किए। उन्होंने रंगमंच के साथ ही आधुनिक मराठी रंगमंच को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। केशवराव को जब यह पता चला कि वारांगना

(तवायफ) समुदाय की एक विद्वान नाटककार हीराबाई पेडनेकर को सभी निर्माता और नाटक संस्थानों ने नकार दिया है, तब उन्होंने हीराबाई के 'दामिनी' नाटक को मंचन के लिए चुना। उसकी सफल प्रस्तुतियां भी दी और उन्हें पहली मराठी महिला नाटककार होने का सम्मान भी दिलाया।

हीराबाई पेडनेकर का जन्म 23 नवंबर 1885 को सावंतवाड़ी में हुआ था। शैशवावस्था में अपनी माँ की मृत्यु के बाद, उनकी मौसी भीमाबाई, जो कलावंतीन (तवायफ) का व्यवसाय कर रही थीं, जिसने उनकी देखभाल की। हीराबाई भी इसी व्यवसाय में रहे इसकी कोशिश उनकी मौसी ने की, लेकिन हीराबाई ने उसके खिलाफ विद्रोह करते हुए शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने मराठी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा सीखी। संगीतकला की शिक्षा ली। उन्होंने गायन और लेखन में भी कुशलता प्राप्त की। 1901 से वे किर्लोस्कर कंपनी के मालीक और एक प्रसिध्द अभिनेता नानासाहेब जोगलेकर की पत्नी (बांदी) के रूप में उनके साथ रही। 19 साल की उम्र में, यानी सन 1904 में हीराबाई ने अपना पहला नाटक 'संगीत जयद्रथ विडंबन' लिखा। सन 1912 में उन्होंने 'संगीत दामिनी' नाटक की रचना की। शुरूआती दिनो में उन्होंने 'संगीत मीराबाई' नाटक भी लिखा था। 'दामिनी' यह महिलाओं की आत्मनिर्भरता, सुधारवाद और महिला शिक्षा को बढ़ावा देने की हिमायत करनेवाला यह प्रखर सामाजिक नाटक था। वह चाहती थी कि यह नाटक किर्लोस्कर कंपनी द्वारा मंचित किया जाए, लेकिन 'अकुलिनता' और अभिजन अभिरुचि के नाम पर उन्हें नकार ही मिला।

उन्होंने परशुरामपंत बर्वे, शंकरराव धुलेकर, भास्करबुवा बखले जैसे महान संगीत शिक्षकों से संगीत सीखा। गोविंद बल्लाल देवल, राम गणेश गडकरी, श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर और नानासाहेब जोगलेकर के साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे। लेकिन इस आत्मीयता ने उन्हें एक नाटककार के रूप में पहचान दिलाने में मदद नहीं की यह साय है।। इनमें से किसी ने भी उनके नाटकों को मंच पर लाने में मदद नहीं की। जैसे ही केशवराव भोसले को यह जानकारी मिली, उन्होंने जाकर हीराबाई से खुद मुलाकात की। सम्मानपूर्वक नाटक की मांग भी की। इस तरह नाटक 'संगीत

दामिनी' को ललितकलादर्श ने धुमधाम से मंच पर लाया और उसे प्रसिद्धि भी दिलाई। उसमें केशवराव ने खुद 'दामिनी' की भूमिका निभाई थी। अगर केशवराव इस नाटक को मंच पर नहीं लाते; तो एक प्रतिभाशाली महिला नाटककार कभी सामने नहीं आ पाती।

इस नाटक के मंचन के संदर्भ में हीराबाई और संगीतसूर्य केशवराव भोसले को तत्कालीन लोकप्रिय पत्रिका 'मनोरंजन' ने भी अपने संपादकीय पृष्ठ पर जगह दी। जनवरी 1913 के अंक में, ''यह नाटक; शिक्षा से वंचित रहे पिछड़ी जाति की एक विदुषी महीला द्वारा लिखा गया है और महाराष्ट्र के रंगमंच पर आने का यह पहला प्रयास है। इसके लिए हीराबाई और केशवराव भोसले को बधाई देता हूँ। 'दामिनी' उच्च कोटि का नाटक है और नैतिकता की दृष्टी से वह बहुत ही उत्तम, प्रभावी और उचित है। कहानी, कथा, पात्र, प्रसंग, उत्कृष्ट छंद, काव्य और कर्ण मनोहर धुनों की लय पर इसकी रचना की गई है।'' लेकिन उनकी यह विशेष गुणवत्ता भी इसके पहले कभी काम में नहीं आई बल्कि उनकी जाति और वर्ण ही उनकी योग्यता में बाधा बनी। पु. ल. देशपांडे कहते हैं, ''केशवराव ने रंगमंच पर लाए इस नाटक की वजह से दांभिक लोगों पर प्रहार करने का काम ललितकलादर्श ने किया है। जिन विद्वानों में मानवता के विचार नहीं हैं उनको दूर करने का साहस केशवराव ने दिखाया।'' केशवराव ने न केवल यह साहस दिखाया बल्कि हीराबाई की संगीत कला और नई चालों की भी उनसे मदद ली। उन्होंने साबित कर दिया कि जाति और वर्ण से गुणवत्ता अधिक महत्वपूर्ण होती है।

संगीतसूर्य केशवराव भोसले को भी तत्कालीन बड़े नाटककारों की उपेक्षा सहन करनी पड़ी। बालगंधर्व के प्रशंसकोंद्वारा नकार और तिरस्कार भी सहना पड़ा, इसी वजह से उपेक्षा का दर्द वे जानते थे। इसलिए उन्होंने उपेक्षित हिराबाई पेडनेकर की मदद की। उनके लिए नाटक निर्माण की जोखिम ली। और इस जोखिमभरे काम को सफल भी बनाया। प्रथम मराठी महिला नाटककार के रुप में केशवराव ने हीराबाई को सम्मान दिलाया। केशवराव के इस ऐतिहासिक कार्य के लिए उनका अभिवादन करते है।

❖❖❖

ललितकलादर्श के आधारस्तंभ दाई ओरसे केशवराव भोसले, व्यवस्थापक केशव शितुत, तमान्ना, तवनापा चिवटे

'ललितकलादर्श' की लोकतांत्रिक पद्धति

यह सच है कि एक कलाकार के रुप में संगीतसूर्य केशवराव भोसले का एक नया जन्म स्वदेश हितचिंतक नाटक मंडली में हुआ। 'संगीत शारदा' नाटक में शारदा की भूमिका ने उन्हें एक अभिनेता के रुप में प्रसिद्धि दिलाई और नाटक के प्रसिद्ध नाट्यगीतों ने विशेष रुप से 'मूर्तिमंत भीती उभी' इस नाट्य गीत ने उन्हें एक गायक के रूप में प्रसिद्धि दिलाई। उस समय वे केवल दस वर्ष के थे। वे लगभग आठ वर्षो तक इस नाटक मंडली में रहे। इस मंडली के वे 'हुकुम के इक्का ' थे। कई जगहों पर यह संदर्भ मिलता है कि उन्होंने और उनके भाई दत्तोबा ने 'वेतन वृद्धि' के लिए कुछ कलाकारों के साथ स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली को छोड़

दिया था। लेकिन मामा वरेरकर के 'माझा नाटकी संसार' आत्मचरित्र से अलग ही जानकारी मिलती है।

मामा वरेरकर और केशवराव प्रारंभ काल से ही मित्र थे। वरेरकर उस समय एक नवोदित नाटककार थे। स्वदेश हितचिंतक मंडली द्वारा 'कुजबिहारी' नाटक के अनेक्षित मंचन के लिए वे हमेशा कंपनी में आया करते थे। इसी दौरान दोनो की जान पहचान हो गई। उनका असली नाम भार्गवराम विठ्ठल वरेरकर था लेकिन केशवराव उन्हें 'मामा' नाम से ही संबोधित करते थे। उन्होंने ही उनको 'मामा' नाम दिया था। बाद में वरेरकर इसी नाम से प्रसिद्ध हुए। मामा ने इस चरित्र के माध्यम से कई नई जानकारियां सामने लायी हैं। कंपनी केशवराव के भरोसे चल रही थी। इसलिए वे मालिक जानुभाऊ निमकर के गले का ताबीज बन गए थे। इतना हीं नहीं 17 साल की उम्र में यानी सन 1907 में आंशिक स्तर पर केशवराव को मालिक भी बनाया गया था। बेशक वेतन विवाद था, लेकिन कंपनी छोड़ने का यही एकमात्र कारण नहीं था।

केशवराव जनुभाऊ की तानाशाही और एकाधिकारशाही से तंग आ चुके थे। कंपनी चलाते समय जनुभाऊ 'फुट डालो और राज्य करो' की नीति के साथ कलाकारों और सहयोगियों के साथ व्यवहार करते थे। वे आपस में झगड़े लगाते थे, चुगलखोरी करने का भी काम करते थे। उन्होंने केशवराव को विपक्षी सदस्यों की जासूसी करने के लिए भी मजबूर किया। गाली-गलौज करना, गुस्सा करना, धमकियाँ देना आदि अनुचित वर्तन इस छल में शामिल था। लेकिन जनुभाऊ यह काम प्यार और छद्म कपट से करते थे। हालांकि जनुभाऊ केशवराव से पुत्रवत प्रेम करते थे, लेकिन केशवराव को उनका यह तरीका बिलकुल पसंद नहीं था। इसलिए उन्होंने स्वदेश हितचितंक नाटक मंडली छोड़ने का अंतिम फैसला बडे बंधु दत्रोबा भोसले की सहमत्ति से किया था। जनुभाऊ को खबर लगी थी कि केशवराव विपक्ष मंडली में शामिल हो रहे हैं और एक नई कंपनी की स्थापना कर रहे हैं। तब केशवराव विपक्षियो के हाथ न लगें इसलिए केशवराव को उन्होंने अज्ञातवास (अलीबाग) में नजरकैद में रखा था। लेकिन केशवराव चालाकी से वहां से भाग

निकले। वहाँ से निकलकर अपने साथियों को साथ लेकर वे हुबली गए और उन्होंने 1 जानवरी 1908 को ललितकलादर्श नाटक मंडली की स्थापना की। स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली का तानाशाही से चलनेवाला कारोबार, निर्दयी मालिक और उसके एकाधिकारशाही को देखकर केशवराव ने शुरू से ही अपने ललितकलादर्श नाटक मंडली को लोकतांत्रिक तरीके से चलाने की कोशिश की। इसकी स्थापना के समय, नाटक मंडली के 21 मालिक थे। स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली में जनुभाऊ जो किया करते थे। वह केशवराव ने ललितकलादर्श में कभी नही किया। सभी समान, कोई नौकर नही मालिक नही, यही उनका संगठन का सूत्र था।

मतभेद होने के बाद भी वे एक साथ बैठकर उनको हल करना, सामूहिक रुप से निर्णय लेना, निर्णय लेने के लिये बैठकें आयोजित करना, आय के हिसाब-किताब में पारदर्शिता बनाए रखना, यदी कोई स्वामित्व या नाटक मंडली छोड़ना चाहता है, तो बिना किसी शत्रुता के हिसाब-किताब करके उसको भुगतान करना, कलाकारों और सहयोगियों को सृजन और निर्मिती की स्वतंत्रता देना। उनकी सूचनाओं का पालन करना, किसी के साथ भेदभाव न करते हुए सबको एक ही पंक्ति में बिठाकर खाना खिलाना, निर्णय स्वतंत्रता के आधार पर सबकी सलाह लेना आदि काम वे व्यवस्थित ढंग से करते थे। स्वदेश हितचिंतक मंडली में जिन वजहों से केशवराव को विद्रोह करना पड़ा था, उन वजहों को उन्होंने 'ललितकलादर्श नाटक मंडली' में कभी भी जगह नही दी। 'ललितकलादर्श' का लोकतंत्रीकरण करके मराठी रंगमंच पर एक नई परंपरा उन्होंने शुरू की थी। इतना ही नही, वसीयत बनाते समय उन्होंने अपने भाइयों, भतीजों, भांजो और रिश्तेदारों को भी विरासत न देते हुए, एक वफादार, अभिजात कलाकार और नेतृत्त्व करने की क्षमता रखनेवाले बापूसाहेब पेंढारकर को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। इसीसे निर्विवाद रूप से केशवराव की निष्पक्षता और महानता और नैतिकता सिद्ध होती है।

❖❖❖

नाटक 'राक्षसी महात्वकांक्षा' में
मृणालिनी की भूमिका में केशवराव भोसले

साभिनय गायन का आदर्श

केशवराव भोसले के संगीत से संबंधित साभिनय गायन के कारण, संगीत में किए गए नए-नए प्रयोग और प्रस्तुतिकरण की अलग शैली के कारण प्रेक्षकों ने उत्स्फूर्त रूप से 'संगीतसूर्य' यह उपाधि उन्हें प्रदान की थी। उनके द्वारा संगीत में किए गए प्रयोग अचंभित करने वाले थे। परंपरा पर न चलते हुए उन्होंने अपनी स्वतंत्र ''भोसले गायन शैली'' का निर्माण किया। गीतों की विविधता उनके गायन की विशेषता थी। लगभग 21 वर्षो तक उन्होंने मंच और संगीत कार्यक्रमों के लिए गाया। उन्होंने अथक संगीत साधना और गायन की तपस्या की थी। बालगंधर्व की तरह उन्हें आवाज का दिव्य उपहार तो नहीं मिला था। उन्होंने जो गायकी अर्जित की थी वह जिदपूर्वक अथक प्रयास और नाटक के प्रति उनकी निष्ठा से ही की थी। आत्मनिरीक्षण, आत्मचिन्तन, नए प्रयोगों के माध्यम से इस गायकी का जन्म हुआ था। वे लगातार ध्वनि की मात्रा (पट्टी) और सीमा (पल्ला) को बढ़ाने की कोशिश

करते थे। गायन में अपनी बड़ी सफलता के बावजूद, वे भगवान से केवल एक मात्रा और उच्च मात्रा, लंबे पल्ले की माँग करते थे। जिससे उनके कलाकार और कलानिष्ठ जीवन की पहचान होती है।

वे एक मिश्रित राग की तलाश में थे जो मूल राग के अनुरूप हो। इसका प्रयोग उन्होंने अपने गायन में किया। उन्होंने अपना अनूठा स्वरशिल्प (पद्धति) बनाया था। नाटक या गायन का कार्यक्रम का समय जब भी उसके समाप्त होता, जिसके बाद वे नाटक के दृश्यों, अपने पदों और बंदिश की तालीम करते थे। जब तक अपना गायन और अभिनय प्रभावी नहीं हो जाता तब तक वे अथक अभ्यास करते ही रहते थे। इस तरह वे प्रयत्नवाद, कर्मवाद के आदर्श प्रतीक थे। बाल्यावस्था के अंत में जब उनकी कोमल आवाज फट गई, तो उन्होंने कठिन अभ्यास करके अपनी खोई हुई आवाज को वापस पा लिया। तानों का भी अभ्यास किया। आवाज में स्पष्टता लायी और उसमें लचीलापन बढ़ाया। स्वरयंत्र पर अपना अधिकार जमाया। बाद में एक प्रयोग के रूप में, उन्होंने गायन की कर्नाटक शैली में महारत हासिल की। उसमें भी परिष्करण कर और लोकोन्मुख सुधार करते हुए उस मिश्र शैली को रसिकों के सामने लाया। ध्वनि और लय पर उनकी अद्भुत पकड़ थी। उनकी श्रवण भक्ती और श्रवण शक्ति भी उल्लेखनीय थी। बेशक, बचपन से ही उनको गायन शक्ति की समझ थी। शारदा नाटक में वे 'मूर्तिमंत भिती उभी' ही नहीं बल्कि अन्य गीत भी उसी ताकद और आकर्षकता के साथ गाते थे। उनके गाये हुएं पद इतने लोकप्रिय हो गए थे कि नाटक के टिकट खत्म होने के बाद भी दर्शक दो रूपए का अलग से टिकट लेकर थिएटर के दरवाजे के सामने खड़े होकर उनके गाने सुनते थे। इससे पहले उन्होंने शारदा नाटक में वल्लारी की गौण भूमिका निभाई थी। उस समय भी उनके गीत दर्शकों के बीच बहुत लोकप्रिय हूए थे।

अपने 31 साल के जीवनकाल के दौरान केशवराव ने नाटक रंगमंच, अभिनय, गायन, संगीत और नाट्यतंत्र में कई नए प्रयोग और कई भी नई परंपराओं की सुरूआत की थी। अपने नाम पर कई कीर्तिमान स्थापित किए। बहुत कम उम्र में फोनोग्राम पर अपना गाना रिकॉर्ड करने का अवसर भी उन्हें मिला। एक बार रत्नागिरी में नाटक 'शारदा' का मंचन किया था। जिसमें केशवराव ने वल्लारी की भूमिका निभाई थी। रत्नागिरी में प्रा. पाठारे नाम के एक सज्जन 'बायोस्कोप' जो उस

समय नया था, उसपर तस्वीरें दिखाने का व्यवसाय करते थे। उन्हें केशवराव द्वारा गाए गए कई नाट्य पद भी पंसद थे। इसके बाद उन्होंने अपने 'बायोस्कोप' शो का प्रचार करने के लिए फोनोग्राम पर वल्लारी के पद रेकोर्ड किए थे। 'म्हातारा न इतुका वय अवघे पाऊनशे' यह उनका गाना उस समय बहुत ही लोकप्रिय हुआ था। उसी का उपयोग प्रा. पाठारे ने विज्ञापन के रूप में किया था। मामा वरेरकर ने यह जानकारी अपने 'माझा नाटकी संसार' इस आत्मचरीत्र में दी है। इस तरह से केशवराव के नाम पर इतनी कम उम्र ही में फोनोग्राम पर गाना रिकॉर्ड करने का कीर्तिमान भी है।

उन्होंने अपने कला जीवन में नाट्य संगीत का पर्याप्त इस्तेमाल किया लेकिन उसका अतिरेक नहीं होने दिया। नाट्य संकेत के अनुसार पदों की अभिनव योजना बनाई। केशवराव अच्छी तरह से जानते थे कि स्वर और स्वर की सफलता, जो संगीत के केंद्र में है, उसकी रचना स्वरों पर निर्भर करती है। इसलिए वे संगीत के माधुर्य और लय का पूरा उपयोग करके नाट्य छंदों की आकर्षक रचना करते थे। नाट्यपद का संगीतमय प्रयोग उन के लिए एक परिक्षा होती थी। उन्हे अपनी नियंत्रित गायकी सिद्ध करनी होती थी। गायक और संगीत के पीछे उनका दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट था। दृश्य और उसकी श्रव्यता पर उनकी पकड़ थी। नाट्यपद नाट्य अभिव्यक्ति का संकेत होते है, जिसका उन्होंने हमेशा पालन किया। उनका जोर नाट्यार्थ, वाक्पटुता और नाट्य संगीत के उचित समन्वन पर था। आचार्य अ. द. वेलणकर के अनुसार, ''जब संगीत नाटक में पद अपनी प्रकृति के अनुसार नाटक में गद्य संवाद का रूप लेते हैं, तब उनकी रचना अभिनय और पात्र के अनुकूल होनी चाहीए और इन पदों का आविष्कार साभिनय गायन के लिए होना चाहिए।'' इस बात की समझ केशवराव के पास थी। उस समय अन्य नाटक मंडलियों में नाटय गायन का अतिरेक होता था। नाट्यपदों को साभिनय गायन के बजाय संगीत कार्यक्रमों की तरह गाया जाता था। अभिनय को कम महत्त्व दिया जाता था। लेकिन केशवराव ने गायन और अभिनय का सुंदर संयोजन किया था। उन्होंने साभिनय अर्थपूर्ण गायन का एक नया आदर्श स्थापित किया था।

❖❖❖

'संयुक्त मानापमान' नाटक में संगीतसूर्य केशवराव भोसले की सुप्रसिद्ध वेशभुषा

स्वाभिमानी मर्द मराठा कलाकार

केशवराव जब स्वदेश हितचिंतक नाटक मंडली में थे तब उन्होंने अपने अभिनय और गायन से दर्शकों को आकर्षित किया था। उनके कारण यह नाटक मंडली न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध हुई, बल्कि उसने अपार लोकप्रियता भी प्राप्त की। केशवराव भोसले इस मंडली का हुकुम का इक्का बन गए थे। सभी नाटक मंडलियों में इसी बात का डर बैठ गया था, जिसके कारण केशवराव को स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली से अलग करने के कई प्रयास किए गए थे। किर्लोस्कर नाटक मंडली ने भी उन्हें तरह-तरह के प्रलोभन दिए थे। कुल मिलाकर इस स्थिति को लेकर मंडली के मालिक जनुभाऊ निमकर भी चिंतित थे। जब उनकी मंडली नागपुर दौरे पर थी, तभी किर्लोस्कर कंपनी के शंकरराव मुजुमदार वहां पहुंचे। जनुभाऊ ने जैसे ही यह खबर सुनी, उन्होंने नागपुर का नाटक दौरा रद्द कर दिया। वे तुरंत अपने साथ केशवराव को लेकर कोल्हापुर लौट गए। वे किसी अन्य नाटक मंडली के सदस्य को केशवराव से मिलने नहीं देते थे। जनुभाऊ ने उनपर कड़ी नजर

रखी थी ताकि वे किसी अन्य नाटक मंडली के संपर्क में न आएं। लेकिन एक दिन केशवराव ने इस गुलामी के खिलाफ, एकाधिकारशाह वृत्ति के खिलाफ, तानाशाही के खिलाफ विद्रोह किया और उन्होंने हुबली जाकर वहाँ अपने भाई दत्तोबा के साथ अपनी ललितकलादर्श नाटक मंडली की स्थापना की। केशवराव की अनुपस्थिति में स्वदेशी हितचिंतक मंडली का शारदा नाटक नहीं चला। विष्णुपंत पागनीस ने शारदा की भूमिका निभाने की कोशिश की लेकिन दर्शकों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। जनुभाऊ ने केशवराव से माफी मांगी और उन्हे मंडली में लौटने का अनुरोध किया, लेकिन स्वाभिमानी स्वभाव के इस मर्द मराठा कलाकार ने समझौता करने से विनम्रतापूर्वक इन्कार कर दिया। मामा वरेरकर ने यह सारा इतिहास विस्तार से लिखा है। केशवराव का गायन, उनका अभिनय कौशल, गुलामगिरी, तानाशाही के प्रति उनका आक्रोश और कुछ नया करने की उनकी दृढ़ इच्छा आदि उनके स्वभाव में होनेवाली विशेषता बहुत ही उल्लेखनीय है।

उनके स्वाभिमानी वृत्ति के कई किस्से हैं। देशसेवा और मित्रता भाव की भी कई घटनाएँ हैं। ऐसा ही एक किस्सा नाटककार और स्वतंत्रता सेनानी वीर वामनराव जोशी का है। ललित कलादर्श नाटक के लिए नागपुर में रहने के दौरान ब्रिटिश पुलिस वीर वामनराव जोशी को गिरफ्तार करने के लिए उनकी तलाश कर रही थी। पुलिस किसी भी समय मंडली के ठिकाने पर छापा मार सकती थी। मंडली के अन्य साथी डर गए। नाटक मंडली को नुकसान होने के डर से, उनके सहयोगियों ने सुझाव दिया कि वीर वामनराव जोशी, जो मंडली में रह रहे थे, उन्हें कहीं और जाना चाहिए। लेकिन मित्रता और राष्ट्र सेवा के कारण केशवराव ने इस सलाह को ठुकरा दिया। उन्होंने अपने सहयोगियों से कहा, ''मैने कई वर्षो से साडी पहनकर अभिनय किया है इसका मतलब यह नहीं कि मै षंड हूँ। वामनराव की जिम्मेदारी मेरी जिम्मेदारी है। मैं उन्हें अपनी मंडली (बिऱ्हाड) से दूसरी जगह नहीं भेजूगा।'' ऐसी मर्दानी भूमिका उन्होंने अपने पसंदीदा नाटककार के लिए ली थी। जरूरत पड़ने पर कोई भी जोखिम उठाने का साहस उनमें था।

'गोपीचंद' नाटक का मंचन अमरावती में होना तय हुआ था लेकिन अचानक 20-25 कलाकारों ने इसी वक्त नाटक मंडली छोड़ दी थी। नाटक का मंचन होना बंद हो जाएगा ऐसी स्थिति बन गई थी। इसके बाद उन्होंने शेष

सहयोगियों के साथ तत्काल बैठक बुलाई। खाना परोसने से लेकर सफाई करने तक के कामों की जिम्मेदारियाँ सभी को सौंप दी। उनको प्रशिक्षण दिया, खुद ने भी कई जिम्मेदारियाँ उठाई। उस दिन उन्होंने रंगमंच की साफसफाई से लेकर कुर्सियाँ लगाना, दरी बिछाना, पर्दा गिराना, मंच व्यवस्था, वेशभूषा करवाना जैसे सभी काम किए। इस तरह से उन्होंने उस दिन नाटक की एक बहुत ही सुंदर प्रस्तुति दी और उसे सफल भी बनाया। इस तरह की जब भी मंडली पर कोई नौबत आती, तो वे अपनी शूरता और नेतृत्व क्षमता साबित करते थे। जब बड़े कलाकार उपलब्ध नहीं होते थे, तब वे बाल कलाकारों के साथ बालनाट्य की तयारी करते थे। बाल कलाकारों को प्रशिक्षण देते थे। दरअसल ललितकलादर्श नाटक मंडली नए कलाकारों का प्रशिक्षण स्कूल ही था। ऐसे प्रशिक्षित कलाकारों को लालच देकर बहकाने का काम भी अन्य मंडलियो द्वारा किया जाता था। इसके लिए गंधर्व नाटक मंडली भी अपवाद नहीं थी। लेकिन वे ऐसे कलाकारों पर न ही नाराज होते न ही गुस्सा होते थे। वे उनको कहते थे ''महाराज, कहीं भी जाना लेकिन वहाँ ललितकलादर्श का झंडा ऊंचा रखना। नाम कमाओ, पैसा कमाओ, प्रसिद्धि पाओ, यशस्वी हो जाओ, लेकिन ललितकलादर्श के एहसान मत भूलना।'' उनके पास मन की इतनी बड़ी उदारता, दया और परिपक्वता थी।

'संयुक्त मानापमान' और 'संयुक्त सौभद्र' नाटकों के अधिक से अधिक मंचन हो और मराठी रंगमंच के लिए बेहतर दिन आ जाए, यह उनकी इच्छा थी। केशवराव अभिनय और गायन में बालगंधर्वो को भी पीछे छोड देते थे। इसलिए बालगंधर्व के गुरू तथा सहयोगियों ने उन्हें केशवराव के साथ नाटक का संयुक्त मंचन करने से मना किया था। जैसे ही केशवराव को इस बात का पता चला उन्होंने बालगंधर्व को संदेश भेजकर कहा, ''यदि आपको और आपके साथियों को ऐसा लगता है, तो में धैर्यधर की भूमिका छोड़ने के लिए तैयार हूं। मैं कोई भी दुसरी गौण भूमिका करू लुंगा।'' लेकिन अंत में गंधर्व मंडली ने इस प्रस्ताव को भी स्वीकार नहीं किया। नतिजा यह हुआ कि, आगे 'संयुक्त प्रयोग' नहीं हुए। केशवराव का यह बड़प्पन, समझदारी, उदारता और उनकी नाटक के प्रति विद्यमान निष्ठा का प्रमाण है। उनकी कला और दर्शकों के प्रति जो प्रतिबद्धता थी, उसे वे अग्रक्रम देते थे। रंगमंच उनके लिए सर्वोपरी था। इतने वे रंगमंच से समर्पित और प्रतिबद्ध थे।

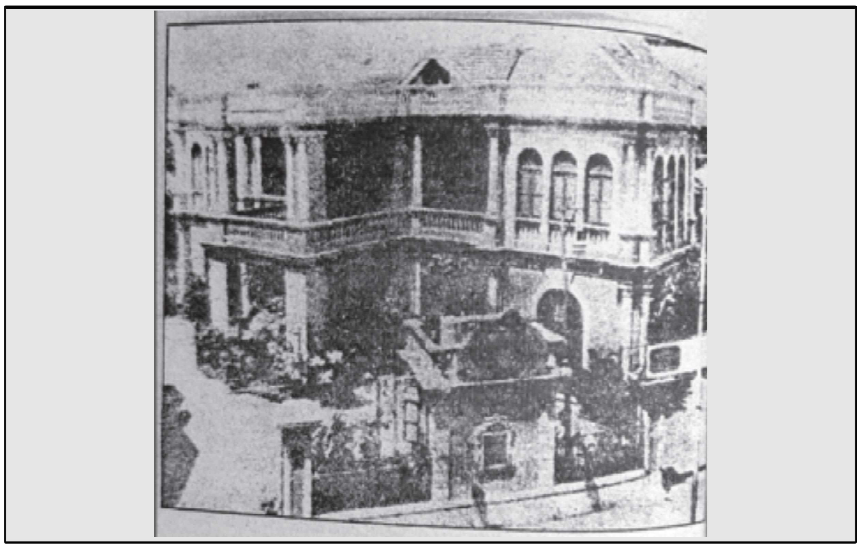

मुंबई के ग्रांटरोड में स्थित बालीवाला ग्रैंड थिएटर जहाँ 1921 में 'संयुक्त मानपनान' का मंचन हुआ था. जिसमें केशवराव ने धैर्यधर और बालगंधर्व ने भामिनी की भूमिका निभाई थी।

संगीतसूर्य केशवराव की प्रयोगधर्मिता

नवीनता और प्रायोगिकता के प्रति रूझान केशवराव की मुख्य विशेषता थी। इसलिए उनके प्रत्येक मंचन में नवीनता थी। उन्होंने पारंपरिक परिवेश से परे जाकर 'ललितकलादर्श' के माध्यम से 'यथार्थवादी मंचसज्जा'' की शुरूआत की। उन्होंने बौद्धकालीन चित्रकला, शिल्पकला पध्दति, और तकनीक का इस्तेमाल किया। उन्होंने 'शहा-शिवाजी' नाटक के माध्यम से संचालित करने योग्य और सुसंगत बॉक्स सेट तथा फ्लैट सीन का भी सबसे पहले उपयोग किया। मामा वरेरकर पर इब्सेनी नाट्यतंत्र का प्रभाव था। उसका उपयोग करते हुए ललितकलादर्श के नाटकों में उन्होंने इब्सेनी नाट्य शैली और तकनीक का स्वीकार किया। इसके लिए वरेरकर के कई नाटक ललितकलादर्श के माध्यम से सामने लाए। इस तरह से

आधुनिक मराठी रंगमंच के विकास में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। केवल मनोरंजन ही नहीं बल्कि नाटक के माध्यम से उद्‌बोधन–प्रबोधन भी होना चाहिए, यह भूमिका आग्रह के साथ नाटककारों के सामने वे रखते थे। उसी तरह के नाटक लिखवाते या ऐसी विचारधारा रखनेवाले नाटककार की खोज करते। प्रखर देशभक्ती के प्रतीक वीर वामनराव जोशी के भाषणों को सुनकर उसी आशय के नाटक लिखने पर जोर उन्होंने दिया। वामनराव जोशी के नाटक 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' ने कई कीर्तिमान स्थापित किए और देशभक्ती की भावना को भी जागृत किया। नाटक के माध्यम से स्वतंत्रता, स्वाभिमान और देशभक्ती का दर्शन उन्होंने कराया।

ललितकलादर्श नाटक मंडली की स्थापना होने के बाद 'शारदा' नाटक की अनुमति के लिए कोर्ट कचहरी के चक्कर उन्हें लगाने पड़े थे। यह मुकदमा खुद मशहूर नाटककार गोविंद बल्लाल देवल ने केशवराव पर चलाया था। इसी कारण वे बहुत ही परेशान हो गए थे। जैसे ही उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि 'ललितकलादर्श' के मुल उद्देश्यों कों ठेंस पहुँच रही है, उस समय उन्होंने देवल से माफी मांगते हुए यह मामला कोर्ट के बाहर ही सुलझा लिया। क्योंकि वे व्यवहारिकता से रूबरू थे और उनको इस बात की भी समझ थी कि कचहरी के चक्कर में फँस गए तो अन्य नाटक करना भी संभव नहीं हो पाएगा। मूलत: उनके मन में नाटकीय व्यवहार की प्रामणिकता थी। नाटक व्यवसाय कैसे करना है इसकी समझ और अनुभव भी उनके पास था। आज के बिजनेस लैंग्वेज में जिसे हम 'मार्केटिंग', बिजनेस प्रमोशन, प्रोडक्ट सेलेबल मेकिंग, 'पैकेजिंग', एडवर्टाइजिंग आदि कहते हैं, इसका मतलब वे उस समय भी जानते थे। वे इसका महत्व और आवश्यकता भी बखुबी समझते थे। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ललितकलादर्श और केशवराव को आज की भाषा में 'ब्रांड नेम' बनाया था। वे व्यापार का गणित जानते थे। उन्होंने दर्शकों की पसंद, उनकी मानसिकता का भी अच्छा अध्ययन किया था। इसी कारण वे कुशल संगठक, समन्वयक, प्रबंधक, मालिक, भागीदार, कुशल प्रशासक के रूप में सफल हुए। वेशभूषा की अतिरिक्त लागत से बचने और गुणवत्तापूर्ण पोशाक सामग्री प्राप्त करने के लिए मंडली में ही 'मेकअप सामग्री' बनाने की व्यवस्था की। इसके लिए उन्होंने मंडली के रंगभूषाकार को प्रशिक्षण दिया। इसी

तरह के प्रयास करते रहने तथा अपनी एक 'जुगाड' कार्यपद्धति भी विकसित थी। कुल मिलाकर इस प्रकार के अनूठे काम अन्य नाटक मंडली के मालिक या अभिनेता ने कभी नहीं किए हैं, इसके संदर्भ भी इतिहास में कहीं नहीं मिलते हैं।

केशवराव बहुत ही मिलनसार स्वभाव के थे। भाई दत्तोबा और नारायण के साथ-साथ बहन छायाक्का का भी अंत तक उन्होंने साथ दिया। लेकिन रिश्तों से परे जाकर अपने व्यवहार और नैतिकता को भी बरकरार रखा। 'ललितकलादर्श' की विरासत बापूसाहेब पेंढारकर को सौंपते हुए उन्होंने अपने 'रक्त सम्बन्ध' से अधिक नाट्यधर्म के सम्बन्ध को महत्व दिया। उनके पास इतनी क्षमता, नैतिकता, व्यावहारिकता और निर्लेप भाव था।

एक नाटककार, निर्देशक, प्रशिक्षक एवं मास्टर के रूप में उनके काम को नजरअंदाज नही किया जा सकता है। आज की भाषा में हम जिन्हें 'स्टेज डिजाइनर' आर्ट डायरेक्टर', स्टेज मैनेजर' और 'कास्टिंग डायरेक्टर कहते हैं, ये सभी जिम्मेदारियाँ वे उस समय भी बखूबी निभाते थे। नाटक का संपादन करने में वे बहुत ही कुशल थे। एक नाटक, एक निर्देशक उनके व्यक्तित्व में था। वे नाटक का पूर्वाभ्यास करवाते थे, नए कलाकारों को अभिनव और गायन का पाठ पढ़ाते थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी रंगकर्मी थे। नाटक कैसा होना चाहिए, उसका कैसे मंचन होना चाहिए? यह कला उनको अपने अनुभव से अवगत हुई थी। नाटक लिखते समय वे नाटककार को उपयोगी निर्देश भी देते थे और आवश्यक परिवर्तन भी करवाते थे। वे नाटक की रूपरेखा पहले ही तैयार करते थे। इस संबंध में मामा वरेरकर ने भी लिखा है। वे कहते हैं, ''केशवराव ने सार्वजनिक लोकप्रियता पर संदेह पैदा करने वाले पतित परावर्तन जैसे विषय पर एक नाटक हाथ में लेकर मेरी इच्छा के अनुसार उचित सजावट और वेशभूषा का संयोजन करने के लिए कड़ी मेहनत करने हुए, नाटक को सुंदर तरीके से रंगमंच पर लाकर उसे सफल बनाया। खुद नाटक के प्रसंगों से संबंधित फोटो का चुनाव किया, इसके लिए मैं ललितकलादर्श नाटक मंडली के मालिक जाने-माने अभिनेता केशवराव भोसले के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। ''मामा वरेरकर के इस वक्तव्य से उनके नाट्यात्मक बहुमुखी प्रतिभा का दर्शन होता है।

❖❖❖

स्त्री वेशभूषा में संगीतसर्य केशवराव भोसले (सन 1913)

अंधविश्वास का विरोध

लेखक-निर्माता, लेखक-निर्देशक का एक अच्छा 'अटूट रिश्ता' (असोशिएशन) केशवराव ने स्थापित किया था। उसी तरह केशवराव ने हीराबाई पेडनेकर, य. ना. टिपनिस के साथ चर्चा करके नाटक लेखन में अनुकूल परिवर्तन किए थे। डॉ. वि. भा. देशपांडे कहते है, ''जिस तरह किसी नाटक कंपनी को अच्छा नाटककार आवश्यक होता है, उसी प्रकार से वरेरकर के रूप में ललितकलादर्श को एक अच्छा नाटककार मिला। साथ ही नाटककारों को एक अच्छी संस्था की जरूरत होती है। प्रयोगशील वृत्ति और दृष्टिकोण के निर्देशक और निर्माता की आवश्यकता होती है। वे सारे गुण केशवराव में थे। उत्कृष्ट नेपथ्यकार और

संगीतकार के रूप में भी वे प्रतिभाशाली थे। दूरदर्शी व्यक्तित्व, कौशल और सजनशील कार्य तथा सटीक संयोजन के उदाहरण के रूप में केशवराव भोसले और उनकी 'ललितकलादर्श' नाटक मंडली को हम देख सकते है।'' इस तरह हम केशवराव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के उल्लेखनीय पहलू को देख सकते हैं।

केशवराव धर्मपरायण थे, लेकिन अंधविश्वासी बिलकुल नहीं थे। उन पर कई संकट आए, लेकिन उन्होंने कभी अशुभ-अमंगल की परवाह नहीं की। न ही कभी शांतिपाठ, होम हवन किया, न ही कभी मन्नते माँगी। उनके अंधविश्वास विराधी स्वभाव और प्रवृत्ति पर डॉ. राजीव चव्हाण ने संगीतसूर्य पर अपनी संपादित पुस्तक में प्रकाश डाला है, ''ललितकलादर्श की स्थापना के बाद विभिन्न स्थानों पर उनके नाटकों की प्रस्तुतियां होने लगी। उस समय लगातार कई हादसे होते रहे। हुबली के पहले ही मंचन में दर्शनी भाग (विंग) को आग लग गई थी। लेकिन सभी कलाकारों ने मिलकर तुरंत आग बुझा दी और उसके बाद केशवराव ने तुरंत प्रयोग शुरू कर दिया। कोल्हापुर में दर्शनी परदा छोडते समय रस्सी छुट गई और मंच पर काम कर रहे एक सहायक के सिर पर पर्दा गिर गया। उस हादसें में वह घायल हुआ। उन्होंने तुरंत इस मामले को निपटाकर मंचन फिर से शुरू कर दिया। अगले दिन बारिश की वजह से मंचन नहीं हुआ। भारी बारिश ने मंचन को रोक दिया। लेकिन वे निराश नहीं हुए। 'शो मस्ट गो ऑन' यह उनकी प्रकृति और प्रवृत्ति भी थी।'' कठिन स्थितियों से गुजरते हुए भी रंगमंच के क्रिया-कलापों को उन्होंने अंधविश्वास के कारण कभी रूकने नहीं दिया।

कोल्हापुर में एक मंचन में, दर्शकों की ज्यादा भीड़ के कारण गैलरी ढह गई थी। लेकिन स्थिति को व्यवस्थित तरीके से संभालते हुए केशवराव ने पुन: प्रयोग शुरू किया। सांगली में नाटक के पहले ही प्रयोग के दौरान किशाबाबू पेटकर नामक कलाकार के पागल माँ ने थिएटर के पास के एक कुएं में छलांग लगा दी। लोगों ने उसे जिंदा बाहर निकाला। स्थिति सामान्य होते ही कुछ देर बाद नाटक शुरू किया। निपानी गाँव में प्रयोग के दौरान थिएटर में आग लग गई। लेकिन उन्होंने तुरंत आग बुझाई और 'शो मस्ट गो ऑन' किया। अमरावती में भी इसी तरह की दो

घटनाएँ हुए 'गोपीचंद' नाटक के समय 20-25 कलाकार अचानक मंडली छोडकर चले गए, लेकिन उन्होने अपनी चतुराई से इस पर काबू पाकर नाटक की सफल प्रस्तुति दी। एक बार उनकी पत्नी सावित्री की प्लेग से मृत्यु हो गई। नाटक 'संगीत सौभद्र' की घोषणा हुई थी। सभी ने केशवराव से प्रयोग रद्द करने की विनती की, लेकिन उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। दाह संस्कार के तुरंत बाद उन्होंने प्रयोग की व्यवस्था की और नियोजित समय पर प्रयोग शुरू किया। इस संदर्भ में प्रबोधनकार ठाकरे अपने संस्मरणों में लिखते हैं,''केशवराव इन सब दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के संदर्भ में अपना स्पष्टीकरण भी देते थे– ''ऐसी बाधाएँ आती रहती हैं और आनी भी चाहिए क्योंकि वह जीवन की एक कसौटी होती हैं और ऐसी कसौटी के लिए ललितकलादर्श ने तैयार रहना चाहिए।'' ऐसी घटनाएँ, दुर्घटना होने के बाद भी संकटमोचन के लिए उनके द्वारा कभी कोई विशेष धार्मिक अनुष्ठान, कोई नामजप या पूजा की गई हो इसके कोई उदाहरण नहीं मिलतें हैं।

❖❖❖

जनुभाऊ निमकर के साथ दत्तोबा और केशवराव

नाटक 'सन्याशाचा संसार' में दाई ओर से अंतिम स्थान पर केशवराव भोसले, उनके साथ बापूराव पेंढारकर, माधवराव वालावलकर

नए पाश्चात्य नाट्यतंत्र का प्रयोग

''**सं**गीतसूर्य केशवराव भोसले सही मायने में केवल आधुनिक मराठी रंगमंच के ही नहीं बल्कि आधुनिक भारतीय रंगमंच के भी शिल्पकार है। केशवराव गायक, अभिनेता, निर्माता, निर्देशक, प्रयोगशील प्रयोक्ता, उद्यमी सूत्रधार, सभी गुणों से भरपूर, बहुमुखी रंगकर्मी थे।'' इन शब्दों में उनका वर्णन किया जा सकता है। 1908 में उनके द्वारा स्थापित की गई 'ललितकलादर्श' नाटक संस्था आज भी कार्य कर रही है। लोगों द्वारा ही उन्हें संगीतसूर्य की उपाधि प्रदान की गई। संघर्ष के दिनों में भी उन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से एकलव्य की तरह अपने अस्तित्व को साबित किया। उनके इन विशेषताओं के भी कई पहलू हैं। महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक यह है कि उन्होंने नए पश्चिमी नाट्ययतंत्र और नाट्यतत्व को अपनाकर रंगमंच को एक नई दिशा दी है।

हालांकी संगीतसूर्य केशवराव भोसले वास्तव में नाटककार नही थे, लेकिन मंचन आलेख (Production Script) बनाने में वे माहिर थे। एक नाटककार के रूप में, उन्होंने नाटक की प्रभावशीलता और उसका प्रयोग करने के लिए वे अपनी स्वयं का मंचन आलेख बनाते थे। नाटक के मंचन संदर्भ में उसका उपयोग करते थे। आत्माराम दोंदे (ऋतुध्वज मदालसा), मामा वरेरकर (सन्याशाचा संसार), हीराबाई पेडनेकर (दामिनी), वीर वामनराव जोशी (राक्षसी महत्वाकांक्षा), य. ना. टिपनिस (शाह-शिवाजी) आदि ने भी कई बार इसे कबूल किया है। निर्माता-निर्देशक और नाटककार की दृष्टी से एकअच्छी प्रस्तुति के लिए उत्कृष्ट और सृजनात्मक संयोजन (Creative Association) केशवराव भोसले के पास था, इसलीए वे नाटक में कई प्रभावी बदलावों का सुझाव देते थे और नाटक के अनुरूप बदलाव भी करते थे। यंहा तक कि नाटककार भी उनके पेशेवर अनुभव, अधिकार और कौशल को ध्यान में रखते हुए खुशी-खुशी बदलाव करने देते थे। इसके अलावा, केशवराव नाटककार की पंसद और नापसंद, उनकी निपुणता, विशेषता और उनके सोचने के तरीके को अच्छी तरह से जानते थे। समग्र रूप से इस संयोजन में सृजनात्मकता एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थी। उन्होंने नाटककारों की क्षमता का सकारात्मक तरीके से उपयोग किया। मामा वरेरकर ललितकलादर्श नाटक मंडली के प्रमुख नाटककार थे। उनपर विश्व प्रसिध्द नाटककार हेन्रिक इब्सेन का बहुत बडा प्रभाव था। वरेरकर अपने नाटक लेखन में हमेशा इब्सेन के नाट्यतत्व, नाट्यतंत्र का प्रयोग करते थे। इसी वजह से केशवराव भी इब्सेन से परिचित हुए थे। उनको भी वह नाटककार बहुत पसंद आया, इसलिए केशवराव ने अपने नाटककार के माध्यम से इब्सेन की नई नाटकीयता, नाट्यतंत्र और नाट्यतत्व को अपनाया था।

वीर वामनराव जोशी एक समाजसुधारक और स्वतंत्रता सेनानी थे। उनके इस प्रखर देशभक्ति का उनके नाटक लेखन पर प्रभाव था। साथ ही वे एंटोनिन आर्तो के 'थिएटर ऑफ द क्रुएल्टी' नाट्यविचार से भी प्रभावित हुए थे। उन्होने इसी विचार पर आधारित 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' नाटक का लेखन किया था। उसमें 'थिएटर ऑफ द क्रुएल्टी' के नाट्यतत्त्व और नाट्यतंत्र उपयोग किया था। वीर

वामनराव जोशी के नाटको के संदर्भ में 'नाटक : समीक्षा व संहिता' इस शोध ग्रंथ में डॉ. मधुकर आष्टिकर कहते हैं कि ''एंटोनिन आतों के नाट्यशैली की शुरूआत वीर वामनराव जोशी के नाटक 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' से हुई। इस संबंध में, भारत में 'क्रुएल्टी नाट्यतत्त्व' का यह पहला नाटक साबित होता है और इसका प्रयोग करनेवाली पहली नाटक मंडली संगीतसूर्य केशवराव भोसले की 'ललितकलादर्श' नाटक मंडली है। ललितकलादर्श का यह पहला सफल नाटक था। इस नाटक के मंचन के संदर्भ में दर्ज किया गया है कि उस अवधि के दौरान इस नाटक के सौ से अधिक प्रयोग हुए थे। केशवराव को यह नाटक इतना पसंद आया था कि उन्होंने इसका उर्दू में भी अनुवाद करवाया था और उसके कई मंचन भी किए। इस नाटक की सफलत्ता का श्रेय वीर वामनराव के इस नाटक को ही जाता है लेकिन असली श्रेयता केशवराव जैसे दूरदर्शी निर्माता, निर्देशक को अधिक ही जाता है। वामनराव के सानिध्य में, केशवराव 'थिएटर ऑफ दी क्रुएल्टी' के नाट्यतत्व के साथ परिचित हुए थे और केशवराव ने इसका उपयोग भी गंभीरता से किया था। क्यों की पाश्यात्य नाट्य तकनीक की खुबियों को अच्छी तरह समझत थे।

नाटककार और निर्माता-निर्देशक के बिच के सहसंबंध का यह एक रचनात्मक उदाहरण है। क्रूरता की नाट्यात्मक परिसीमाओं को केशवराव ने अपने निर्देशन और अपने प्रतिरोधी पात्रों के अभिनय के माध्यम से दिखाया। इसमें उन्होंने मृणालिनी की अविस्मरणीय भूमिका निभाई थी। सत्ता की प्यासी, राक्षसी महत्वाकांक्षा को धारण करनेवाली मदालसा के क्रूरता का मृणालिनी शिकार बनती है। इस तरह से केशवराव ने अपने नाटकों के माध्यम से दर्शकों को पाश्चात्य 'नवनाट्य तंत्र' से परिचित कराया। केशवराव द्वारा निभाई गई वीर नायिका मृणालिनी की भूमिका को उस समय बहुत लोकप्रियता मिली थी।

उन्होंने इब्सेनियन (सामाजिक सुधारवादी नाट्यतत्व) और क्रुएल्टी (जीवन में क्रुरता और हिंसा का नाटकीय दर्शन) रंगमंच के नाट्यतंत्र का प्रयोग किया। इसी दौरान मुंबई, पुणे के साथ-साथ पूरे भारत में पारसी थिएटर आपनी लोकप्रीयता की चरम पर था। उसका प्रभाव केशवराव पर भी पड़ा। खास बात यह है कि इस

थिएटर का जन्म एलिजाबेथन अर्थात शेक्सपिरियन थिएटर के प्रभाव के कारण और अंग्रेजों के सनिध्य में हुआ था। मराठी रंगमंच पर इन दोनों थिएटरों का प्रभाव बुकिश नाटक परंपरा से शुरू हुआ था। केशवराव के समय में आगा हश्र कश्मीरी एक महान नाटककार थे। वे एक नाटककार के रूप में भी लोकप्रिय थे। उस समय में उन्हें भारतीय शेक्सपियर कहा जाता था। वे शेक्सपियर के नाटक तथा शेक्सपिरियन तकनीक के नाटकों का मंचन करते थे। इसी का आधार लेकर केशवराव ने शेक्सपियर के नाट्यतंत्र में हिंदी मिश्रित उर्दू भाषा में इब्सेनियन नाट्यतत्व का सबसे अच्छा उदाहरण 'राक्षसी महत्वाकांक्षा' नाटक है, जिसे केशवराव ने 'कमाले हिर्स' के नाम से प्रस्तुत किया था, जो काफी सफल रहा था।

इस नाटक के माध्यम से यह कहा जा सकता है की केशवराव ने निश्चित रूप से, उनके स्वभाव और कार्यशैली को देखते हुए पारसी नाटकों का अध्ययन किया था। उस समय, आगा हश्र कश्मीरी के शेक्सपियर के अनुदित नाटक सफेद खून (किंग लियर), ख्वाब ऐ हस्ती (किंग जॉन), सैद ऐ हवास (विंटर्स टेल) खुबसुरत बला (मैकबेथ) और शेक्सपियरियन शैली के भारतीय नाटक भारतीबाला, रूस्तम ऐ सोहराब, यहुदी की लड़की आदि नाटक काफी चर्चित रहे थे। केशवराव 'खुबसूरत बला' नाटक पर बहुत ही मोहित हो गए थे। 'कमाले हिर्स' नाटक भी इस नाटक से प्रेरित था। शायद उन्हें विशेष रूप से उर्दू भाषा की नजाकत और रूतबा पसंद आया होगा। बेशक, जब उन्होंने इन पारसी नाटकों को देखा तो वे पारसी शैली में उर्दू नाटक को करने के लिए प्रेरित हुए थे। इसके लिए उन्होंने उर्दू–हिंदी का अध्ययन किया। उनकी संवाद शैली, गीत–संगीत गायन का अनुकरण किया। उसमें अपनी शैली जोड़कर भारतीय रंगमंच में एक नया अध्याय जोडा। इस दृष्टी से भी संगीतसूर्य केशवराव भोसले आधुनिक भारतीय रंगमंच के रचनाकार, शिल्पकार और उद्‌गाता है।

इसी दौरान फिल्म का दौर शुरू हुआ उसका आकर्षण बढ़ता जा रहा था। इसे देखकर, केशवराव ने नई परिकल्पना के साथ भी प्रोजेक्टर का उपयोग करते हुए नेपथ्य कि लिए रेल्वे स्टेशन और रेल्वे प्लेटफॉर्म के दृश्यों का प्रयोग किया।

कहने का तात्पर्य यह है कि वे उस समय भी विशेष रूप से नवीनतम तकनीक का उपयोग करते थे। अर्थात उन्होंने रंगमंच पर समय के साथ बदलाव और कई नए प्रयोग किए। समय के साथ नई अभिरूचि पैदा करने का प्रयास किया। नए नाट्यतंत्र, नाट्यतत्व का स्वागत किया। उन्होंने नाटक निर्माण का एक नया 'ड्राफ्ट' और एक नया 'क्राफ्ट' भी स्थापित किया। इस दृष्टी से केशवराव का पुरा करियर अचम्भित करता है। लेकिन यह सच है कि आज तक उनके व्यक्तित्व और कृतित्त्व का सही मूल्यांकन नहीं हुआ है। वे केवल आधुनिक मराठी रंगमंच के ही नहीं अपितु आधुनिक भारतीय रंगमंच के भी शिल्पकार हैं। पारसी, हिंदी रंगमंच के परिप्रेक्ष्य में उनका यह कार्य क्रांतिकारक है। असल में केवल मराठी, केवल संगीत ही नहीं अपितु समग्र भारतीय रंगमंच में आधुनिकता लानेवाले वे पहले रंगकर्मी थे। इसलिए उन्हे इस दृष्टी से शिल्पकार अथवा जनक कहा जाना अधिक तर्कसंगत लगता है।

❖❖❖

केशवराव के सहयोगी नानासाहेब चाफेकर के साथ महिला भूमिका में केशवराव

'संयुक्त मानापमान' नाटक में बालगंधर्व के साथ केशवराव भोसले

आधुनिक भारतीय रंगमंच के पुरोधा

संगीतसूर्य केशवराव भोसले ने अपने 27 साल के रंगमंचीय काल में अपने कर्तृत्व के बल पर अमिट इतिहास बनाया। चार साल की उम्र से, स्वदेशी हितचिंतक नाटक मंडली में उनका अभिनय प्रशिक्षण और संगीत प्रशिक्षण शुरू हुआ। मंडली के मालिक और उस समय के एक प्रसिध्द अभिनेता जनुभाऊ निमकर

के मार्गदर्शन में उन्होंने अपना प्रशिक्षण शुरू किया। प्रसिध्द गायक और संगीत शिक्षक रामकृष्णबुवा वझे उनके पहले संगीत गुरू थे। 31 वर्षो की अवधि में उन्होंने 31 नाटकों में लगभग 52 भूमिकाएँ सफलतापूर्वक निभाई हैं। उन्होंने 18 साल की उम्र में 'ललितकलादर्श नाटक मंडली' की स्थापना करके एक गौरवशाली युग की शुरूआत की। मराठी पारंपरिक रंगमंच के दुष्टचक्र से निकालकर आधुनिक मराठी और आधुनिक भारतीय रंगमंच की नींव रखी। भारतीय रंगमंच को यथार्थवादी रूप देने का श्रेय भी उन्हीं को देना होगा। गुणग्राहकता, प्रयोगशीलता, जोखिम उठाने की आदत, रंगमंच से संबंधित दुरदर्शिता, जिद, समर्पण, त्याग, परिश्रम, आत्म-सम्मान, परोपकारी दृष्टिकोण, संवेदनशीलता, परिपक्वता, वैचारीकता, निडरता, उदारता, विद्वान अभ्यासक, शोधकर्ता, सामाजिक जागरूकता, प्रभावी संगठक और नेतृत्व आदि गुण उनमें अनुभवोंसे पैदा होते गए। इन अनुभवों ने उन्हें अधिक समृध्द और संपन्न बनाया। रंगमंच की एक व्यापक दृष्टी को उन्होंने अपनाया और उसे विकसित किया। एक शिल्पकार की भाँती आधुनिक मराठी रंगमंच को उन्होंने रचा और गढ़ा हैं।

एक कलाकार के रूप में, वे खुद की भी अक्सर अग्निपरीक्षा लेते थे। निरंतर आत्मपरीक्षण करने की आदत होने के कारण, वे अपनी गलतियों को तुरंत सुधारते थे। गायन-अभिनय उनका प्रथम और अंतिम प्रेम था। उसी से उनमें रंगमंच के प्रति समर्पण-भाव पैदा हुआ था। फिर भी उन्होंने अपनी व्यावहारिकता को कायम रखा। वे कलंदर वृत्ति के थे, लेकिन वे उसी संकल्प के साथ अनुशासन का पालन भी करते थे। वे सश्रद्ध थे, लेकिन अंधविश्वासी नहीं थे। वे शीघ्रकोपी, स्पष्टोक्ता थे, लेकिन उन्होंने कभी किसी का आजीवन द्वेष नहीं किया और न ही किसी को नुकसान पहुंचाया हालांकि, थिएटर के मामले में वे बहुत गंभीर, अनुशासन प्रिय, सृजनशील और प्रयोगशील थे। वे खाने के बहुत ही शौकीन थे। उन्हें तीखी सब्जी, कोल्हापुरी रस्सा, तली हुई मिर्च बहुत पसंद थी। लेकिन उन्होंने इसका अपने गायन और अभिनय पर कभी असर नहीं होने दिया। केवल राजा और महाराजाओं को नहीं, बल्कि भगवान से भी अधिक उन्होंने लोगों, दर्शकों, प्रशंसकों

को अपना माता-पिता माना। 'राजाश्रय' को अस्वीकार करते हुए 'लोकाश्रय' को प्राथमिकता दी। रंगमंच के लिए अवसर का लाभ उठाना उनको पंसद था। परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हो, वे हार नहीं मानते थे। वे साहस, लगन से उस संकट का सामना करते थे। समय सूचकता, परिस्थिति के अनुसार सतर्क रहना उनके स्वभाव का एक विशेष गुण था।

केशवराव भोसले कई मायनों में अपने समकालीन लोगों से बेहद अलग थे। उनकी विशिष्टता उनके द्वारा रंगमंच के लिए किए गए कार्य से ही स्पष्ट होती है। सहयोगी तत्व और लोकतांत्रिक तरीके से नाटक मंडली का विस्तार करने वाले वे पहले मालिक थे। उन्होंने मूल रूप से 21 मालिकों के साथ ललित कलादर्श नाटक मंडळ की स्थापना की और उसका नेतृत्व भी केशवराव ने किया था। यह उनकी संगठनात्मक शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। किर्लोस्कर, कोल्हटकर, खाडीलकर और गडकरी जैसे प्रस्थापित नाटककारों द्वारा उनके लिए नाटक लिखने से इन्कार करने के बाद उन्होंने नए लेखकों से नाटक लिखवाए। वीर वामनराव जोशी, मामा वरेरकर, हीराबाई पेडनेकर (पहली मराठी महिला नाटककार), धुंडीराज शेंबेकर, कमतनुरकर. य. ना टिपनिस,आत्माराम दोंदे जैसे नए नाटककारों का एक पैनल तैयार किया। बापूराव पेंढारकर, नानासाहेब चाफेकर, रामचंद्र गुलवनी, कृष्णाजी आलतेकर, यशवंत पिंगले, गंगाधर डवरी, गोपाल गुत्तीकर, शंकर चाफेकर जैसे कलाकार तैयार किए। पेंटिंग का व्यवसाय करनेवाले आनंदराव मेस्त्री पेंटर का होशियारी से उपयोग करके नेपथ्य कला में क्रांति ला दी। बाबूराव पेंटर, पु. श्री काले जैसे चित्रकारों का अभिनव पद्धति से उपयोग किया। इन चित्रकारों की मदद से केशवराव ने यथार्थवादी नाटकों के साथ मंच सज्जा की यथार्थवादी कलाशैली का आदर्श स्थपित किया। इस प्रकार की मंच सज्जा अन्य नाटक मंडली ही नहीं बल्कि गंधर्व नाटक मंडली भी नहीं कर सकी थी। कुल मिलाकर उन्होंने समकालीन रंगमंच के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार किए।

रंगमंच पर पहला मखमली परदा (ड्रॉप), यथार्थवादी मंच सज्जा, थिएटर में घड़ी बिठाने तथा तय समय पर नाटक शुरू करने की प्रथा, प्रेक्षकों का आदर-

सम्मान, यांत्रिक बेल का उपयोग, गैसबती का उपयोग, प्रचार की नई पध्दति (हैंडबिल बाँटना), ढिंढोरा पीटकर घोषणा करना, ढोल बजाना, पोस्टर चिपकाना, प्रचार के लिए विशिष्ट शब्दों (टैग लाइन) का उपयोग, विशेष पंक्तियों का उपयोग करना, आज की भाषा में जिसे 'जिंगल' कहा जा सकता है, ऐसे लघु गीतों या नाटकों के गीतों का विज्ञापन के रूप में उपयोग करना। महिला नाटककारों के नाटक का चयन करना, गुरू संस्कार के लिए खुले आम गंडा बांधना, राजाश्रय को नकारते हुए लोकाश्रय का स्वीकार करना, बड़े नाटकों के साथ-साथ बाल प्रेक्षकों के लिए नाटक प्रस्तुत करना, सामाजिक विषयों पर आधारित नाटकों का ही चुनाव करना, नाटक का पर्दा खुलते ही दर्शकों द्वारा ताली बजाने की सहज परंपरा शुरू करना, 'एक-अंक, एक-दृश्य' (इत्सेनी पद्धती) आदि आधुनिक नाट्यतंत्रों को अपनाना, जैसे कितने ही सुधार तथा नविनता का श्रेय संगीतसूर्य केशवराव भोसले को ही देना होगा। जिस तरह से वर्तमान समय में 'एलसीडी स्क्रीन' का प्रयोग रंगमंच पर किया जाता है, उसी तरह से प्रोजेक्टर के द्वारा नाटक के लिए उपयुक्त बैक स्क्रीन पर फिल्मों के अंश को दिखाने का रिकॉर्ड भी केशवराव ने उस समय बनाया था। उन्हें ऐकॉस्टिक (ध्वनि संतुलन) तकनीक का भी विशेष ज्ञान था।

ओपन एयर थिएटर (मुक्ताकाशी थिएटर) में शाहू महाराज के निमंत्रण और व्यवस्था में महल के पास के एक विशेष उद्यान में 'मृच्छकटीक' नाटक के एक सार्वजनिक प्रयोग की प्रस्तुति भी उन्होंने की थी। आज के महानाट्य जैसा ही वहा प्रकार था। उस समय लगभग 25 हजार नाटक प्रेमियों ने इस नाटक का आनंद लिया। 'ओपन एयर थिएटर' में नाटकों की प्रस्तुति करने का श्रेय भी केशवराव को जाता है। आम तौर पर षष्ठब्धी और चंद्रदर्शन समारोह यह कर्तव्य की पूर्ति और कृतित्व का यह समारोह समझा जाता है। लेकिन केवल 23 साल की उम्र में केशवराव को मुंबई में नाटक के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्य के लिए इसी प्रकार के सम्मान से सम्मानित भी किया गया था। सर भालचंद्र भाटवडेकर, सेठ गोविंददास बनातवाले, सर हॉर्निमन, डॉ. आजगांवकर, डॉ. भडकमकर, पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर और गजेटियर ऑफ इंडिया के संपादक गॉर्डन सर ने केशवराव को सार्वजनिक रूप से

सम्मानित किया था। इस मौके पर उन्हें बड़ी रकम की थैली प्रदान की गई थी। स्वागत समारोह में उन्होंने अपने गुरू जांभेकर बुवा को मंच पर बुलावा उन्हें वह थैली वहीं भेट कर दी थी। शाहु महाराज की विचारधारा के अनुसार नाटककार मामा वरेरकर की सहायता से उन्होंने 'शंकराचार्य लोकनियुक्त हो!'' यह प्रभावशाली संवाद अपने नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया था। उस नाटक का नाम 'सन्याशाचा संसार' था। इस मंचन को देखने के लिए शाहू महाराज भी विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्हें यह नाटक और संवाद इतने पंसद आया कि जब नाटक चल रहा था, तब उन्होंने मंच पर जाकर डेविड की भूमिका निभानेवाले केशवराव की प्रशंसा की और उन्हें गले लगाया। दर्शकों ने तालियों की गडगडाहट में इस दृश्य को अपने मन में जतन किया। बहुत कम रंगकर्मी को ऐसे अवसर मिल पाते हैं। यहां तो केशवराव ने एक नया इतिहास रच दिया। ऐसी रंगमंचीय क्रांति के वे पुरोध रहे।

❖❖❖

नाटक 'शहा – शिवाजी' में शिवाजी महाराज की भूमिका में केशवराव भोसले

'हाच मुलाचा बाप' नाटक में गुलाब की भूमिका में केशवराव भोसले

बहुमुखी प्रतिभा के धनी संगीतसूर्य

बालगंधर्व पर उस समय 1 लाख 84 हजार रूपयों का कर्ज हुआ था। गंधर्व कंपनी कर्ज के बोझ तले दबी थी। जैसे ही केशवराव को इस बात का पता चला, उन्होंने बालगंधर्व से मुलाकात की। उन्होंने एक संयुक्त नाटक का प्रस्ताव उनके सामने रखा। इसीसे ऐतिहासिक और कीर्तिमान स्थापित करनेवाले 'संयुक्त मानापमान' नाटक का जन्म हुआ। प्रतिद्वंद्वी होते हुए भी उन्होंने बालगंधर्व के प्रति अपना आदर और स्नेह अंतिम क्षण तक बनाये रखा। अपनी ललितकलादर्श नाटक

मंडली को आर्थिक तंगी से उबारने के लिए उन्हें कर्ज लेना पडा। लेकिन चुकाने की चिंता में उन्होंने कभी-भी अपने कलाकारों और सहयोगियों को परेशान नहीं किया। कर्ज चुकाने और फिर कभी उधार न लेने का अपना वादा उन्होंने अंत तक निभाया। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने ललितकलादर्श नाटक मंडली को अच्छी स्थिति में ही बापूसाहेब पेंढारकर को सौंप दिया। अपने रिश्तेंदार, उत्तराधिकारी होने के बावजूद, उन्होंने ललितकलादर्श के उत्तराधिकारी के रूप में बापूसाहब पेंढारकर को चुना, इसका विशेष रूप से उल्लेख करना होगा। छह महीने की लंबी अवधि के लिए मुंबई के प्रमुख 'बॉम्बे थिएटर' को किराए पर लेने का रिकॉर्ड भी उनके ही नाम पर है। उन्होंने रंगमंच में पारंपरिक वाद्यों के साथ-साथ तंतुवाद्य (तंतकार) का सबसे पहले प्रयोग किया। नाटक का मंचन करने के लिए यात्रा हेतु विशेष ट्रेनों की बुकिंग करने की प्रथा भी उन्होंने ही शुरू की। एक ही नाटक में एक से अधिक या चार-पाँच भूमिकाएँ निभाने का श्रेय भी उन्हें ही दिया जाता है। वेशभूषा के लिए बड़े किनार वाले सरदारी कुलीन वस्त्रों का उपयोग भी उन्होंनें सबसे पहले शुरू किया था।

किर्लोस्कर कंपनी के पास 'मानापमान' नाटक के सर्वाधिकार थे। अधिकार देने की प्रक्रिया शुरू होते ही केशवराव ने एक हजार रूपए में प्रयोग के सारे अधिकार खरीद लिए। उसके बाद आठ दिन में पूरी तैयारी कर बॉम्बे थिएटर में उसकी जबरदस्त प्रस्तुति देकर अपनी जीवटता और निर्णय क्षमता सिद्ध की। खास बात यह है कि जब बालगंधर्व और उनकी गंधर्व नाटक मंडली लोकप्रियता और सफलता के उच्च शिखर पर थे, तब उन्होंने ये सभी करतब दिखाए। ऐसे कई रिकॉर्ड संगीतसुर्य केशवराव भोसले के नाम हैं । नाटक के बोर्ड पर एक सफल, लोकप्रिय और प्रमुख अभिनेता का नाम लिखने की परंपरा थी और केशवराव को यह सौभाग्य दस साल की उम्र में मिला था। 'शारदा' नाटक की बुकिंग 'वंडर रॉय' कहे जानेवाले केशवराव के नाम से होती थी। मराठी नाटक के साथ-साथ उन्होंने पारसी नाटक मंडली की तरह उर्दू नाटक 'कमाले हिर्स' का भी मंचन उस समय प्रस्तुत किया था। इसके लिए उन्होंने अपने पसंदीदा नाटक 'राक्षसी महत्चकांक्षा' का विशेष रूप से

अनुवाद करवा लिया था। एक गायक और अभिनेता के रूप में वे मराठी के साथ-साथ हिंदी, उर्दू और संस्कृत भाषा पर भी अधिकार रखते थे। जबकि केशवराव ने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं की थी। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में अपने आपको तैयार किया। विपरीत परिस्थिति में भी उन्होंने अपने अभिनय और गायन कला के कौशल का लोहा दिग्गेजों से मनवाया। उन्होंने गुणवत्ता को हमेशा महत्वपूर्ण माना था। उसके साथ कभी भी समझौता नहीं किया। 'बालगंधर्व युग' में 'संयुक्त मानापमान' नाटक में उन्होंने अपनी लगन और मेहनत के बल पर गायन और अभिनय में बालगंधर्व को भी पीछे छोड़ दिया था। नाटक के मंचन के समय उनको हताश करने आए दर्शकों को वे अपने गायन और अभिनय कला से मंत्रमुग्ध करते थे। एक नाटक के मंचन के बाद, दर्शकों ने सामूहिक रूप से उन्हें 'केशवराव नमः' कहते हुए 'संगीतसूर्य' कि उपाधि प्रदान की और एक इतिहास रच दिया।

❖❖❖

शहाजी राजे की भूमिका में अग्रज बंधू दत्रोबा भोसले

नाटक 'शहा–शहाजी' में
शिवाजी राजा की भूमिका में केशवराव भोसले

अंतिम नाटक 'शहा शिवाजी'

य. ना. टिपनिस लिखित 'शहा – शिवाजी' नाटक केशवराव का अंतिम नाटक था। नाटक की पहली प्रस्तुति 14 मई 1921 को पुणे में हुई थी। लेकिन 1 सितंबर 1921 को हुआ 'शहा–शिवाजी' का मंचन अखिरी मंचन साबित हुआ। क्योंकि 4 अक्तूबर 1921 को पुणे में विषमज्वर (टाइफाइड) से उनकी मृत्यु हो गई। शिवाजी महाराज पर एक नाटक करना, उसमें शिवाजी माहाराज की भूमिका निभाना उनका सपना था। इस सपने को पूरा करते ही तुरंत बाद उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया। 4 साल की उम्र से शुरू हुआ रंगमंच का करियर 31 साल की उम्र समाप्त हो गया। केशवराव का यह नाटक कई मायनों में उनका एक 'ड्रिम प्रोजेक्ट' था। वे इस नाटक के माध्यम से भोसले वंश का कर्ज चुकाना चाहते थे। इस सन्दर्भ में बाबूराव देशपांडे कहते है, 'उन्होंने न केवल शिवाजी महाराज भोसले

के वंश का ही नहीं बल्कि दक्षिण प्रदेश के तंजावूर (तमिळनाडू) भोसले राज परिवार का भी कर्ज चुकाया है। तंजावूर के जिस भोसले वंश में जन्मे सरफोजी राजा ने महाराष्ट्र के बाहर मराठी रंगमंच का ध्वज फहराया, उसी भोसले वंश की नाट्यपताका हाथ में लेकर मराठी नाट्यपंढरी में केशवराव ने उद्घोष किया।'' केशवराव छत्रपति शिवाजी महाराज के परम भक्त थे। वे गर्व से खुद को छत्रपति शिवाजी महाराज के भोसले वंश का भी कहते थे। जब उन्हें पता चला की नाटककार य.ना. टिपनिस ने 'शहा-शिवाजी' नाटक लिखा है, तो वे स्वयं टिपनिस के पास गए और नाटक के अधिकार खरीद लिए। वास्तव में, यह मूल रूप से एक गद्य नाटक था। लेकिन दर्शकों कि पसंद को ध्यान मे रखते हुए उन्होंने इसे संगीतमय बना दिया। शिवाजी महाराज की भूमिका के लिए उन्होंने स्वयं तीन नाट्यपद (नाट्यगीत) को नाटक भी लिखे। उन्होंने प्रयोग में प्रभावी ढंग से उन्हे गाया और 'गानेवाले शिवाजी महाराज' के चरित्र को अमर कर दिया। इस नाटक में उन्होंने हमेशा कि तरह कई नए प्रयोग किए। इस नाटक में उन्होंने सबसे पहले 'बॉक्स सेट और फ्लैट सीन' का प्रयोग किया था। 'गानेवाले शिवाजी महाराज' उस समय का सबसे बड़ा आकर्षण था। मानो शिवाजी महाराज की तलवार का तेज इस नाटक में केशवराव के अभिनय और गायन पर चढ़ा हुआ था। शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व के अनुसार नाट्यपद, राग और लय का चुनाव उन्होंने किया था। रंगमंच के प्रति उनकी समझ प्रशंसनीय थी। 'शहा-शिवाजी' नाटक उनके प्रयोगधर्मिता का एक नायाब उदाहरण था।

केशवराव ने इस नाटक का पूर्वाभ्यास करना शुरू किया, जब उन्हें पता चला कि केशवराव गानेवाले शिवाजी कि भूमिका कर रहे हैं, तो उनकी बहुत आलोचना हुई। लेकिन केशवराव ने न केवल उस आलोचना को नज़रअंदाज किया बल्कि आलोचकों को ही सवाल पूछा। सुमंत जाशी ने अपने लेख 'नाट्य निष्ठावंत' में लिखा है, ''यदि कृष्ण, अर्जुन, भीष्म, दुर्योधन, दशरथ. सुभद्रा, रूक्मिणी, दौपदी आदि चरित्र मंच पर गा सकते हैं, तो शिवाजी महाराज क्यों नहीं गा सकते?'' उनका गाना क्यों खटक रहा है? लेकिन इसका जवाब कोई नहीं दे सका। 'शाह-शिवाजी' यह सफल संगीत ऐतिहासिक नाटक साबित हुआ। इस संदर्भ में,

इस नाटक के नाटककार य. ना. टिपनिस अपनी प्रस्तावना में कहते हैं, ''असल में 'शहा-शिवाजी' गद्य नाटक है लेकिन उसे संगीत रूप में लाने की इच्छा केशवराव ने व्यक्त की थी। और उन्होंने उसको वैसे बनाया भी जैसे वे संगीत नाटक चाहते थे।'' 'शांतिघना माणसा', 'खला तुला तुळचना', 'ये जगी हा प्रलयकाल', जैसे शिवाजी महाराज की भूमिका के अनुरूप तीन नाट्यपदों (नाट्यगीत) की उन्होंने खुद रचना की और उसे जबरदस्त आवाज में गाया भी। शहाजी राजा ने शिवाजी महाराज को स्वराज्य की संकल्पना कैसे बताई और शिवाजी महाराज ने उसे कैसे अंमल में लाया, इसका वर्णन इस नाटक में है।

हालांकि मराठी रंगमंच में ऐतिहासिक नाटक की परंपरा सन 1861 में वि. ज. कीर्तने व्दारा लिखित ''थोरले माधवराव पेशवे'' नाटक से शुरू हुई लेकिन 1871 तक शिवाजी महाराज को ऐतिहासिक नाटक जगत में कहीं भी स्थान नहीं मिला था। सन 1871 में शिवाजी महाराज की भूमिका पर आधारित लेकिन मूलत: अफजलखान पर केंद्रीत नाटक काशीनाथ महादेव थत्ते ने लिखा था, जिसका नाम था 'अफजुलखानाच्या मृत्यूचा फार्स'। यह एक बचकाना, अपरिपक्व और भौंडा नाटक था, जिसमें इतिहास का अपलाप और सत्य का विपर्यास किया गया था। धैर्यशील, जबरदस्त योध्दा, वीर योद्धा, स्वराज्य संस्थापक शिवाजी महाराज को इस नाटक में फार्सिकल (व्यंगात्मक) पध्दति से प्रस्तुत किया गया था। सन 1884 में शिवाजी महाराज पर पहला बालनाट्य लिखा गया था। नरहर सीताराम ढवले इस नाटक के नाटककार थे। सन 1880 से 1990 के दौरान कुल 74 ऐतिहासिक नाटकों का मंचन किया गया था, जिसमें से केवल 13 नाटक ही शिवाजी पर लिखे गए थे, जबकि पेशवाई पर 21 नाटक लिखे गये थे। 1921 तक शिवाजी महाराज पर जितने भी नाटक लिखे गए थे, उसमें से अधिकांश नाटकों में इतिहास का असत्य कथन और विपर्यास किया गया था। इस पृष्ठभूमि पर सन 1921 में केशवराव भोसले ने 'शहा-शिवाजी' नाटक का जोर-शोर से मंचन किया और उसे लोकप्रिय भी करवाया था।

❖❖❖

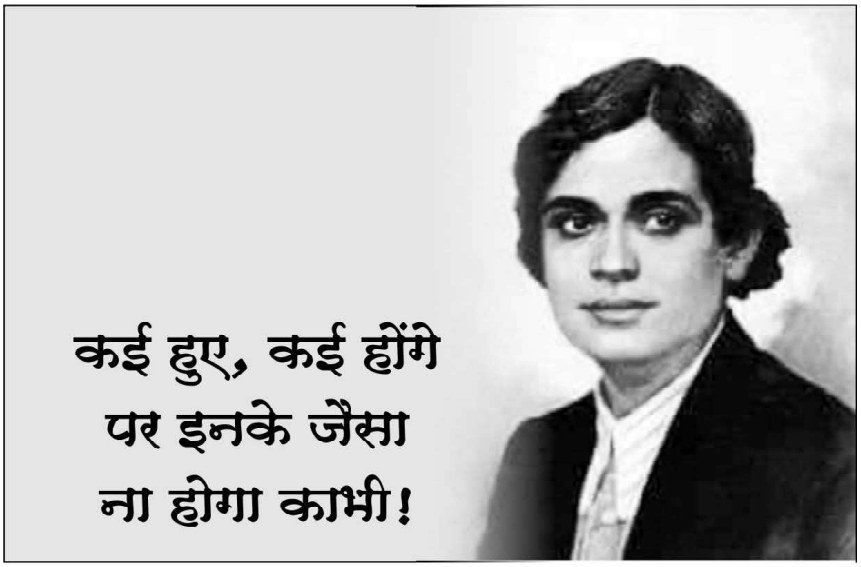

कई हुए, कई होंगे लेकिन फिर इनके जैसा कोई नहीं होगा!

केशव: न भूतो न भविष्यति!

परदा खुलते ही वाहवाही और अभिनय के साथ गीतों के लिए 'वन्समोअर' प्राप्त करने में केशवराव ने कुशलता प्राप्त की थी। इसके लिए उनकी हमेशा सराहना की जाती थी। दस साल की उम्र में 'संगीत शारदा' में शारदा की अविस्मरणीय भूमिका निभाने के बाद स्वदेश हिताचिंतक नाटक मंडली के मालिक जनुभाऊ निमकर जिन्हें कलाकारों का कर्दनकाल (शोषक) कहा जाता था, उनके द्वारा दिया गया आलिंगन उनके जीवन की सबस पहली प्रशंसा थी। ललितकलादर्श का सबसे सफल नाटक 'राक्षसी महत्वकांक्षा' था। जिसमें 'मी नवबाला जोगन बनले' यह नाट्यगीत गाने के बाद मशहुर गायिका गौहरखानबाई ने मंत्रमुग्ध होकर अपने हाथ की अंगूठी केशवराव को भेंट दी थी। सन्याशाचा संसार' नाटक में क्रिश्चियन डेविड की भूमिका में 'बा रे पांडुरंगा' यह अभंग केशवराव इतनी तल्लीनता से गाते थे,

कि दर्शकों की आंखें नम हो जाती थी। बाद में कई भजन मंडलियों में, भजन के कार्यक्रमों में यह अभंग सबसे अधिक गाया जाता था। जिस गाँव में उस नाटक का प्रयोग होता था, वहाँ की भजन मंडली केशवराव का आदर-सम्मान करती थी। वे भजन मंडलियों में काफी लोकप्रिय थे।

'संयुक्त मानापमान' नाटक में केशवराव ने स्वयं 'धैर्यधर' की वेशभूषा को 'डिजाइन' किया था। 'धैर्यधर के कपड़े और सिर का फेटा' इतना लोकप्रिय हो गया था कि कई म्युझिकल बैंड कंपनियाँ केशवराव के सम्मान में यही वेशभूषा धारण करने लगे थे। कभी-कभी वे उनके किसी लोकप्रिय नाट्यपद की प्रस्तुति भी अपने बैंड पर करते थे। उनके द्वारा शुरू की गई एक फैशन के रूप में हम इसे देख सकते हैं। अमरावती में शिवजयंती कार्यक्रम के लिए जब वे आए थे, तब उन्होंने वीर वामराव जोशी के गीत 'हे हिंदी देवी विजयिनी' को बडे ही सहज भाव से गाया था। ऊंची, बुलंद आवाज में आवाज में गाए गए इस 'राष्ट्रीय गीत' को सभी ने खुब पसंद किया था। कार्यक्रम के अध्यक्ष दादासाहब खापर्डे थे। उन्होंने केशवराव की बहुत प्रशंसा की और शाबासी भी दी। यहाँ केशवराव के बहुमुखी व्यक्तित्व को हम देख सकते है।

'संयुक्त मानापमान' नाटक के बाद उनकी इतनी प्रशंसा होती गई कि उन्हें रसिक दर्शकों ने 'केशवराव नमः', संगीतसूर्य,'गंधर्वाचा गंधर्व', केशवाय नमः आदि रूप में सम्मानित किया। बाबूराव देशपांडे उन्हें 'रंगभूमी के अवलिया' कहते हैं, जबकि विद्याधर गोखले ने एक शानदार गौरव गीत 'असा केशव पुन्हा न होने' (केशवःन भूतो भविष्याति!) लिखते हुए उन्हें 'नटराज का भवानी खड्ग कहा है। रामजी जोशी ने उन्हें मराठी रंगमंच के 'चार चांद के सरदार' कहा है। केशवराव भोले ने उन्हें 'मदायत्तं तु पौरूषम्' कहते हुए सम्मानित किया है। दिनकर द. पाटिल उन्हें 'आधुनिक रंगमंच के शिल्पकार' मानते हैं। शरद पवार ने उन्हें 'संगीत रंगमंच के मुकुट का कौस्तभ' कहकर गौरवान्वित किया है। अरूण गुजराथी ने उनकी तुलना 'एकलव्य' से की है। गानसम्राट अल्लादियां खान साहब उनके गायन पर बहुत ही फिदा थे। वे उन्हें 'बेटा जिंदा रहो' का आशीर्वाद देते थे। उनके गुरू रामकृष्णबुवा वझे उन्हें 'बहादुर गायक' कहते थे।

वासुदेव खरे शास्त्री, दादासाहेब खापर्डे, पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर और अन्य महानुभवों ने भी उनकी काफी प्रशंसा की है। गणपतराव जोशी उन्हें 'असली कलाकार' कहते थे, जबकि वंसत देसाई ने उनकी तुलना 'चमकते सूरज' से की थी। पु. श्री. काले गर्व से उनका उल्लेख रंगमंच पर शास्त्रीय और नाट्यसंगीत गायन की ध्वजा लहरानेवालें एक गायक-अभिनेता के रूप में करते हैं। किर्लोस्कर मंडली के कलाकार भी उन्हें 'नटवर्य' कहते थे। शंकरराव मुजुमदार ने उन्हें 'मर्दाना स्वर का गायक' कहा है। तो गोविंदाराव टेंबे उन्हें 'कर्तव्यपरायण गायक-अभिनेता' कहते थे। गणपतराव बोडस को वे 'ध्येयनिष्ठ' लगते हैं, जबकि वरेरकर को वे 'हुनरबाज' लगते थे, इसलिए उन्होंने केशवराव को 'गायकों और नायकों का मुकुटमणि' कहा है। सुमंत जोशी उन्हें 'नाट्य निष्ठा के महामेरू' कहते हैं। मृत्यु लेख लिखते समय एक अखबार ने केशवराव को 'झाले बहु, होतील बहू, परंतु या सम हाच' (न भूतो न भविष्यति!) यह शीर्षक देकर उनका मरणोपरांत गौरव किया। यद्यपि बालगंधर्व और केशवराव उस समय में पारंपरीक रूप से प्रतिद्वंद्वी थे, उन्होंने 'संयुक्त मानापमान' नाटक का संस्मरण लिखते समय केशवराव की विशेष प्रशंसा की, क्योंकि वे केशवराव की क्षमता को जानते थे। वे लिखते हैं, केशवराव शब्द सुनते ही मेरे शरीर पर रोंगटे खडे हो जाते है। संयुक्त मानापमान के प्रयोग में केशवराव ने मुझे पीछे छोड दिया। केशवराव की गायकी से मैं नर्वस हो गया।'' बालगंधर्व एक महान और लोकप्रिय गायक, अभिनेता थे, लेकिन उन्होंने विनम्रतापूर्वक केशवराव के शक्तिस्थल और सामर्थ्य की प्रशंसा की है। बालगंधर्व ने उन्हें गर्व से 'नाट्यकला का कौस्तुभमणि',एवं 'नाट्यकला का रत्नहार' कहा है।

केशवराव ने अपने नाटक और गायन कौशल के माध्यम से एक विशेष गौरव हासिल किया था। बडी लोकप्रियता भी हासिल की। उनके अंतिम संस्कार में जितनी भीड़ इकठ्ठा हुई थी, वह देखकर तथा उनके जितने प्रशंसक थे, उन्हें देखकर बालगंधर्व को भी ईर्ष्या हुई थी। उनके 'अस्थिकलश' दर्शन का किस्सा लिखते समय नानासाहब फाटक कहते हैं, ''लोकमान्य का अस्थि कलश जब पुणे

लाया गया था, तब श्रध्दांजलि अर्पित करने के लिए जितने लोग इकठ्ठा हुए थे, उतने ही लोगों ने इकठ्ठा होकर केशवराव भोसले को अंतिम विदाई दी और उनके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया।'' शाहू महाराज प्रेम से उन्हें 'मेरा केशा' और सम्मान से 'चमकती तलवार' कहते थे। ऐसे कलंदर, हुनरबाज, अफलातुन कलाकार को केवल 31 वर्ष का ही जीवनकाल मिला था। अपने इस जीवनकाल के 31 वर्षों में उन्होंने शानदार और अचंभित करने वाले कार्य पुरे किए हैं। विद्याधर गोखले ने केशवराव पर लिखे गौरवगीत के ये शब्द बहुत ही समर्पक हैं।

अहो केशव, तुम्हारा तपोबल
बलशाली मन, लक्ष्य का दीवाना
नहीं ऐसा कहीं दिखा मुझे अब
ऐसा केशव फिर न होगा कभी!

अर्थात ''ओ केशव! तुम्हारे जैसा तपोबल, ध्येय कें प्रति समर्पित, बलशाली मन, इस संसार में कहीं दिखाई नहीं देता, इसलिए कहता हूँ कि, ऐसा केशव पून: होना संभव नहीं है!''

कई हूए, कई होंगे
पर इस जैसा
ना होगा कभी... ❖❖❖

स्त्री भूमिका में बालगंधर्व

सन 1990 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित 'लोकराज्य' का संगीतसूर्य विशेषांक

उपलब्ध चरित्र साधन साहित्य

जब मैने केशवराव भोसले की जीवनी लिखने का फैसला किया, तो यह महसूस किया कि चरित्र साधनों की बहुत ही कमी है। हाल ही का सबसे बड़ा स्त्रोत 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले विशेषांक' है जिसे अगस्त 1990 में महाराष्ट्र सरकार के मुखपत्र 'लोकराज्य' द्वारा प्रकशित किया गया था। इसमें तुलनात्मक दृष्टी से बहुत सारी जानकारी है। लेकिन इस अपवाद के साथ, अन्य साधनों की काफी कमी है। 'लोकराज्य' ने ही 1987 में 'बालगंधर्व जन्मशताब्दी विशेषांक' प्रकाशित

किया है, लेकिन यह अंक केशवराव के बारे में अधिक जानकारी प्रदान नहीं करता है। आत्माराम सावंत, डॉ. सतीश पावडे द्वारा लिखित तथा डॉ. राजीव चव्हाण द्वारा संपादित की गई छोटी चरित्रपरक किताबें उपलब्ध हैं। लेकिन इसका मूल स्त्रोत 'लोकराज्य' का संगीतसूर्य केशवराव भोसले का विशेषांक ही है। कुछ लेख गूगल साइट्स पर भी हैं, लेकिन उनमें नवीनता नहीं है। उसमें भी वही उपलब्ध जानकारी दी गई है।

राक्षसी महत्वाकांक्षा, ऋतुध्वज मदालसा, दामिनी, शहा-शिवाजी, संयुक्त मानापमान, सन्याशाचा संसार आदि नाटकों की चुनिंदा तस्वीरें, धैर्यधर के भूमिका की और उनकी एक प्रोफाइल फोटो तथा उस पर आधारित दो तैल चित्र एवं कोल्हापुर में एक अर्धकृति प्रतिमा उपलब्ध हैं। बचपन की दो तस्वीरें उपलब्ध हैं जिसमें से एक में वे जनुभाऊ निमकर और रामकृष्णबुवा वझे के साथ खड़े हैं। हालांकि, इन दोनों तस्वीरों को दुर्लभ कहा जा सकता है। डॉ. राजीव चव्हाण की किताब में उनकी दूसरी पत्नी के साथ उनकी एक फोटो को दुर्लभ कहा जा सकता है। इसके अलावा, लोकराज्य के अंक में उस घर की तस्वीर भी उपलब्ध है, जहां उनका जन्म हुआ था। इसके अलावा मराठी रंगमंच, संगीत और मराठी रंगमंच से संबधित लिखे गए विभिन्न ग्रंथों में भी बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। लेकिन अगर संगीतसूर्य के समग्र, साद्यंत चरित्र ग्रंथ का लेखन करना है, तो ऐसे कई और भी ग्रंथों का गंभीरता से अध्यायन करने की आवश्यकता है। समकालीन विभूतियों के चरित्र तथा आत्मचरित्रों की खोज करना आवश्यक है। 'गैजेट' जैसे सरकारी दस्तावेजों की जांच की जानी चाहिए। इसके अलावा ललित कलादर्श नाटक मंडली के पुराने कागजात, रिकोर्ड, पत्राचार एवं दस्तावेज एकत्रित कर नई जानकारी को प्रकाश में लाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संगीतसूर्य केशवराव ने 31 नाटकों में 52 भूमिकाएं की और उनके लिए कई नाट्यपद गाए। लेकिन उनके पद तथा उनका रिकॉर्डिग आज उपलब्ध नहीं है। हालांकि यूट्यूब पर 'मूकनायक' के दो पद 'होय संसार' और 'अवचित गेले किंकर करि' उपलब्ध है, लेकिन इसकी रिकॉर्डिग अच्छी नहीं है। इसमें शब्द ठीक से

सुनाई नहीं देते हैं। साथ ही ये नाट्यगीत केशवराव के है या नहीं इसकी भी कोई गारंटी नहीं है।

केशवराव भोसले ने हैदराबाद के जार्ग वाल्टर डिल्टन की मदद से अपने 12 गाने रिकॉर्ड किए थे, इसका भी संदर्भ मिलता है। इनमें 'सौभद्र' का एक, 'रामराज्य वियोग' का एक, शारदा' का एक, 'शाकुंतल' का एक और 'मूकनायक' के दो नाट्यगीत शामिल हैं। इसके अलावा राग जोगिया, राग बागेश्री, राग भीमपलास और मिश्र राग में की गई पांच बंदिशों का भी समावेश है, इसका भी जिक्र मिलता है। यूट्यूब पर वर्तमान में उपलब्ध 'मूकनायक' नाटक के दो नाट्यगीत जिनका उपर जिक्र किया गया है, क्या ये वहीं नाट्यगीत हैं? यह संदेह मन में उत्पन्न होता है। लेकिन इसके बारे में कोई पुख्ता जानकारी उपलब्ध नहीं है। सिवाय वाल्टर डिल्टन के सहयोग से की गई मूल रिकॉर्डिंग भी आज उपलब्ध नहीं है और न ही इसके बारे में और कोई अन्य जानकारी उपलब्ध है।

फेसबुक पर 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले' नाम का एक पेज है। इसपर काफी जानकारी उपलब्ध है, लेकिन उसमें कोई नई जानकारी नहीं हैं। केवल अजय एस. मांजरेकर ने काफी महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई है। वे ईमानदारी से इस फेसबुक से विभिन्न प्रकार के चरित्र साधन प्रस्तुत करने का कार्य कर रहे है। इस समूह को 2011 से अब तक केवल 536 लाइक्स मिले हैं। इस दृष्टी से देखा जाए तो यहां पर भी 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले' उपेक्षा का सामना कर रहे हैं। यह बडे हर्ष की बात है कि मराठा सेवा संघ द्वारा स्थापित 'संगीतसूर्य केशवराव भोसले राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिषद' ने एक नये सिरे से उनके चरित्र साधनों की खोज शुरू कर दी है। वर्ष 2020 में डॉ.सतीश पावडे के सहयोग से दस व्याख्यानों की एक श्रृंखला संगीतसूर्य केशवराव भोसले सांस्कृतिक परिषद, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित की गई थी। लेकिन उसके माध्यम से भी केवल उपलब्ध जानकारी ही व्याख्याताओं द्वारा प्रस्तुत की गई। कुल मिलाकर केशवराव भोसले पर और अधिक से अधिक अकादमिक शोध होने की आवश्यकता है।

❖❖❖

ललितकलादर्श के रंगकर्मी

१) केशव विठ्ठल भोसले, २) दत्तात्रय विठ्ठल भोसले, ३) गणेश विनायक वीरकर, ४) मारूतीराव पवार, ५) कृष्णराव पवार, ६) केशव विष्णु बेडेकर,७) गोपालराव काशीकर, ८) केशव रामकृष्ण शितूत, ९) कृष्णराव पेटकर, १०) गंगाधर डवरी ११) और उनके बंधु, १२) कृष्णाजी बाबा आलतेकर,१३) मोघे कवि (ग्वालिएर), १४) आबा धारवाडकर, १५) वामनराव करमेलकर (महाड), १६) सोनबा वालवलकर (सावंतवाडी),१७) सदाशिवराव रानड, १८) देवधर (नाशिक), १९) रामचंद्र कुशाबा गुलबणी, २०) श्रीपाद विष्णु जोशी, २१) पांडोबा खेर, २२) पांडुरंग आत्माराम सानेमामा, २३) रघुनाथ गोविंद शितूत, २४) रघुनाथ अण्णाजी इनामदार, २५) विश्वनाथ हरि पलणीकर, २६) रामा हनगडीकर, २७) महादेव बालकृण वालावलकर, २८) दामुअण्णा मालवणकर, २९) रामभाऊ डवरी, ३०) दत्तोपंत कुळकर्णी-टोपकर, ३१) रा. अभ्यंकर, ३२) नारायण गणेश विजापुरकर, ३३) व्यंकटेश बलवंत पेंढारकर, ३४) यशवंत विठ्ठल पिंगले, ३५) आ.ना. झरापकर, ३६) श्रीधर महादेव देशमुख, ३७) विष्णु महादेव देशमुख, ३८) लहानुसाव कोष्टी, ३९) गोपाल वासुदेव गुत्तीकर, ४०) नियोगी (शहापूर), ४१) बाला सामंत (कुडाल), ४२) नरहरी कानडे, ४३) शंकर नारायणा जोशी, ४४) कृष्णा आगरवाले, ४५) शंकर नीलकंठ चाफेकर.

व्यवस्थापक :

१) केशव रामकृष्ण शितूत (मुख्य व्यवस्थापक)
२) बाबुराव तिरोडकर
३) गोविंद नारायण सोलस्कर
४) घोटकर.

हार्मोनियम वादनकार:

१) मारूतीराव पवार
२) दत्तोबा तारदालकर
३) दत्तात्रय गोपाल जोशी
४) गणपत केशव कालसेकर

संगीतसूर्य की अविस्मरणीय भूमिकाएं

१) रामराज्य वियोग	– **भरत /शंबूक**
२) संशय संभ्रम	– **राजपूत्र**
३) हरिश्चंद्र	– **रोहिदास**
४) मृच्छकटीक	– **वसंतसेना**
५) बाजीराव मस्तानी	– **शमशेर बहादूर**
६) राजाराम	– **शाहू**
७) तरूणी शिक्षण	–**पोऱ्या**
८) अक्षविपाक	– **नारद**
९) प्रबळयोगीनी	– **चंदा/शादिनी**
१०) शापसंभ्रम	– **महाश्वेता**
११) मूकनायक	– **सरोजिनी**
१२) चंद्रहास	– **विषदा**
१३) मोहना	– **मोहना**
१४) सं. सौभद्र	– **सुभद्रा**
१५) राक्षसी महत्वाकांक्षा	– **मृणालिनी**
१६) सं. मानापमान	– **धैर्यधर**
१७) हाच मुलाचा बाप	– **गुलाब**
१८) शहा–शिवाजी	– **शिवाजी**
१९) संन्याशाचा संसार	– **डेविड**
२०) संयुक्त सौभद्र	– **अर्जुन**
२१) मुद्रीका	– **मुद्रीका**
२२) सं. शाकुंतल	– **शकुंतला**
२३) अभिज्ञान शाकुंतलम	– **प्रियंवदा**
२४) शीघ्र सुधारणा	– **दुष्परिणाम**
२५) सं गोपीचंद	– **गोपीचंद**
२६) सं. दामिनी	– **दामिनी**
२७) सं. ऋतूराज मदालसा	– **मदालसा**
२८) सं. व्रतपालन	– **देवराज**
२९) सं. विद्याहरए	– **विद्या**
३०) कमाले हिर्स (उर्दू)	– **मृणालिनी**
३१) संतीत चंद्रसेना	– **चंद्रसेना**

बालगंधर्व

जनुभाऊ

दत्तोबा

वरेरकर

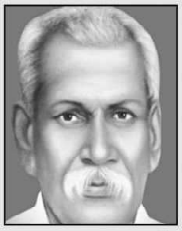

वीर वामनराव जोशी

शाहू महाराज

हिराबाई पेडणेकर

बाबुराव पेंढारकर

दत्तोपंत जांभेकर

आनंदराव पेंटर

बाबुराव पेंटर

केशव शितुत

भालचंद्र पेंढारकर

संगितसूर्य केशवराव भोसले संक्षिप्त की जीवनी

९ ऑगस्ट १८९०	: कोल्हापूर में सुबह १० बजे जन्म।
जून १८९३	: मातोश्री जनाबाई केशवराव और उनके बडे बंधू दत्तोपंत के साथ जनू निमकर के 'स्वदेश हितचिंतक नाटकमंडली में शामिल।
१८९४	: ना. बा. कानिटकर लिखित 'बाजीराव आणि मस्तानी' ली नाटक में समशेर बहादुरकी भूमिका साकार कर रंगमंच पर पार वर्ष की उम्र मे पदार्पण।
१९००	: बार्शी में गो. ब. देवला के 'शारदा' नाटक में बालनट के रूप में प्रसिद्ध हुए।
१९०२	: स्वदेश हितचिंतक में नाटक कंपनी में दत्तोपंत जांभेकरबुवाजी द्वारा औपचारि संगीत शिक्षण का प्रारंभ।
१९९६	: स्वदेश हितचिंतक नाटक मंडली में एक आणे की भागीदारी।
१९०७	: भागीदारी में एक आणा से तीन आणा षढोतरी।
१ जाने. १९०८	: सिद्धारूढ स्वामी के आशीर्वाद से हुबली में 'ललितकलादर्श' नाटक मंडली की स्थापना. स्वदेश हितचिंतक नाटक मंडली को छोडनेवोले मालक एकवीस।
४ जाने. १९०८	: ललितकलादर्श का पहला मंचन 'सं. सौभद्र' हुबली के गणेशपेठ थिएटर में प्रस्तुत।
१९०८	: पुणे के पुलीस जमादार विठोबा मल्हारी चव्हाण की कन्या हौशाबाई के साथ पुणे मे विवाह. पत्नी का विवाह पश्च्यात नाम सावित्री रखा।
१९९०	: केशवराव एवं उनके बंधू दत्तोपंत शही दो ललितकलादर्श के मालक रह जाते है।

१२ सितं. १९१० : 'सं. सौभद्र' नाटक का पुणे में पहला मंचन कर केशवराव का।

१९११ : पुणेकर रसिकोंपर अधिराज सफल नाटककारों के असहयोग के बाद केशवराव द्वारा नए नाटककारों को अवसर। रामचंद्र दोंदे, हिराबाई पेडणेकर के नाटक सं. ऋतूराज मदालसा और सं. दामिनी नाटक का नाटिके में मंचन। दोनों नाटकों हेतु आनंदराव मे स्त्री बाबुराव पेंटर द्वारा मंच सज्जा।

२० सितं. १९१३ : वामनराव जोशी के 'राक्षसी महत्त्वाकांक्षा' नाटका प्रथम प्रयोग मुंबई के बॉम्बे थिएटर में संपन्न। मखमल का परदा मराठी रंगमंच पर पहली बार अवतीर्ण।

दिसेंबर १९१३ : गॅझेट ऑफ इंडिया के एडिटर गॉर्डन द्वारा सभी राहि स्वर्ण पदक।

मई १९१४ : कंपनी २५ कलाकार निकल गए। फिर भी 'बाल-सौभद्र', बाल-मृच्छकटिक' आदि प्रयोग शुरू रखे।

नवं १९१४ : स्पेशल ट्रेनचा सर्वप्रथम उपयोग।

दिसेंबर १९१५ : 'सं. व्रतपालन' ,सं. मानापमान' नाटक के बॉम्बे थिएिटर में प्रयोग गुरू रामकृष्णबुवा वझे को गुरू बनाया।

मई १९१६ : अमरिका से लाए मोटारसाइकील साईडकार के साथ पणाजी मे आती है। केशवराव को पेंढारकारां की ओरसे ड्राईविंगका प्रशिक्षण।

दिसंबर १९१६ : कोल्हापुर में नाटकों द्वारा प्राप्त सभी पैसा दानधर्म, विविध संस्थाओं को दान एवं अंबाबाई के मंदिर के कलझ बनाने मे जमा पूंजी खर्च।

जानेवारी १९१७ : प्रथम पत्नी सावित्रीबाई का अमरावती में प्लेगसे मृत्यू इसी समय बडे बंधू दत्तोपंत को उनका हिस्सा देकर केशवराव ललितकलादर्शके एकमेव मालीक।

१ एप्रिल १९१७ : पुणे में हितचिंतक मंडली की और से मराठा के संपादक न. चि. केळकर की ओर से किर्लोस्कर सगीत नाट्यगृह में सन्मानपत्र प्राप्त।

अगस्त १९१८ : इंदुरके नारायण लोंढकी कन्या कृष्णाबाई के साथ दुसरा विवाह उनका नाम भी सावित्री ही रखा।

७ सित. १९१७ : नागपुर के तुलसीराम थिएटर में मामा वरेरकर 'हाच मुलाचा बाप' गद्य नाटक को संगीत नाटक बनाकर केशवराव को दुसरे विवाह प्रित्यर्थ समर्पित।

२५ सित. १९१९ : मुंबई के विक्टोरिया थिएटर में मामा वरेरकर के 'सं. संन्याशाचा संसार' नाटक का प्रथम प्रयोग केशवराव डविडकी अविस्मरणी भूमिका में।

दिसेंबर १९१९ : अब केशवराव रंगमंच पर फिर नही दिखेंगे ऐसे विज्ञापन दिए गए।

३ फर. १९२० : छत्रपती शाहू महाराज के विनंती पर कोल्हापुर के पॅलेस एरिया में 'सं. मृच्छकटिक' नाटक का पहला ओपन एअर प्रयोग।

१४ मई १९२१ : य. ना. टिपणीस लिखित 'सं. शहा शिवाजी' नाटक का पुणे में प्रथम प्रयोग, केशवराव छत्रपती शिवाजी महाराज की भूमिका में।

८ जुलाई १९२१ : मुंबई में बालीवाला थिएटरका बालगंधर्व के साथ संयुक्त मानापमान नाटक मे धैर्यधर तथा आगे संयुक्त सॉभद्रा में अर्जुन की भुमिका।

९ सितं. १९२१ : 'शहा शिवाजी' नाटक में रंगमंच पर अंतिम भूमिका।

४ अक्टू. १९२१ : शाम साढे पांच बजे पुणे मे टाईफाइड से जीवनयात्रा समाप्त।

❖❖❖

डॉ. सतीश पावडे की प्रकाशित चरित्र संपदा

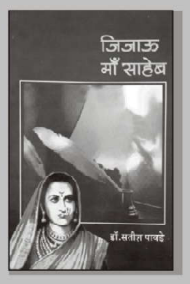

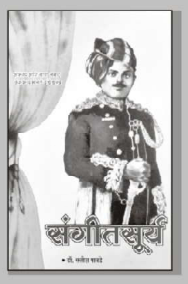

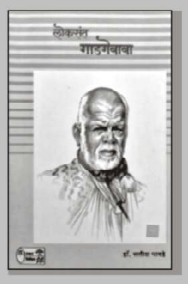

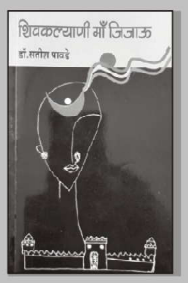

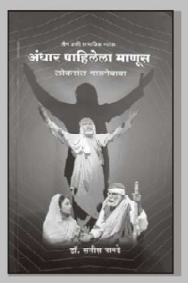

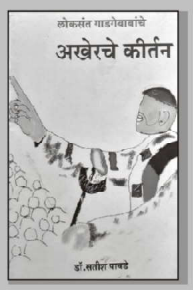

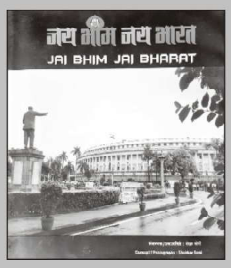

❖ संदर्भग्रंथ सूची ❖

१. मराठी नाट्यपद : स्वरूप आणि समीक्षा– डॉ. अ. द. वेलणकर, प्रकाशक सौ. सुधा अरूण वेलणकर, नागपुर, प्र. आ. –मार्च १९८६

२. नाट्यदर्शन : डॉ. सुनील सुभेदार, मुंई मराठी साहित्य संघ, मुंबई, प्र. आ. १९८१

३. मराठीचा नाट्य संसार : वि. स. खांडेकर, देशमुख आणि कंपनी, पुणे

४. लोकनाट्याची परंपरा : वि. कृ. जोशी, ठोकळ प्रकाशन, पुणे, प्र. आ. १९६१

५. लोकराज्य : बालगंधर्व जन्मशताब्दी विशेषांक, संपादक दिवाकर गंधे, माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय, मुंबई, अक १२, नोव्हेंबर १९८७

६. लोकराज्य : (संगीतसूर्य श्री. केशवराव भोसले विशेषांक), संपादक दिवाकर गंधे, माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय, मुंबई, अंक–७ अगस्ट १९९०

७. संगीतसूर्य – डॉ. सतीश पावडे, साहिल मिडिया पब्लिकेशन्स, अमरावती, प्र. आ. नोव्हेंबर २००४

८. संगीतसूर्य केशवराव भोसले : देशभक्त पुरोगामी नाट्यकर्मी– डॉ राजीव चव्हाण, सिंहवाणी प्रिंटर पब्लिकेर्शन्स, कोल्हापूर, प्र. आ. २००९

९. मराठी नाटक नाटककरार : काळ आणि कर्तृत्व – डॉ. वि. भा. देशपांडे, दिलीपराज प्रकाशन, प्रा. लि., पुणे, खंड – २ प्र. आ. २००८

१०. नाट्य मंथन : डॉ. चंद्रकांत धांडे, किर्ती प्रकाशन, औरंगाबाद, प्र. आ. २००३

११. भारतीय नाट्यप्रयोग विज्ञान : अ. म. जोशी, स्नेहवर्धन पब्लिशिंग हाऊस, पुणे, द्वि. आ. १९९९

१२. मराठी रंगभूमीचे प्रारंभपर्व : डॉ. रूस्तम अचलखांब, वर्षा प्रकाशन, औरंगाबाद, प्र. आ. २००७

१३. स्त्री नाटककरांची नाटके : डॉ. मधुरा कोरान्ने, स्नेहवर्धन पब्लिशिंग हाऊस, पुणे, प्र. आ. २००२

१४. समकालीन मराठी रंगभूमी, संपादक डॉ. राजेंद्र नाईकवाडे, डॉ. राजन जयस्वाल, विजय प्रकाशन, नागपूर, प्र. आ. २०१०
१५. स्त्री नाटककारांचे योगदान : डॉ. सुधा पेशकर, विसा बुक्स, नागपूर, प्र. आ. २०१०
१६. शहा–शिवाजी : य. ना. टिपणीस, प्रकाशन य. ना. टिपणीस, पुणे, प्र. आ. १९२०
१७. माझा नाटकी संसार : मामा वरेरकर.
१८. भारतरत्न दादासाहेब खार्पेड – वासुदेव बळवंत, खार्पेड श्री मंगेश प्रकाशन, नागपुर प्र. आ. २००
१९. अमरावती शहराचा इतिहास लेखक भि. द्रे (सचित्र भाग १ व २) – नगरपालिका, अमरावती प्र. आ. १९७८
२०. अमरावती शहराचा इतिहास (सचित्र खंड – ३) संवादक – वा. ब. खापर्डे महानगरपालीका, अमरावती प्र. आ. २००१
२१. अचलपुरच्या नाट्य परंपरा – अशोक बोंडे क्षमा प्रकाशन, परतवाडा–अचलपुर (अमरावती) प्र. आ. २०२२
२२. जागतिक कृषि क्रांतिचा विधाता – वीर उत्तमराव मोहिते मराठा विज्ञान मंदिर, शिवाजीनगर अमरावती प्र. आ. २०२२

❖❖❖

डॉ. सतीश पावडे

डॉ. सतीश पावडे नाटककार, नाट्य निर्देशक, नाटय समीक्षक, नाटय शिक्षक – प्रशिक्षक के रूप में देश में जाने जाते है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के परफॉर्मिंग आर्ट्स (फिल्म एंड थिएटर) विभाग में पिछले कई वर्षों से वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत है। महाराष्ट्र राज्य नाट्य सेंसर बोर्ड के सदस्य एवं मराठी विश्वकोश (एनसाइक्लोपीडिया) के नाट्यज्ञान मंडल के आप पूर्व सदस्य एवं सलाहकार भी है।

आपकी नाटक, समीक्षा, चरीत्र, अनुवाद, रूपांतर एवं संपादित ऐसी कुल २५ पुस्तकें प्रकाशित है। ३८ नाटकों का निर्देशन, २१ नाटकों का लेखन, २० नाटकों का अनुवाद/रूपांतरण भी आप के नाम पर है। स्मिता पाटील स्मृति पुरस्कार, यूनेस्को क्लब्ज एवार्ड, मँग्रम ऑनर एवार्ड, पु. भा. भावे समीक्षा पुरस्कार, मां जिजाऊ पुरस्कार, संगीतसूर्य पुरस्कार एवं महाराष्ट्र सरकार का सर्वश्रेष्ठ नाटककार का पुरस्कार आपको 'अंधारवेणा' नाटक के लिए एवं सर्वोत्कृष्ट नाट्य समीक्षा ग्रंथ पुरस्कार 'द थिएटर आँफ द एब्सर्ड' पुस्तक के लिए प्रदान किया गया है। महाराष्ट्र शासन के कामगार कल्याण मंडल का सर्वोत्कृष्ट प्रायोगिक नाट्यलेखक तथा लगातार तीन वर्ष सर्वोत्कृष्ट नाटककार का पुरस्कार प्राप्त कर आपने पुरस्कारों की हैट्रीक भी दर्ज की है। आपके 'द थिएटर ऑफ़ द एब्सर्ड' समीक्षा ग्रंथ को महाराष्ट्र सरकार के साहित्य संस्कृती मंडल के अलावा विदर्भ साहित्य संघ, विदर्भ संशोधन मंडल, मातोश्री सुर्यकांतादेवी पोटे स्मृति प्रतिष्ठान तथा श्रेयश शोध केंद्र एवं

वाचनालय आदि के पुरस्कार प्राप्त हुए है। लुईस्लीविला विश्वविद्यालय (अमरीका) में 'ब्लैक एवं दलित थिएटर के तौलनिक अध्ययन' का आपका प्रस्ताव भीस्विकृत किया गया था। श्रीलंका के 'डे ड्रीम थिएटर' का 'थिएटर एक्सीलेंस' अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के आदर्श शिक्षक पुरस्कार से भी आपको सम्मानित किया गया है। हाल ही में आपके 'मराठी रंगभूमी आणि एब्सर्ड थिएटर' नाट्यसमीक्षा ग्रंथ को जागतिक आंबेडकरवादी साहित्य महामंडल का 'राष्ट्रपिता महात्मा फुले राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कार' एवं पुणे नगर वाचन मंदिर का 'इंदिरा भालचंद्र साहित्य पुरस्कार' प्रदान किया गया है। इसके अलावा बालरक्षक प्रतिष्ठान का राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार, राष्ट्रमाता जिजाऊ पुरस्कार, स्वामी विवेकानंद राष्ट्रनिर्माण पुरस्कार, राजभाषा समिति का मराठी सेवी सम्मान, आंबेडकर साहित्य पुरस्कार, ज्ञानतपस्वी डॉ. श्रीकांत जिचकार साहित्य सेवा सम्मान आदि महत्वपूर्ण पुरस्कारों से आपको नवाजा गया है।

प्राध्यापक के रूप में कार्य करने से पूर्व में आपने पत्रकार तथा संपादक के पद पर तथा रिलायंस इंन्फोकॉम एवं रिलायंस कम्युनिकेशन्स आदि कार्पोरेट कपनियों में बतौर प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर (कार्पोरेट अफेयर्स) आदि पदों पर भी काम किया है। फिलहाल आप 'नाटक- नाट्यकला तथा नाट्यशास्त्र' विषय पर डि.लीट. के लिए शोध कार्य कर रहे है। नागपुर विश्वविद्यालय से ललित कला शाखा की नाटक विशेषज्ञता में आपको महाराष्ट्र राज्य की पहली पीएच. डी. प्राप्त है। टागोर चेयर मानद फेलोशीप, ज्युनीयर- सीनियर यूजीसी रिसर्च फेलोशीप से भी आप सम्मानित है।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति, कला एवं पुरात्तत्व विषय में आपको तीन स्वर्णपदक प्राप्त है। अंतरराष्ट्रीय /राष्ट्रीय जर्नल्स में आपके १०० से अधिक शोध निबंध प्रकाशित है। भारत सरकार के संगीत नाटक अकादमी की रिसर्च फेलोशीप से भी आप सम्मानित है। आप संगीतसूर्य केशवराव भोसले राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष है। महाराष्ट्र डिजिटल संपादक एवं पत्रकार संघ के सलाहकार के रूप में भी आप कार्यरत है।

❖❖❖

डॉ. सतीश पावडे की प्रकाशित पुस्तकें

क्र.	शिर्षक	प्रकाशन संस्था	वर्ष
०१	ज्योती झाली ज्वाला (एकल नाटक)	अक्षरशिल्प प्रकाशन, अमरावती	२०२२
०२	संगीतसूर्य केशवराव भोसले: आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार (हिंदी चरित्र)	अक्षरशिल्प प्रकाशन, अमरावती	२०२२
०३	नाट्यचिंतन (नाट्य समीक्षा)	नभ प्रकाशन, अमरावती	२०२२
०४	मराठी रंगभूमी : चर्चा आणि चिंतन (नाट्य समीक्षा)	नभ प्रकाशन, अमरावती	२०२१
०५	मराठी रंगभूमी आणि ॲब्सर्ड थिएटर (नाट्य समीक्षा)	नेक्स्ट पब्लिकेशन, पुणे	२०२१
०६	संगीतसूर्य केशवराव भोसले : आधुनिक मराठी रंगभूमीचे शिल्पकार (चरित्र)	अविशा प्रकाशन, नागपुर	२०२०
०७	त्या सायंकाळची गोष्ट (अनुवादित नाटक) नभालय प्रकाशन अमरावती २०२०		
०८	रंग विमर्श (नाट्य समीक्षा)	शब्दसृष्टि पब्लिकेशन, मुंबई	२०२०
०९	जय भीम-जय भारत (संपादित फोटो कोफीटेबल बुक)	आकार पब्लिकेशन, नागपुर	२०१८
१०	नाट्य प्रसंग (नाट्य समीक्षा)	आकार पब्लिकेशन, नागपुर	२०१८
११	थिएटर ऑफ दी ॲब्सर्ड (नाट्य समीक्षा)	विजय प्रकाशन, नागपुर	२०१८
१२	अंधार पहिलेला माणूस : लोकसंत गाडगेबाबा (नाटक)	पायगुण प्रकाशन, अमरावती	२०१७
१३	ढिगारा (नाटक)	नभ प्रकाशन, अमरावती	२००८
१४	शिवकल्याणी माँ जिजाऊ (नाटक)	साहिल मिडिया, अमरावती	२००८
१५	जिजाऊ माँसाहेब (चरित्र)	साहिल मिडिया, अमरावती	२००८
१६	आद्य मराठी नाटक तृतीय रत्न (समीक्षा)	नभ प्रकाशन, अमरावती	२००७
१७	गाडगेबाबांचे अखेरचे कीर्तन (समीक्षा)	नभ प्रकाशन, अमरावती	२००७
१८	त्या एका क्षणी-अल्बेर कामू (अनुवादित नाटक)	पुष्प प्रकाशन, पुणे	२००६
१९	शिवकुलभूषण राजा संभाजी (नाटक)	साहिल मिडिया, अमरावती	२००५
२०	संगीतसूर्य केशवराव भोसले (चरित्र)	साहिल मिडिया, अमरावती	२००४
२१	लोकसंत गाडगेबाबा (चरित्र)	मैकमिलन प्रकाशन, पुणे	२००३
२२	अंधारवेणा (एकांकी)	अक्षय प्रकाशन, पुणे	२००१
२३	फास (एकांकी)	अक्षय प्रकाशन, पुणे	२००१
२४	चक्रव्युह (नाटक)	अक्षय प्रकाशन, पुणे	२००१
२५	क्रांतियोगी गाडगेबाबा- नाना ढाकुलकर (सहलेखक)(नाटक)	ऋचा प्रकाशन, नागपुर	१९९६
२६	युगनिर्माता डॉ. पंजाबराव देशमुख (नाटक)	नभ प्रकाशन, अमरावती	१९९७

डॉ. सतीश पावडे को प्राप्त पुरस्कार

क्र.	पुरस्काराचे का नाव	संस्था	वर्ष
०१	इंदिरा – भालचंद्र नाट्यसमीक्षा पुरस्कार	पुणे नगर वाचन मंदिर, पुणे 'मराठी रंगभूमी आणि एब्सर्ड थिएटर' पुस्तक के लिए।	२०२२
०२	राष्ट्रपिता जोतीराव फुले राष्ट्रीय पुरस्कार	जागतिक अंबेडकरवादी साहित्य महामंडल, नागपुर	२०२२
०३	मराठी सेवी सम्मान	राजभाषा मराठी महोत्सव आयोजन समिती, वर्धा	२०२२
०४	स्वामी विवेकानंद राष्ट्रनिर्माण सम्मान	बाल रक्षक प्रतिष्ठान (भारत)	२०२२
०५	राष्ट्रमाता जिजाऊ राष्ट्रिय शिक्षक पुरस्कार	बाल रक्षक प्रतिष्ठान (भारत)	२०२२
०६	राष्ट्रिय शिक्षक दिवस सम्मान	बाल रक्षक प्रतिष्ठान (भारत)	२०२१
०७	अंबेडकरी साहित्य सम्मान पुरस्कार	डॉ. गिरीश गांधी फाउंडेशन, नागपुर	२०२१
०८	उत्कृष्ट वैचारिक वाङमय पुरस्कार (थिएटर ऑफ द एब्सर्ड पुस्तक के लिए।)	विदर्भ संशोधन मंडल, नागपुर	२०२१
०९	अंबेडकरी नाट्य सम्मान	अंबेडकर नाट्य महोत्सव समिती, नागपुर	२०२०
१०	यशवंतराव चव्हाण उत्कृष्ट साहित्य निर्माण पुरस्कार (महाराष्ट्र शासन)	सांस्कृतिक संचालनालय, (महाराष्ट्र शासन) मुंबई (थिएटर ऑफ द एब्सर्ड पुस्तक के लिए।)	२०२०
११	उल्लेखनीय नाट्य समीक्षा लेखन पुरस्कार (थिएटर ऑफ द एब्सर्ड पुस्तक के लिए।)	विदर्भ साहित्य संघ, नागपुर	२०२०
१२	उत्कृष्ट नाट्यसमीक्षा पुरस्कार (थिएटर ऑफ द एब्सर्ड पुस्तक के लिए।)	सुर्यकांतादेवी पोटे चैरीटेबल ट्रस्ट, अमरावती	२०१९
१३	श्रेयस नाट्यकला गौरव पुरस्कार	श्रेयस वाचनालय आणि संशोधन केंद्र, हिंगणघाट	२०१८
१४	उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान	महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठ, वर्धा	२०१५
१५	मामा वरेरकर नाट्य पुरस्कार	सांस्कृतिक संचालनालय, (महाराष्ट्र शासन) मुंबई	२००२
१६	सर्वोत्कृष्ट नेपथ्यकार पुरस्कार (क्रांतिमा– क्रांतिबा नाटक के लिए।)		
१७	वांङमय सेवा समीक्षा पुरस्कार	वाङ्मय सेवा प्रकाशन, नाशिक	२००९
१८	राष्ट्रमाता जिजाऊ पुरस्कार	जिजामाता सेवाभावी संस्था, नांदेड	२००८
१९	पु. भा. भावे नाट्यसमीक्षा पुरस्कार	पु. भा. भावे प्रतिष्ठान, मुंबई	२००४
२०	उत्कृष्ट नाट्यलेखक पुरस्कार	कामगार कल्याण मंडळ, मुंबई	२००२
२१	कलागौरव पुरस्कार	युनेस्को क्लब्स, विदर्भ	२००१
२२	उत्कृष्ट नाट्यलेखक पुरस्कार (हॅट्रिक)	कामगार कल्याण मंडळ, महाराष्ट्र शासन	१९९८,९९, २०००
२३	मैग्नम ओनर एवार्ड	मैग्नम फोंडेशन, नागपुर	१९९६
२४	स्मिता पाटील स्मृति पुरस्कार	मानव मंदिर, नागपुर	१९९५

अलका देशमुख
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष,
सं.के.भोसले सांस्कृतिक
परिषद, मध्य भारतक्षेत्र

संगीतसूर्य केशवराव भोसले जी का कार्य कितना प्रभावी था, कितना नेत्रदीपक था। वे कितने महान अभिनेता, गायक और रंगकर्मी थे, इस संदर्भ में सविस्तार जानकारी डॉ. सतीश पावडे जी के इस चरित्र ग्रंथ से हमे मिलती है। यह पुस्तक पढकर हम अभिभूत होते है, हमें प्रेरणा मिलती है। आशा है नए पिढी कों भी यह पुस्तक पसंद आएगी। एक उपयोगी चरित्रात्मक पुस्तक के लिए मै डॉ. पावडे को बधाई देती हूं।

–भरत पाटील
प्रदेशाध्यक्ष,
संगीतसूर्य केशवराव
भोसले सांस्कृतिक
परिषद, गोवा
(भारत गणराज्य)

संगीतसूर्य केशवराव भोसले राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष, संगीतसूर्य केशवराव भोसले के चरित्रकार, देश के जानेमाने नाटककार, निर्देशक एवं समीक्षक डॉ. सतीश पावडे द्वारा लिखित यह पुस्तक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है। संगीतसूर्य से हम भलिभांति इस पुस्तक के माध्यम से परिचित हो सकते है। यह तो निर्विवाद सत्य है की संगीतसूर्य की उपेक्षा हुई है, उनके साथ नाईन्साफी हुई है। लेकीन अब इस चरित्रात्मक पुस्तक के माध्यम से अभिनेता, गायक, नाट्य निर्देशक, नाटक कंपनी के मालिक, कुशल नाट्य प्रबंधक, संगठक, प्रयोगधर्मी, रंगकर्मी संगीतसूर्य केशवराव भोसले अब पुरे देश में पहुचेंगे। इस ऐतिहासिक कार्य के लिए डॉ. सतीश पावडे के हम आभारी है।

हेमांगी सोनवणे
राज्य समन्वयक,
संगीतसूर्य केशवराव
भोसले सांस्कृतिक
परिषद, गुजरात
(भारत गणराज्य)

खेद है इस बात पर की इतने महान कलाकार की आज भी कोई विशेष माहिती उपलब्ध नहीं है जिन्होने कलाक्षेत्र के अतिरिक्त जातिवाद, वर्ण, अंधश्रद्धा विरुद्धपूर्ण प्रतिकार कर, सामाजिक जागृति के प्रकाशक बने। संगीतसूर्य केशवराव भोसले महान शिल्पकार, गायक, नट, नाट्य दिग्दर्शक, नाट्य निर्माता, महात्वकांशी व्यक्तित्व के धनी, निर्देशक, बहुमुखी रंगकर्मी थे। भारतीय रंगभूमि के इतिहास में उनकी काम गिरी, नवीनता, आत्मपरीक्षक, प्रयोगिकता, अत्यंत प्रभावशाली और प्रशंसनीय है। 'आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार संगीतसूर्य केशवराव भोसले' डॉ. सतीश पावड़े द्वारा लिखित यह पुस्तक अत्यंत ही उत्कृष्ट और अनमोल है, नए पीढी के सभी कलाकारों के लिए यह प्रेरणादायक है।

'आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार: संगीतसूर्य केशवराव भोसले' यह डॉ. सतीश पावडे द्वारा लिखित चरित्रपरक पुस्तक हिंदी भाषिक नाटक और संगीत कला प्रेमीयों के लिए एक अनुपम भेंट है। वर्तमान में विशेषकर युवा वर्ग को इसका विशेष लाभ होगा। यह पुस्तक संगीतसूर्य केशवराव भोसले जो एक अभिनेता, निर्देशक, नाट्यनिर्माता, मशहूर गायक और अष्टगुण सम्पन्न कलाकार थे, उनके जीवन संघर्ष पर आधारित यह हृदयस्पर्शी संघर्षगाथा है। जो हर पाठक के लिए प्रेरणादायक होगी। नाटक, संगीत एवं कला क्षेत्र में यह पुस्तक अपना विशेष स्थान बनाएगी, यह मेरा विश्वास है। डॉ. सतीश पावडे के इस अनूठे लेखन कार्य को मै

सुश्री
प्रतीक्षा बाबर
प्रदेशाध्यक्ष–
संगीतसूर्य
केशवराव भोसले
सांस्कृतिक परिषद,
छत्तीसगढ

सुश्री
सुनिता घुले
प्रदेशाध्यक्ष–
संगीतसूर्य
केशवराव भोसले
सांस्कृतिक परिषद,
मध्यप्रदेश

संगीतसूर्य केशवराव भोसले की जीवनी पर आधारित 'आधुनिक भारतीय रंगमंच के शिल्पकार : संगीतसूर्य केशवराव भोसले' पुस्तक का विमोचन हिंदी में होने जा रहा हैं। यह हमारे लिये बड़े सौभाग्य की बात है। इतने बड़े कलाकार का चरित्र जो आज तक लूप्त था, वह आज सभी के समक्ष इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत होंगा, जो की सभी के लिये प्रेरणास्त्रोत बनेगा। इस पुस्तक के लेखक डॉ. सतीश पावडे के हम आभारी है। यह क्रांतीकारक चरित्र कला क्षेत्र में मिल का पत्थर स्थापित होंगा इसका मुझे विश्वास है।

ISBN 978-93-91590-04-8
2022
₹ 140
Aksharshilp Prakashan
YOUNG PUBLISHING HOUSE OF NEW IDEAS
7499058879 / 9325414051
facebook.com/aksharshilpprakashan
Book available on
flipkart.com/aksharshilpprakashan
amazon.in/aksharshilpprakashan